thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

विजया दशमी पर्व एवं नव सस्येष्टि पर्व की वैदिक संसार परिवार की ओर से समस्त आर्यो को हार्दिक–हार्दिक शुभकामनाऐं ...

खेद प्रकाश एवं संशोधित सूचना : गत माह सितम्बर के मुख्य पृष्ठ पर विशिष्ट सहयोगी बाबद् प्रकाशन किया गया था जिसमें मुद्रण त्रूटि हो गयी थी। जिसका हमें खेद है। संशोधित सूचना इस प्रकार ग्रहण करें

सितम्बर अंक प्रकाशन के विशिष्ट सहयोगी

श्री सुनील जी जांगिड

अध्यक्ष– जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा, गोवा

Sumit

Manager

Sumit Woods Pvt. Ltd.

Ponda(Goa)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सम्पूर्ण संसार को श्रेष्ठ बनाओं

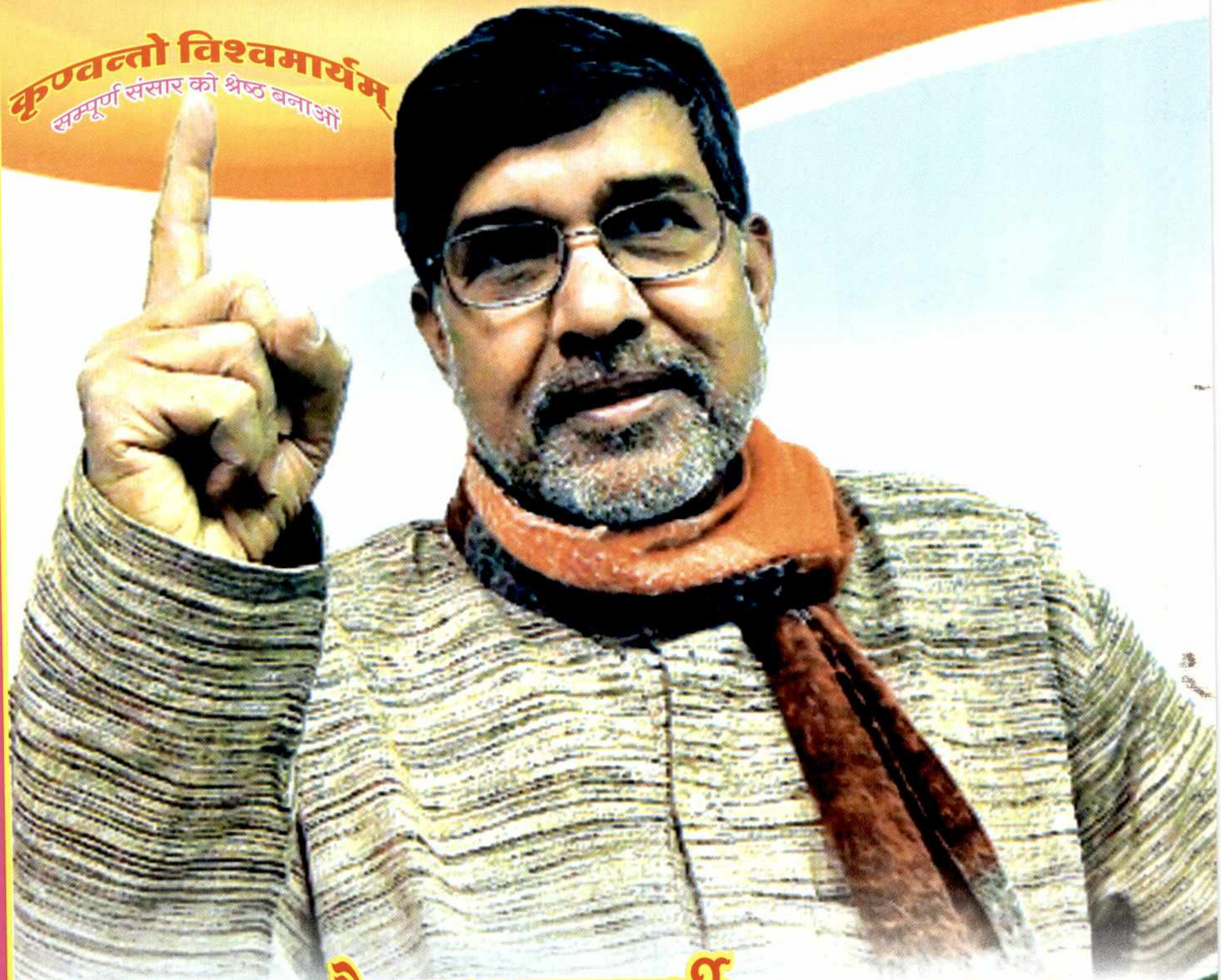

ऋषि भक्त कैलाश सत्यार्थी बचपन बचाओ के प्रणेता

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज से प्रेरणा पाकर समाज सेवा को बनाया जीवन का लक्ष्य और पाया विश्व शान्ति का सर्वोच्च नोबल पुरुस्कार तथा आर्यावर्त (भारत) का विश्व में बढ़ाया गौरव, आपके पुरुस्कृत होने से विश्व में बढ़ेगा वैदिक धर्म सिद्धांतों का मान

वर्ष -३ अंक- १२ मासिक-हिन्दी अक्टूबर,२०१४ इन्दौर(म.प्र.) मूल्य-२५/- कुल पृष्ठ-४८

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०६६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

thearyasamaj.org

अधर्मी मतों के जाल में जकड़ चुके प्रदेश केरल में हुआ वैदिक धर्म क्रांति का उदय, महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.)वेद अनुसंधान केन्द्र के माध्यम से जन–जन तक प्रवाहित होगी वेद वाणी

2008 कुण्डीय यज्ञ द्वारा सम्पन्न राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का विहंगम दृश्य

विस्तृत विवरण पृष्ठ क्र. ३७ पर

आर्य जगत के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी का आत्मीय अभिनंदन

शिलान्यास पट्ट का लोकार्पण करते महाशय धर्मपाल जी समीप हैं आचार्य एम. आर. राजेश वैदिक क्रांति केरल के क्रांतिवीर

महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र का भव्य प्रारुप

महाशय धर्मपाल
वेद अनुसंधान केन्द्र
की आधारशिला
रखते हुए
म. धर्मपाल
एम.डी.एच. मसाले वाले
साथ ही समीप है
आचार्य एम.आर. राजेश

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में आयोजित ध्यान शिविर में दर्शनाचार्य सानन्द जी श्रद्धालुओं को ध्यान के रहस्यों से अवगत कराते

thearyasamaj.org

आर्य समाज बड़नगर के तत्वावधान में सुश्री अंजलि आर्या द्वारा वेद वाणी की अमृतवर्षा

मंचस्थ विद्वतगण एवं अतिथि परिचय देते युवा कार्यकर्ता अर्पित यादव (बन्टी)

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४० पर

दीप प्रज्वलन करते हुए सुश्री अंजलि आर्या, सांसद महोदय, विधायक महोदय, आर्य समाज प्रधान एवं गोपाल जी चोटिया

क्षेत्रीय सांसद डॉ. चिंतामण जी मालवीय का अभिनंदन करते हुए आर्य समाज प्रधान राजेन्द्र जी यादव

क्षेत्रीय विधायक श्री मुकेश जी पंड्या, बड़नगर का आत्मीय अभिनन्दन आर्य समाज प्रधान एवं धर्मपत्नी सरीता आर्या द्वारा

उज्जैन संसदीय क्षेत्र के सांसद महोदय उद्बोधन देते हुए समीप खड़े हैं कार्यक्रम संचालक पं. नाथूलाल जी शर्मा

म. भा. आ. प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान गोविंदरामजी आर्य देपालपुर का अभिनंदन संस्था मंत्री अरुण भावसार द्वारा

वेद कथा का अमृतपान करते बृहद संख्या में श्रद्धालुजन

वेद वाणी की अमृत वर्षा करते सुश्री अंजलि आर्या

thearyasamaj.org

प्रखर ओजस्वी वक्ता सुश्री अंजलि आर्या के मुख्य वकृत्व में स्व. गणपतलाल जी प्रजापति की स्मृति में वेद कथा का आयोजन

मंचस्थ विद्वतगण तथा उद्‌बोधन देते श्री हरिकिशन जी मेलवाणी
अध्यक्ष–गीता भवन न्यास बड़नगर

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४० पर

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मुरली जी मोरवाल
सदस्य – म.प्र. कांग्रेस कमेटी भोपाल उद्‌बोधन देते हुए

उज्जैन संभाग प्रभारी लक्ष्मीनारायण जी आर्य का अभिनंदन
अरुण जी आर्य द्वारा, समीप सुश्री अंजलि आर्या एवं मनोज प्रजापत

स्व. गणपत प्रजापति के पुत्र मनोज प्रजापत अपनी
धर्मपत्नी श्रीमती अर्चना के साथ सुश्री अंजलि आर्या का सम्मान करते हुए

वेद कथा द्वारा वैदिक ज्ञान अमृत वर्षा करते हुए
वेद विदुषी सुश्री अंजलि आर्या

स्व. गणपत जी प्रजापति के पौत्र हिमांशु, आयुष एवं यश बालपन से
वैदिक संस्कार की घुट्टी ग्रहण करते हुए

बृहद संख्या में उपस्थित मातृ शक्ति पर जादू सा प्रभाव
सुश्री अंजलि आर्या की वाणी का

जन सैलाब वेद कथा का अमृतपान करते हुए सबसे आगे दिखाई
दे रहे हैं आयोजक मनोज प्रजापत

thearyasamaj.org

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वैदिक संसार
www.facebook.com/vaidiksansarindia

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९

डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

वर्ष- ३, अंक- १२

अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अक्टूबर २०१४

प्रकाशन आर्ष तिथि : मार्गशीर्ष, शुक्लपक्ष, द्वितिया

सृष्टि संवत् : १,९७,२९,४९,११६

कलि संवत् : ५,११६

विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक

सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक — गजेश शास्त्री — ०९९९३७६५०३१

सह सम्पादक — नितिन शर्मा — ०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता

१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-

वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)

त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)

आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)

आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम)

विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-

अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार

बैंक खाता धारक - वैदिक संसार

भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर

करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५१२४७९

आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
मोदी जी राष्ट्र को आपसे सफाई की नहीं......	संपादकीय	०४
वेद मंत्र, भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
स्वामी दयानन्द सरस्वती और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	०७
जग प्रवास के वासी	अनंतदेव बरवाड़िया	०७
वेदों में आधुनिक विज्ञान	कृपालसिंह वर्मा	०९
संन्यासियों का सेनादल	अमरजा टोपे शेकेदार	०९
राष्ट्र संत सांई बाबा	विष्णु पंत	१०
अधर्म के अन्धकार को धर्म के प्रकाश से.....	मृदुला अग्रवाल	११
जनता के संघर्ष से हैदराबाद मुक्त हुआ है	चन्द्रशेखर लोखण्डे	१२
योग के साधकों को आश्वासन	प्रो. उमाकांत उपाध्याय	१३
आपसी फूट	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	१४
अ. भा. राजार्य सभा द्वारा प्रधानमंत्री को ज्ञापन	संकलित	१५
विश्व शान्ति का स्त्रोत वैदिक धर्म	साध्वी डॉ. उत्तमा यति	१६
आर्य समाज के प्रति कुछ भ्रान्तियाँ और उनका....	खुशहालचन्द्र आर्य	१९
प्यारे नेता नरेन्द्र मोदी! जागो वीर महान	पं. नन्दलाल निर्भय	२०
लक्ष्मण की राम से गुहार	दयाशंकर गोयल	२०
बधाई एवं दायित्व चिन्तनीय	पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी	२१
दिया दूर नहीं जात	हीरालाल शर्मा	२१
प्रयाग में संगम स्नान-संक्रामक रोगों से मुक्त....	मोहनलाल मगो	२२
मित्रता	डॉ. सुभाष नारायण	२२
वेदों के मर्मज्ञ पं. शिवनारायण उपाध्याय की दृष्टि में वैदिक संसार		२३
मुझे हिन्दू होने पर गर्व है! पर क्यों?	दार्शनेय लोकेश	२४
समस्याएँ और भी है	पं. ओमप्रकाश शर्मा	२५
विश्वकर्मा और उनकी सन्तान	नरेन्द्र शर्मा 'अल्पज्ञ'	२५
अंगूठे की महिमा	विनोद गोयल	२६
कर्मफल सिद्धांत - कुछ अनसुलझे प्रश्न	अभिमन्यु कुमार खुल्लर	२७
मांस भक्षण निषेध	सुशीला वर्मा	२८
वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल, केहलारी...	आँखो देखी	२९
आध्यात्मिक जिज्ञासा/ प्रश्न आपके, समाधान....	वैदिक संसार	२९
बाढ़ त्रासदी मानव द्वारा निर्मित	देशराज आर्य	३०
अवसाद	गिरिश त्रिवेदी	३१
आर्य जगत की गतिविधियाँ	संकलित	३३
वैदिक संसार प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएँ	वैदिक संसार	३४
आर्य जगत् की गतिविधियों का साक्षी बना वैदिक संसार	आँखो देखी	३५
केरल में होगा द्रुत गति से वैदिक धर्म का शंखनाद	विनय आर्य	३७
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	४१
शोक सूचनाएँ	संकलित	४२

thearyasamaj.org

संपादकीय

मोदी जी राष्ट्र को आप से सफाई की नहीं! शुद्धिकरण की अपेक्षा है

२ अक्टूबर को समूचे संसार ने जगद्गुरुता की भूमिका का माद्दा रखने वाले तथा विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक और एक समय में सर्वाधिक जनसंख्या का गौरव प्राप्त देश के उस व्यक्तित्व को हाथ में झाड़ू लेकर झाड़ू लगाते देखा जिसकी कार्यशैली के अनोखे अंदाज से समूचा विश्व हतप्रभ होकर समूचे विश्व में कहीं भी वास करने वाला भारतीय जो स्वधर्म और स्वराष्ट्र के प्रति दिल में अपनत्व की टीस रखता है वह वर्ग एक परिवर्तन की आस संजोए पूर्णतया आशान्वित है कि दीर्घ समय बाद कोई ऐसा व्यक्ति आया है जो भारत और भारतीय संस्कृति को खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त करा सके।

मोदी जी के झाड़ू लगाते ही फोटो छाप पिछलग्गू नेताओं और अधिकारियों में प्रतिस्पर्धा चल पड़ी और राष्ट्रवासियों को एक स्वस्थ संदेश देने का एक महत्वपूर्ण मुद्दा नौटंकीबाजी की भेंट चढ़कर मात्र सरकारी कार्यक्रम बनकर रह गया जिसके प्रचार-प्रसार के लिए देश के आमजन से एकत्रित राजस्व के करोड़ों-अरबों रूपये तथा देश के कर्णधारों का बहुमूल्य समय स्वाहा हो गया।

यह सब देखकर मन अत्यन्त क्षोभ से भर गया और संभवतः स्वयं मोदी जी ने भी इस महत्वाकांक्षी योजना को इस तरह सरकारी कार्यक्रम बनने की परिकल्पना भी न की हो क्योंकि उनके द्वारा समय-समय पर दिये गये वक्तव्यों से परिलक्षित होता है कि उनके अंतरमन में राष्ट्र के विकास में प्रत्येक जन की भागीदारी स्वनिष्ठा से प्राप्त होकर कोई भी परियोजना मात्र सरकारी कार्यक्रम न बनकर राष्ट्र के विकास का आंदोलन बने और जब तक इस प्रकार कोई योजना आंदोलन नहीं बनती यह स्वप्न साकार नहीं होने वाला।

अगर हमें यह स्वप्न साकार करना है तो इसके लिये सफाई नहीं शुद्धिकरण करना होगा क्योंकि आज आम जन के मन-मस्तिष्क की बहुत सफाई हो चुकी है कुछ अपवादों को छोड़कर उसमें स्वधर्म, स्वसंस्कृति और स्वराष्ट्र प्रेम की आग अगर हो भी तो किसी कोने में राख के नीचे दबी चिंगारी की तरह ही होगी। जब तक आम जन के मनोमस्तिष्क का शुद्धिकरण नहीं होगा वह किसी आंदोलन से नहीं जुड़ने वाला और उसका परिणाम यही होगा की मोदी जी और उनके सिपहसालारों को हाथ में झाड़ू लेकर झाड़ू लगाते-लगाते ही पाँच वर्ष निकल जाऐंगे और गिद्ध दृष्टि जमाए बैठे अवसरवादी यह अवसर भी पलक झपकते झपट ले जाऐंगे।

मोदी जी सुक्ष्मदर्शी ओर दूरदृष्टा है किंतु अनेकों बार यह भी देखा गया है कि बुद्धिमान व्यक्ति भी भ्रांतियों का शिकार हो जाता है। मोदी जी को यह समझना होगा कि राष्ट्र को आपसे सफाई की नहीं शुद्धिकरण की अपेक्षा है। सफाई तो इस राष्ट्र के नागरिक के मनो-मस्तिष्क के साथ-साथ धर्म, संस्कृति, भाषा, शिक्षा, धन-सम्पदा, के साथ-साथ किसी समय में आर्यावर्त कहे जाने वाले इस भू-भाग की भी बहुत हो चुकी।

आर्यावर्त के समय की तो कुछ बात और ही हैं। जब आर्यावर्त से भारत बन चुका उस समय में यह राष्ट्र सोने की चिड़िया और जगद्गुरु कहा जाता था। प्रक्षिप्तता की परत को हटाकर विशुद्ध रूप से शोध किया जावे तो पता चलता है कि महाभारत काल तक इस सम्पूर्ण संसार में धर्म के नाम पर प्रचलित कोई मत, पंथ और सम्प्रदाय नहीं था मानव से मनुष्य बनाने वाला सद्-आचरण की मर्यादा में बांधने वाला समूचे संसार का एक मात्र वैदिक धर्म था और उसके मूल आधार '**वेदोऽखिलो धर्म मूलम्**' अनुसार वेद थे जो परमात्मा प्रदत्त मानव जीवन संविधान था। इस संविधान में आस्था रख उसके अनुकूल मर्यादित जीवन व्यतित करने वाले आर्य और विपरीत स्वच्छन्द जीवन व्यतित करने वाले अनार्य रूप में जाने जाते थे इस प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति आर्य और अनार्य के रूप में विभक्त जिन्हें हम सामान्यतया सज्जन और दुष्ट लोग कह सकते हैं। देवता अर्थात् परमार्थ की भावना वाले अनुशासन में बद्ध जीवन व्यतित करने वाले '**आर्य**' और आर्यों का संगठित होकर निवास करने वाले स्थान को '**आर्यावर्त**' कहा जाता था तथा आर्य महाभारत काल तक '**चक्रवर्ती सम्राट**' (सम्पूर्ण भू-भाग के सर्वमान्य शासक) होते थे। चक्रवर्ती सम्राटों की श्रृंखला में महाराज युधिष्ठिर अंतिम चक्रवर्ती सम्राट हुए हैं। इसके विपरित राक्षस वृत्ति के परपीड़ा में आनन्दित होने वाले जो किसी मर्यादा-अनुशासन के अधिन न होकर स्वच्छन्द जीवन व्यतित करने वाले दुष्ट-दुराचारी लोग अनार्य कहे जाते थे।

आर्य-अनार्य अर्थात् देवता-राक्षस अथवा सज्जन-दुष्ट व्यक्ति वर्तमान में ही नहीं अपितु मनुष्य की उत्पत्ति काल से ही होते आए हैं। आर्य-अनार्य जन्म से उत्पन्न नहीं होते अपितु जीवात्मा आर्यत्व से प्रभावित होता है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में '**मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने हारा है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ-दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुक जाता है।**' परमपिता परमात्मा ने एक मात्र मानव योनी को मननशीलता का गुण प्रदान करते हुए कर्म करने को स्वतंत्र रखा है। जब मानव वेदादि शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर श्रेय मार्ग का पथिक बनता है तो आर्य बनता है और चाहे उसने वेदादि शास्त्रों का ज्ञान तो अवश्य प्राप्त कर लिया हो किन्तु श्रेय मार्ग का पथिक न बनकर प्रेयमार्ग पर चल पड़ता है तो अनार्य बनकर स्वपतन के साथ ही अपने कुल-वंश, समाज, राष्ट्र और धर्म को क्षति पहुँचाने वाला बनता है उदाहरणार्थ रावण, कंस और दुर्योधन। जब वेद ज्ञान प्रचुरता के काल में इस प्रकार के असंख्य राक्षस वृत्ति के दुष्ट-दुराचारी व्यक्ति अनार्य बन सकते हैं तो वेद ज्ञान विहिन वर्तमान भोगवाद के समय में आर्य कैसे बनेंगे?

यहाँ पर आर्य जगत् की प्रखर वक्ता सुश्री अंजलि आर्या का अपने व्याख्यान में दिया गया सुन्दर वक्तव्य दृष्टव्य है उन्होंने कहा था कि पहले अच्छे लोग होते थे दुष्ट-दुराचारी नहीं होते थे जबकि आज समूचे लोग दुष्ट-दुराचारी हैं अथवा बुरे लोगों की संख्या अधिक है जो ऐसा समझते हैं वे गलत हैं पहले भी दुष्ट-दुराचारी व्यक्ति होते थे जिन्हें हम आज राक्षस कहते हैं और आज भी दुष्ट-दुराचारियों के अनुपात में अच्छे लोगों की

thearyasamaj.org

संख्या अधिक है भूतकाल और वर्तमान में मात्र इतना अन्तर आया है कि पूर्वकाल में अच्छे लोगों का आत्मबल उच्च होकर वे संगठित होकर दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करते थे इतना कि वे अनार्य राक्षस वृत्ति के लोगों पर भारी पड़ते थे अच्छे लोगों से बुरे लोग भयभीत रहते थे। जबकि वर्तमान में अच्छे चरित्र के जिन्हें आर्य कह सकते हैं वे आत्मबल से हीन होकर संगठित नहीं हैं अधिकांशतः सुनाई देता है भाई कौन दुष्ट लोगों के मुँह लगे। हम तो बाल-बच्चेदार आदमी हैं, संसार में तो यह सब आदि काल से होता आ रहा है हमें तो अपनी और अपने घर की चिन्ता से मतलब है जिसकी जो जाने; हम तो भैया हम भले और हमारा घर भला ना काँहू से दोस्ती, हम तो बैठे बिठाये किसी के फटे में पाँव डालकर आफत मोल लेने के आदि नहीं हैं। आदि-आदि परिणामतः अल्प संख्या वाले दुष्ट-दुराचारी लोग बहुसंख्यक अच्छे लोगों पर भारी पड़ रहे हैं। सीधी सी बात है अच्छे लोग आज भयाक्रांत होकर जीवन जी रहे हैं और जब ऐसा होगा तो अनार्य लोगों का सत्ता और संसाधनों पर अतिक्रमण होगा और जब सत्ता और संसाधनों के स्वामी होकर आर्यों पर अनार्य शासन करेंगे तो अनार्य (राक्षस) वाद फलेगा-फूलेगा ही।

अतः भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री मान्यवर नरेन्द्र मोदी जी से विनम्र निवेदन है कि ईश्वर की इच्छा से मात्र ३१ प्रतिशत मत प्राप्त होने के बाद भी आपको स्पष्ट बहुमत के साथ नेतृत्व करने का अंवसर प्राप्त हुआ है तो यह अवसर सफाई करने के लिये नहीं अनार्ष वातावरण के शुद्धिकरण के लिये परमपिता परमात्मा द्वारा उपलब्ध कराया गया सुअवसर है क्योंकि सफाई तो महाभारत काल से जो शुरू होनी शुरू हुई है भरपूर हुई है। एक वैदिक धर्म के स्थान पर असंख्य मत-पन्थ, सम्प्रदायों की खरपतवार उग आई है।

परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान आधारित संस्कृति के स्थान पर मनुष्यकृत पुस्तकों द्वारा अल्पज्ञ मनुष्य का विकृत ज्ञान फल फूल रहा है। जो मनुष्य को संगठित होने के स्थान पर अनैक्यवाद का वाहक बनकर विघटित कर रहा है। समूचे संसार का निर्माता तथा पालनकर्ता एक निराकार सर्वशक्तिमान, अजन्मा, अजर, अमर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी ईश्वर न होकर कुकुरमुत्ते की तरह उग आये, सबने अपनी मनमर्जी के पृथक-पृथक ईश्वर बना रखे हैं और तो और साधारण देहधारी मनुष्य ईश्वर बन बैठा है।

'वसुधैव कुटुम्बकं' का लक्ष्य लेकर समुची वसुधाभर के लोगों को **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् समस्त संसार के मनुष्यों को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर चलने वाली जगत्-गुरु पद पर विराजित इस वैदिक धर्म सिद्धांतों पर आधारित आर्य संस्कृति की ऐसी सफाई हुई की विश्व को श्रेष्ठ बनाना तो दूर इस भू-भाग के मनुष्य ही पतन के गर्त में गीर गये जिसके लिये समय-समय पर अनेकों महापुरुषों ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर धर्म-संस्कृति और राष्ट्र को बचाने हेतु योगदान दिया है किंतु रोग इतना बढ़ चुका कि यह एक दो महानुभावों के बस का नहीं परिणामतः हम परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ गये और करीब एक हजार वर्षों की परतंत्रता ने धन सम्पदा, भू-भाग से ही हमारी सफाई नहीं की वरन् हमारी धर्म, संस्कृति, भाषा, शिक्षा, खान-पान, रहन-सहन आदि की सभी ओर से अच्छे प्रकार से सफाई कर लगभग हमारे आर्यत्व को समाप्त करने की कोई-कसर नहीं छोड़ी। भगवान भला करे उन पुण्यात्माओं का जिन्होंने स्वामी पूर्णानन्द, गुरु विरजानन्द तथा स्वामी दयानन्द जैसी महान् आत्माओं से स्व धर्म-संस्कृति और राष्ट्र के लिये आहूत हो जाने की प्रेरणा प्राप्त की और अंग्रेजो की ईंट से ईंट बजाकर आहूत हो गये।

इस राष्ट्र के १००० वर्षों की भरपूर सफाई के बाद स्वतंत्रता तो प्राप्त हुई मगर अभी राष्ट्र को स्वतंत्र होने के बाद भी और सफाई देखनी थी। यही कारण रहा की स्वतंत्रता के ६८ वर्षों बाद भी प्राणी मात्र का कल्याण करने वाली इस भू-भाग की मूल धर्म-संस्कृति, भाषा, शिक्षा, खान-पान, रहन-सहन की शुद्धि नहीं होकर विपरीत तीव्रता से और अधिक सफाई हुई है जभी तो लोग कहते सुने जाते हैं कि देश को जो हानि ७५० वर्षों में मुगलों ने नहीं पहुँचाई वह हानि हमारी शिक्षा पद्धति को बदलकर २५० वर्षों में अंग्रेजों ने हमारी संस्कृति पर प्रहार कर कर दी और जो क्षति १००० वर्षों में मुगल-अंग्रेज मिलकर नहीं कर पाये वह मात्र ६५ वर्षों में कांग्रेस ने गाँधी बाबा के तुष्टिकरण के रास्ते पर चलकर छद्म धर्म निरपेक्षता थोप कर कर दी हमारी त्यागमयी संस्कृति विलुप्त होकर हम भोगवादी काले अंग्रेज बन गये हैं जो तन से सूट-बूट में सुन्दर दिखते हैं किन्तु मन के काले हैं। गान्धी बाबा के बताये रास्ते बुरा देखो-मत, बुरा सुनो मत, बुरा कहो मत के रास्ते पर चलकर वे कहीं भी बुरा नहीं देखते हैं उन्हें हरा-भरा ही दिखता है १००० वर्षों की परतंत्रता की प्रताड़नाएँ वे नहीं देखते क्रांतिकारियों के बलिदान उन्हें लूट मार की घटनाएँ दिखती हैं रक्त से नहाए इतिहास को भावी पीढ़ी को पढ़ाने से घृणा और वैमनस्य उत्पन्न होने का खतरा उन्हें दिखता है अर्थात् हमारे साथ जो हुआ उसे भूल जाएँ और आगे और होने देने के लिये तैयार रहे।

'बुरा सुनो मत' अर्थात् हमारे सामने कोई हमें गालीयाँ देता रहे तो हम कानों में उंगली डालकर उसे अनसुनी करते रहें। **'बुरा कहो मत'** कोई हमारे साथ कुछ भी व्यवहार करता आ रहा हो और वह अपना व्यवहार

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती।। ऋग्वेद १/३/११

भावार्थ - जो आप्त अर्थात् पूर्ण विद्यायुक्त और छल आदि दोषरहित विद्वान् मनुष्यों की सत्य उपदेश करानेवाली यथार्थ वाणी है, वही सब मनुष्यों के सत्य ज्ञान होने के लिए योग्य होती है, अविद्वानों की नहीं।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखंड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खंडन-मंडन के प्रणेता, अंधविश्वास नाशक, पाखंड खंडनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानंद के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।

* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धांतों, ऋषि दयानंद प्रणीत संदेशों को प्रकाशित करना।

* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।

* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, संदेशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।

* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

thearyasamaj.org

नहीं छोड़े चाहे वह हमारे सामने हमारी बहन-बेटियों की इज्जत पर हाथ डाले हम उससे बुरा न कहकर हाथ जोड़ें विनम्र विनती करते रहें। आखिर गान्धी बाबा ने इन तीन बातों के साथ एक महत्वपूर्ण बात इतिहास से सबक लेते हुए क्यों नहीं कही कि **'बुरा सहो मत'** गान्धी जी के इन उत्तराधिकारी कांग्रेसियों ने राष्ट्र को स्वतंत्र होने के बाद गान्धी के बताये रास्ते पर चलकर अंग्रेजों की शासन में जमें रहने की नीतियों पर चलते हुए इतिहास का कटुसत्य भूला दिया, जिन्हें जिनकी सीमा बताना थी उन्हें कटु कहा नहीं और जो धर्म-संस्कृति राष्ट्र निष्ठा से ओत-प्रोत महानुभाव आवाज उठाते रहे उनकी सुनी नहीं क्योंकि यह सब उनके मर्जी अनुसार शासन चलाने और अंग्रेजों की तरह दोनों हाथों से देश को लुटने के रास्ते में बुरा था।

नहीं तो क्या कारण था कि हजारों वर्षों से प्रताड़ित बहुसंख्यक वर्ग स्वतंत्रता के युग में अपनी धर्म-संस्कृति, भाषा, शिक्षा की स्वराष्ट्र में मांग करे तो वह साम्प्रदायिक हो जाता है और जो प्रताड़ित कर्ता थे उन्हें उपकृत किया जाता है उनके उपर उपहारों की बौछार की जाती है .उन बर्बर आतताइयों के नाम पर बसे नगर, रोड़ स्मारक हमें मुफ्ह चिढ़ा रहे हैं और तो और धर्म निरपेक्षता के नाम पर नित नये बनते जा रहे हैं उन्हें महान् बताकर उनका फिल्मांकन किया जाकर उन्हें हिरो बनाया जा रहा है। मानवता के नाम कलंकित विचारधाराओं को अपनी विकृतियों में वृद्धि करने हेतु खुली छूट ही नहीं वरन् हर संभव सहयोग दिया जा रहा है। आज सड़क चौड़ीकरण के नाम पर अनेकों मन्दिर तो प्रशासन तोड़ सकता है किंतु एक मस्जिद हटाने की हिम्मत प्रशासन की भी नहीं होती। बहुसंख्यक वर्ग द्वारा मान्य इस भू-भाग की प्राचीनतम् मानवमात्र की कल्याणकारी संस्कृति-धर्म, आस्थ का सम्मान तो दूर की बात उपहास उड़ाया जाता है सर्वजन हितकारी, मूल संस्कृति की अराध्य गोमाता के प्रति भावनाओं का आदर न कर उसका और अन्य मूक प्राणियों का वध किया जाता है इस भू-भाग के अनेकों टुकड़े कर उन हिस्सों में रहने वालों का जीवन नर्क बना दिया गया और यही जारी रहा तो यहाँ भी पिछले १००० वर्षों का नर्कमय जीवन भावी पीढ़ी को भोगना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं अत: **कर सकों तो शुद्धिकरण करो धर्म का, शुद्धिकरण करो संस्कृति का, शुद्धिकरण करो भाषा का, शुद्धिकरण करो शिक्षा पद्धति का,** शुद्धिकरण करो यहाँ के मूल निवासी जो प्राणों की विवशतावश अधर्मी बन गये उनका। जब हम ऐसा कर पायेंगे तब हम हमारे नौ निहालों की मानसिकता की शुद्धि कर पायेंगे और हमारी भावी पीढ़ी की मानसिकता की शुद्धि हो गई तो निश्चित जानिए राष्ट्र के समस्त कूड़े-करकट की सफाई हो गई अन्यथा तुम एक हाथ से झाड़ू लगाते रहो मात्र कुछ अपवादों को छोड़कर ढाई सौ करोड़ हाथ कचरा बिखेर रहे हैं और बिखेरते रहेंगे उनके अंतर में झांकने पर स्याह काले दृष्टिगोचर होते हैं जो स्वार्थ, हठ, दुराग्रह में पशुओं को भी मात देते हैं।

विगत अगस्त माह के अंक के संपादकीय में हमने सितम्बर माह के सम्पादकीय में **'आत्मा का विकास ही वास्तविक धर्म'** पर प्रकाश डालने का उल्लेख किया था किन्तु राष्ट्र में लव जिहाद के तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते जिहादी आतंकवाद के कारण सितम्बर माह में वर्णीत विषय पर प्रकाश नहीं डाल पाये तथा वर्तमान संपादकीय विषय **शुद्धिकरण** से भी इसका संबंध होने के कारण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है....

आत्मा का विकास ही वास्तविक धर्म....

सभी बन्धनों से मुक्त है ईश्वर

हम सबके मन में कभी न कभी यह प्रश्न आता होगा कि **वास्तव में धर्म क्या है? हमारे जीवन में धर्म धारण करने का क्या उपाय है? क्या किसी मत में दीक्षित हो जाना धार्मिक बनने की पहचान है? आमतौर पर धर्म को मत-मतान्तरों से जोड़ दिया गया है।**

असल में धर्म बाहर की वस्तु नहीं यह भीतर का विकास है उसे समाज से नहीं, व्यक्ति के अंतराल में ढूंढा जाना चाहिए। धर्म व्यक्ति और व्यष्टि के बीच में तादात्म्य की फलश्रुति है, जब कि व्यक्ति और समाज के मध्य का सम्बन्ध संप्रदाय कहलाता है। धर्म और संप्रदायवाद में उतना ही अंतर है जितना जीवन और मृत्यु। **जहाँ धर्म होगा, वहाँ सर्वत्र सुगंधि बिखरती रहेगी, जहाँ संप्रदायवाद होगा वहाँ सड़न और दुर्गंध होगी।** करूणा, उदारता, सेवा, सहकारिता यह तो जीवन की सहचरी और चैतन्यता के लक्षण है। धर्म और संप्रदाय में यदि कोई अन्तर है तो उसे उतना ही विशाल होना चाहिए जितना की आकाश और पाताल क्योंकि धर्म हमें ऊँचाइयों के प्रति श्रद्धावान बनाता है और इस बात की प्रेरणा देता है कि हमारा अंतराल अहंकारपूर्ण नहीं अहंशून्य होना चाहिए। जहाँ अहमन्यता होगी, विवाद और विग्रह वहीं पैदा होंगे। जहाँ सरलता होगी वहाँ सात्विकता पनपेगी। सरल और सात्विक होना दैवी विभूतियाँ हैं। जो इन्हें जितने अंशों में धारण करता है, उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे उस अनुपात में धार्मिक हैं।

इसलिए यह कहना अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि धर्म हमें देवत्व की ओर ले चलता है, जबकि संप्रदाय अधोगामी भी बनाता है। कट्टरवाद, उग्रवाद यह सभी संप्रदायवाद की देन है। सांप्रदायिक होने का मतलब है कूपमंडूक होना, केवल अपने वर्ग एवं समूह की ही चिंता करना। इसके अतिरिक्त धर्म अधिक उदार बनाता तथा आत्मविस्तार का उपदेश देता है। **आत्मवत सर्वभुतेषु एवं वसुधैव कुटुम्बकम्** यह इसी की शिक्षा है।

संप्रदाय असहिष्णु होता है। वह उन्माद और आतंक फैलाता है। जाति, भाषा, लिंग क्षेत्र आदि के आधार पर विभेद करना यह संप्रदाय का काम है। धर्म तो ईश्वर की तरह समदृष्टा है वह कहता है कि हम सब को परमात्मा की रक्षा करनी चाहिए। **हम इसी ऊहापोह में फँसे रहते हैं कि कहीं कोई शूद्र मंदिर के ईश विग्रह को अपवित्र न कर दे, किसी तनखैये को गुरुद्वारे में क्या काम, कोई काफिर मस्जिद में न घुसे।**

हमारे मनीषियों का कहना है, **धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित:** अर्थात् मरा हुआ धर्म मार डालता है, रक्षा किया हुआ धर्म रक्षा करता है। आज की सामाजिक परिस्थिति के इस सत्य के प्रमाण रूप में देखा जा सकता है। धर्म को खतरा अधर्म से नहीं, नकली धर्म से होता है। अधर्म तो प्रत्यक्ष है, इसमें दुराव- छुपाव जैसी कोई बात नहीं, **खतरनाक वे हैं जो धर्म की आड़ लेकर काम करते हैं,** क्योंकि वह असली आवरण में नकली व्यक्ति होता है। हिंदू धर्म में अनेक देवी-देवताओं की मान्यता है देवताओं की संख्या तैंतीस कोटि बताई जाती है। देवताओं की इतनी बड़ी संख्या एक सत्य शोधक को बड़ी उलझन में डाल देती है। इन देवताओं में अनेक की तो ईश्वर से समता मानी जाने लगी है इस प्रकार बहु-ईश्वरवाद उपज खड़ा होता है।

संसार के प्राय: सभी प्रमुख धर्म एक ईश्वरवाद को मानते हैं। हिंदू धर्म शास्त्रों में भी अनेक अभिवचन एक ईश्वर होने के समर्थन में भरे पड़े हैं। फिर यह अनेक ईश्वर कैसे? ईश्वर की ईश्वरता में साझेदारी का होना कुछ बुद्धि संगत प्रतीत नहीं होता। अनेक देवताओं का अपनी-अपनी मर्जी से मनुष्यों पर शासन करना, शाप-वरदान देना आदि ईश्वर जगत् की अराजकता

शेष पृष्ठ ११ पर....

thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

अब हम स्वामी दयानन्द सरस्वती के सापेक्षता सिद्धान्त, क्वान्टम सिद्धान्त, अनिश्चितता सिद्धान्त तथा संभावना सिद्धान्त विषयक विचारों का अध्ययन करते हैं। स्वामी जी ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ९२ मंत्र १ के भाष्य में आकाश और समय का संबंध बता देते हैं-

एता उ त्या उषयः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमंजते।
निष्कृण्वाना आमुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः।।

पदार्थ-हे मनुष्यों! तुम जो **(एताः)** देखे जाते **(उ)** और जो **(त्याः)** नहीं देखे जाते अर्थात् दूर देश में वर्तमान हैं वे **(उषसः)** प्रातःकाल के सूर्य के प्रकाश **(केतुम्)** सब पदार्थों के ज्ञान को **(अक्रत)** कराते हैं जो **(रजसः)** भूगोल के **(पूर्वे)** आधे भाग में **(भानुम्)** सूर्य के प्रकाश को **(अंजते)** पहुँचाती और **(निष्कृण्वानाः)** दिन रात को सिद्ध करती है वे **(आयुधानीव)** जैसे वीरों की युद्ध विद्या से छोड़े हुए बाण आदि शस्त्र सीधे तिरछे जाते आते हैं वैसे **(धृष्णवः)** प्रगल्भता के गुणों को देने **(अरूषीः)** लालगुण युक्त और **(मातरः)** माता के तुल्य सब प्राणियों का मान करने वाली **(प्रतिगावः)** उस सूर्य के प्रकाश के प्रत्यागमन अर्थात् क्रम से घटने बढ़ने से जगह-जगह में **(यन्ति)** घटती बढ़ती से पहुँचती है उसको तुम लोग जानो।

भावार्थ-इस सृष्टि में सदैव सूर्य का प्रकाश भूगोल के आधे भाग को प्रकाशित करता है और आधे भाग में अन्धकार रहता है। सूर्य के प्रकाश के बिना किसी पदार्थ का ज्ञान नहीं होता। सूर्य की किरणें क्षण-क्षण भूगोल आदि लोकों के घूमने से गमन करती-सी दिख पड़ती हैं जो प्रातः काल के रक्त प्रकाश अपने-अपने देश में हैं वे प्रत्यक्ष और जो दूसरे देश में है वे अप्रत्यक्ष, ये सब प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रातः काल की वेला सब लोकों में एक-सी सब दिशाओं में प्रवेश करती है। जैसे शस्त्र आगे पीछे होने से सीधी उल्टी चाल को प्राप्त होते हैं वैसे अनेक प्रकार के प्रातः प्रकाश भूगोल आदि लोकों की चाल से सीधी तिरछी चालों से युक्त होते हैं सब बात मनुष्यों की जाननी चाहिए।

चूँकि पृथ्वी गोल है और अपनी कीली पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। अतः सब जगह एक साथ सूर्योदय नहीं हो सकता। अतः समय आकाश से जुड़ जाता है। इसी विचार को निम्न मंत्र अधिक बल देकर सिद्ध कर रहा है-

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाच्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः।। ऋ. १.९५.१

पदार्थ-हे मनुष्यों! जो (विरूपे) उजेले और अंधेरे से अलग-अलग रूप और **(स्वर्थे)** उत्तम प्रयोजन वाले **(द्वे)** दो अर्थात् रात और दिन परस्पर **(चरतः)** वर्ताव वर्तते और **(अन्यान्या)** परस्पर **(वत्सम्)** उत्पन्न हुए संसार का **(उपधापयेते)** खान पान कराते हैं **(अन्यस्याम्)** दिन से अन्य रात्रि में **(स्वद्यावान्)** जो अपने गुण से धारण किया जाता वह औषधि आदि पदार्थों का रस जिसमें विद्यमान है ऐसा **(हरिः)** उष्णता आदि पदार्थों का निवारण करने वाला चन्द्रमा **(भवति)** प्रकट होता है वा **(अन्वस्याम्)** रात्रि से अन्य दिवस होने वाली वेला में **(शुक्रः)** आतपवान् **(सूवर्चाः)** अच्छे प्रकार उजेला करने वाला सूर्य **(ददृशे)** देखा जाता है वे रात्रि दिन सदैव वर्तमान है। इनको रेखा गणित आदि गणित विद्या से जानकर इनके बीच उपयोग करो।

भावार्थ-मनुष्य को जानना चाहिए कि दिन रात कभी निवृत नहीं होते किन्तु सर्वदा बने रहते हैं अर्थात् एक देश में नहीं तो दूसरे देश में होते हैं। जो काम रात और दिन में करने योग्य हों उनको निरालस्य से करके सब कामों को सिद्ध करें। बिना काल के लगे कोई कार्य नहीं हो सकता है।

त्वेषं रूपं कृणत उत्तरं यत्संपृंचानः सदने गोभिरद्भिः।
कविबुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव। ऋ. १.९५.८

भावार्थ-मनुष्यों को जानना चाहिए कि काल के लगे बिना कार्य स्वरूप उत्पन्न होकर और नष्ट हो जाय यह होता ही नहीं और न ब्रह्मचर्य आदि उत्तम समय के सेवन बिना शास्त्र बोध कराने वाली बुद्धि होती है। इस कारण काल के परम सूक्ष्म स्वरूप को जानकर थोड़ा सा भी समय व्यर्थ न खोवें। इसी में काल की परिभाषा का भी संकेत है।

'किसी भी रचनात्मक अथवा विध्वंसात्मक कार्य को प्रारम्भ करके उसे एक निश्चित स्थिति तक पहुँचाने के लिए जो प्रतीक्षा करनी पड़ती है

जग प्रवास के वासी

लेखक- जगतनाथ पथिक

मुझसे मेरा नाम न पूछो, ग्राम धाम परिवार न पूछो
नहीं लजाओं काम पूछकर, देश अपरिचित का वासी।
युग अनंत से दूर देश में, चलता आता ज्ञात यही कुछ
बता न पाया कोई साथी, जिससे पूछा उसका ठोर।
मिलते और बिछुड़ते आए, काल बली के बनते ग्रास।
इनसे न्यारे नाम न उनका, मुक्त न बनते उसके ग्रास।
नाम रूप है जिनका वे सब, भी है ठौर-ठौर के वासी
सभी अपरिचित सब अनजान, हैं ये सारे पथिक प्रवासी।
हे जिज्ञासू तुम्ही बता दो, मान रहे जो जग को अपना
पर कहना सच सोच समझकर, कब से बने यहाँ के वासी।
नाम रूप के वस्त्र धार कर, बसे आ नाम रूप के देश
इसके पहले कहाँ बसे थे, बतलाओ वह अपना देश।
मायावी की यह रचना है, इन्द्रपाल कृत है ये भेद
बन विवस्त्र निज रूप निहारो, खुल जाएगा यह सब भेद।
चहल पहल है बस पड़ाव पर, और सभी पथ हैं अनजाना
निर्जन दुर्गम यह महान पथ, पद-चिन्हों से भी है सूना।
पथिक मात्र का काम यही है, बन के दृष्टा भर रहना
ना कुछ कहना, न कुछ सुनना, विनत दृष्टि कर बढ़ते रहना।
मिल न जाये जब तक जीवों को, आनंदधाम परम अविनाशी
धर धर नाम रूप का चोला, बने रहेंगे सदा प्रवासी।

प्रस्तोता-अनन्तदेव बरवाड़िया
पुरोहित-आर्य समाज, हिरणमगरी
उदयपुर (राज.) चलभाष-९४१४२५४१५५

thearyasamaj.org

उसे समय कहते हैं। पदार्थ की कोई स्वतंत्र स्थिति नहीं है वह तो ऊर्जा का ही एक रूप है, इस विषय में ऋ. १.९७.५ में कहा गया है-

प्रयदग्ने: सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानव:। अप न: शोशुचदघम्।।

भावार्थ-इस मूर्तिमान् बिजली के बिना ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो अलग हो। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, इस विषय में वेद कहता है-

अव: परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात्।
सा कद्रीची कं स्विदर्द्धं परागात्क्व स्वित्सूते नहि यूथे अन्त:।।
ऋ. १.१६४.१७

भावार्थ-यह पृथ्वी सूर्य से नीचे-ऊपर और उत्तर-दक्षिण को जाती है इसकी गति विद्वानों के बिना न देखी जाती। इसके परले आधे भाग में सदा अन्धकार और उरले आधे भाग में प्रकाश वर्तमान है। बीच में सब पदार्थ वर्तमान है सो यह पृथ्वी माता के तुल्य सबकी रक्षा करती है।

निम्न मंत्र सामान्य सापेक्षता का द्योतक है-

ये अर्वांचस्ताँ उ पराच आहुर्ये परांचस्ताँ उ अर्वाच आहु:।
इन्द्रश्च या चक्रथु: सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति।।ऋ१.१६४.१९

पदार्थ-हे (**सोम**) ऐश्वर्ययुक्त विद्वान्! (**ये**) जो (**अर्वाच:**) नीचे जाने वाले पदार्थ है (**तान् उ**) उन्हीं को (**पराच:**) परे/दूर को पहुँचे हुए (**आहु:**) कहते हैं और (**ये**) जो (**परांच:**) परे से व्यवहार में लाये जाते हैं अर्थात् पर भाग में पहुँचने वाले (**तान्, उ**) उन्हें तर्क-वितर्क से (**अर्वाच:**) नीचे जाने वाले (**आहु:**) कहते हैं उनको जानो। (**इन्द्र:**) सूर्य (**च**) और वायु (**या**) जिन भुवनों को धारण करते हैं (**तानि**) उनको (**युक्ता:**) युक्त हुए अर्थात् उनसे सम्बन्ध किये हुए पदार्थ (**धुरा**) धारण करने वाली धुरी में जुड़े हुए घोड़ों के (**न**) समान (**रजस:**) लोकों को (**वहन्ति**) बहाते, चलाते उनको हे पढ़ाने और उपदेश देने वालो! तुम विदित (**चक्रथु:**) करो जानो।

भावार्थ-इस पद में उपमालंकार है। हे मनुष्यों! यहाँ जो नीचे ऊपर, परे, उरे, मोटे, सूक्ष्म, छुटाई, बड़ाई के व्यवहार है वे सापेक्ष है। एक की अपेक्षा से यह इससे ऊँचा जो कहा जाता है वही दोनों कथनों को प्राप्त होता है। जो इससे परे है वही और से नीचे है, जो इससे मोटा है वह और से सूक्ष्म, जो जो इससे छोटा है वह और से बड़ा, गुरु है यह तुम जानो। यहाँ कोई वस्तु अपेक्षा रहित नहीं है और न निराधार ही है। यही स्थिति दाएँ बाएँ की है।

सृष्टि प्रवाह स्वभाव से अनादि है।

यस्मिन् वृक्षे मध्वद: सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे।
तस्मेदाहु: पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्य: पितरं न वेद।। ऋ. १.१६४.२२

भावार्थ-इस मंत्र में रूपकालंकार है। अनादि अनन्तकाल से यह विश्व उत्पन्न होता और नष्ट होता आया है। जीव उत्पन्न होते और मरते भी जाते हैं। इस संसार में जीवों ने जैसा कर्म किया वैसा ही अवश्य ईश्वर के न्याय से भोग्य है। कर्म जीव का भी नित्य सम्बन्ध है जो परमात्मा और उसके गुण, कर्म, स्वभावों के अनुकूल आचरण को न जानकर मन माने काम करते हैं वे निरन्तर पीड़ित होते हैं और जो उससे विपरीत है वे सदा आनन्द भोगते हैं।

सृष्टि कब और कैसे परमात्मा ने बनाई, इसे प्रत्यक्ष में किसी ने नहीं देखा है। अत: इसका जानना अनिश्चित है-

को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति।
भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित्को विद्वांसमुप गात्प्रष्टुमेतत्।। ऋ१.१६४.४

पदार्थ-(**यत्**) जिस (**प्रथमम्**) प्रख्यात प्रथम अर्थात् सृष्टि के पहिले (**जायमानम्**) उत्पन्न होते हुए (**अस्थन्वन्तम्**) हड्डियों से युक्त देह को (**भूम्या:**) भूमि के बीच (**अनस्था**) हड्डियों से रहित (**असु:**) प्राण (**असृक्**) रूधिर और (**आत्मा**) जीव (**बिभर्ति**) धारण करता उसको (**क: स्वित्**) कहीं भी (**क:**) कौन (**ददर्श**) देखता है (**क:**) कौन (**एतत्**) इस उक्त विषय के (**प्रष्टुम्**) पूछने को (**विद्वांसम्**) विद्वान के (**उपगात्**) समीप जावे।

भावार्थ-जब सृष्टि के पहिले ईश्वर ने सब के शरीर बनाये तब कोई जीव इनको देखने वाला न हुआ। जब उनमें जीवात्मा प्रवेश किये तब प्राण आदि वायु, रूधिर आदि धातु और जीव भी मिलकर देह को धारण करते हुए और चेष्टा करते हुए इत्यादि विषय की प्राप्ति के लिए विद्वान् को कोई ही पूछने को जाता है किन्तु सब नहीं।

इसी विषय को विस्तार देते हुए कहा गया है-

न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्य: संनद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन्प्रथमजा ऋतस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमस्या:।ऋ.१.१६४.३७

पदार्थ-(**यदा**) जब (**प्रथमजा:**) उपादान कारण प्रकृति से उत्पन्न हुए महत्तत्वादि (**मा**) मुझ जीव को (**आ अगन्**) प्राप्त हुए अर्थात् स्थूल शरीर अवस्था हुई (**आत्, इत्**) उसके अनन्तर ही (**ऋतस्य**) सत्य और (**अस्या:**) इस (**वाच:**) वाणी के (**भागम्**) भाग को, विद्या विषय को मैं (**अश्नुवे**) प्राप्त होता हूँ। जब तक (**इदम्**) इस शरीर को प्राप्त नहीं (**अस्मि**) होता हूँ तब तक उस विषय को (**यदिव**) जैसे का वैसा (**न**) नहीं (**वि जानामि**) विशेषता से जानता हूँ। किन्तु (**मनसा**) विचार से (**संनध्द:**) अच्छा बंधा हुआ (**निण्य:**) अन्तर्हित अर्थात् भीतर उस विचार को स्थित किये (**चरामि**) विचरता हूँ।

भावार्थ-अल्पज्ञता और अल्प शक्तिमत्ता के कारण साधन रूप इन्द्रियों के बिना जीव सिद्ध करने योग्य वस्तु को ग्रहण नहीं कर सकता। जब श्रोत्रादि इन्द्रियों को प्राप्त होता है तब जानने के योग्य होता है। जब तक विद्या से सत्य पदार्थ को नहीं जानता तब तक अभिमान करता हुआ पशु के समान विचरता है।

फिर इस सृष्टि को पूर्ण रूप से कौन जानता है? इस विषय में वेद इस प्रकार बताता है-

को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टि:।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथाको वेदयत आबभूव।। ऋ. १०.१२९.६

पदार्थ-(**क:**) प्रजापति परमेश्वर (**अद्धा**) निश्चय से (**वेद**) जानता है (**इह**) इस विषय में (**क:**) वह सुख स्वरूप भगवान् ही (**प्रवोचत्**) बताता है कि (**कुत:**) कहाँ से (**इयम्**) यह (**विसृष्टि:**) विविध सृष्टि है, (**देवा:**) विद्वान् और इन्द्रिय आदि (**अस्य**) इस जगत् के (**विसर्जनेन**) रचने के (**अर्वाक्**) बाद होते हैं। (**अथ**) अत: इनमें (**क:**) कौन (वेद) जानता है (**यत:**) जिससे यह जगत् (**आबभूव**) उत्पन्न होता है।

इसी भाव को अगले मन्त्र में बढ़ाया गया है-

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
वो अस्याध्यक्ष: परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद।। ऋ१०.१२९.७

भावार्थ-यह विविध सृष्टि जिससे उत्पन्न होती अथवा जिसमें धारित होती है वा जिसमें नहीं धारित होती उसको इसका अधिष्ठाता परमेश्वर ही पूर्णतया जानता है अन्य कोई इसे पूर्णतया नहीं जानता है। चूंकि वेद ईश्वरीय वाणी है और उसमें सृष्टि उत्पत्ति का विषय भी दिया गया है। इससे यह संभावना बनती है कि वेद के ज्ञान के द्वारा हम सृष्टि उत्पत्ति के विज्ञान को जान सकते हैं। **क्रमश:** ●

thearyasamaj.org

वेदों में आधुनिक विज्ञान

- कृपालसिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा
मेरठ (उ.प्र.)-९९२७८८७७८८

(विद्युत का अन्य शक्तियों में रूपान्तरण)

वेद विज्ञान की पुस्तक है। वेद मन्त्रों की अवैज्ञानिक व्याख्या होने के कारण वेद जन-सामान्य से दूर हो गये। वैदिक विज्ञान की भाषा में Electricity को इन्द्र कहते हैं। विद्युत को हम प्रकाश के रूप में भी प्राप्त कर सकते हैं, उष्मा के रूप में भी, बल के रूप में भी। इस प्रकार अनेक रूपों में प्राप्त कर सकते हैं। यही वैज्ञानिक तथ्य यजुर्वेद ६/३२ में दिखाया गया है।

(१)"इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते" (यजु. ६/३२)

हे मनुष्यों ! आप लोग इन्द्र अर्थात् विद्युत को वसुमत् अर्थात् पृथ्वी पर पाये जाने वाली अनेक प्रकार की शक्तियों के रूप में प्राप्त कर सकते हो तथा रूद्रवत् अर्थात् अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली शक्तियों के रूप में प्राप्त कर सकते हो।

(२)"इन्द्राय त्वादित्यवते" (यजु. ६/३२) इन्द्र अर्थात् विद्युत् को आदित्य अर्थात् प्रकाश के रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

(३)"इन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने" (यजु. ६/३२)

विद्युत का प्रयोग युद्धक्षेत्र में शत्रु को मारने के लिए किया जा सकता है। अभिमति का अर्थ है शत्रु।

(४)"श्येनाय त्वा सोमभृते" (यजु. ६/३२)

यज्ञ के द्वारा अर्थात् वैज्ञानिक युक्तियों के द्वारा विद्युत शक्ति का उपयोग पक्षियों की तरह आकाश में उड़ने के लिए किया जा सकता है।

(५)"अग्ने त्वा रायस्पोषदे" (यजु. ६/३२)

हे मनुष्यों ! वैज्ञानिक युक्तियों से विद्युत का प्रयोग अग्नि उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है। इस अग्नि से धन प्राप्त किया जा सकता है। ●

संन्यासियों का सेनादल

-अमरजा टोपे शेकदार
मंत्री- आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान
शैलगी, सोलापुर, महाराष्ट्र
चलभाष-८०५५४४५८४७

हिन्दवी स्वराज्य के संस्थापक याने मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराजा के राष्ट्रगुरू समर्थ रामदास स्वामी जी द्वारा स्थापित सेनादल के संचालक धावड़सी के ब्रहमेन्द्र स्वामी थे।

मराठा साम्राज्य के छत्रपति स्वायंभूव उर्फ शाहु महाराज प्रथम शिवाजी के पौत्र थे इनके दीवान श्रीमंत विनायकराव जी के अग्रज सगे भाई माधवराज भट्ट प्रभुदेव जी संन्यासियों के सेनादल के सेनापति थे उनका संन्यासी नाम माधवेंद्र स्वामी था।

राष्ट्रसंत रामदास स्वामी के सेनादल के संचालक सेनापति स्वामी ब्रह्मेन्द्र जी की निन्दा चरित्र हनन ब्रिटीश कालीन इतिहासकार ने जमकर किया उनका इतिहास बिगाड़ा।

संस्कृत भाषा के व्याकरणाचार्य तथा प्रतापी योद्धा एवं संन्यासियों के सेनादल के संचालक सेना नायक ब्राह्मेन्द स्वामी जी के शिष्य उत्तराधिकारी माधवेन्द्र स्वामी जी कुडाळ देश के सम्राट प्रभुदेव जी के वंशज थे तथा मराठा साम्राज्य के छत्रपति के दीवान के ज्येष्ठ भ्राता थे। इन के उत्तराधिकारी इनके भतीजे बलवंतराव जी महाबल देश के सुबेदार तथा संन्यासियों की सेनादल के सेनापति थे उनका संन्यासी आश्रम का नाम बलवेन्द्र स्वामी था।

जब मराठा साम्राज्य वैभवशाली तथा सामर्थ्यशाली था तब मराठा छत्रपति के तथा पेशवा के प्रार्थना पर संन्यासियों की सेनादल को विसर्जित किया गया तब छत्रपति शाहु महाराज जी के राजाज्ञा से पेशवा श्रीमंत बल्लाल भट्ट श्रीवर्धनकर जी ने प्राचीन महाबल देशाच पुनर्गठन कर के स्वामी बलवेन्द्र जी को महाबल देश का सुबदार नियुक्त किया तब महाबल देश की राजधानी कासेगांव जनपद था।

सन् १७१७ संवत् १७७४ में संन्यासियों की सेनादल विसर्जित तो हुआ अपितु प्रभुदेव जी के कुल में बालब्रह्मचर्य से संन्यास लेकर शस्त्र के साथ शास्त्र की पुजा करने की परम्परा चलती रही।

प्रभुदेव सामंतों के कुल में जन्में संन्यासीगण

१. माधवराज प्रभदेव बने माधवेंद्र स्वामी १६५९-१७६३ सन
२. बलवंतराव (भतीजा) बने बलवेंद्र स्वामी १७००-६३ शहीद
३. सदाशिवराव (भतीजा) बने जनार्दन स्वामी १७२९-८५ शहीद
४. सखाराम (भतीजा) बने चैतन्य स्वामी १७५९-१८६०
५. रामहरी (भतीजा) बने हरीहर स्वामी १७९२-१८१८
६. रामचन्द्र तात्या टोपे बने गोविन्द स्वामी १८१४-१९२०
७. सखाराम (तात्या का पुत्र) बने सत्यानन्द स्वामी १८३९-१९४०
८. गोविन्द (तात्या टोपे का पौत्र) बने चिन्मय स्वामी १८६३-१९६४
९. बलवंत (भतीजा) बने कैवल्य स्वामी १८८१-१९८१
१०. बलभीम (भतीजा) बने बलभिमानन्द स्वामी १९०१-२००३
११. त्रिभूवन (भतीजा) स्वामी सांख्यायन बने १९४३-वर्तमान

तात्या टोपे तथा उनका पुत्र गृहस्थाश्रम से संन्यासी बने थे। तात्या टोपे के हमशक्लों को अंग्रेजों ने फासी दी थी तात्या टोपे स्वामी गोविन्द परमहंस नाम धारण कर खान्देश में सोनगिरी में पीर खठूठशाह नाम धारण कर के रहते थे, इनके कुल का वर्तमान संन्यासी स्वामी उमांशकर सांख्यायन जी वर्तमान में वैदिक धर्म-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। ●

आप्त - वे ही आप्त जन हैं, जो अपने आत्मा के तुल्य अन्यों का भी सुख चाहते हैं। उन्हीं के संग से विद्या की प्राप्ति, अविद्या की हानि, धन का लाभ तथा दरिद्रता का नाश होता है। यजु. २९.३७

thearyasamaj.org

राष्ट्र संत साांई बाबा

-स्वामी उमाशंकर सांख्यायन
आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान आर्यावर्त, शैलगी
सोलापुर (महा.), चलभाष - ०८०५५४४५८४७

विद्याज्योति तिर्थ जगद्गुरू प. पू. स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज जी की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने १८५६ में काशी नगरी में २१५० राजाओं के सर्वसहमती से आजाद हिंद सरकार की स्थापना संवत १९१३ में की थी।

आजाद हिन्द सरकार का उपसंरक्षण विभाग प्रमुख मंत्री रहे जगदीशपुर नरेश राजा कुँवरसिंह जी शेराघाटी बिहार में १८५८ की लड़ाई में दारूण परभव होने पर वहाँ से पलायन कर भूमिगत हुए थे।

स्वामी पूर्णानन्द जी के मंतव्य के अनुसार वानप्रस्थ लेकर राजा कुँवरसिंह जी ने सांई नाम धारणकर श्वेत वस्त्र में ही अपने साठव्य साल में शिरड़ी पहुँचे थे।

सांई बाबा के भक्तों ने जो क्रांतिकारी सहकारी थे उन्होंने सांई को बेनामी माँ-बाप की औलाद होने की, मुसलमान होने की बात फैलाकर अंग्रेजी सरकार की वक्र दृष्टि से उन्हें बचाया।

योग साधना में लिप्त रहने वाले सांई जी सार्वजनिक स्थानों पर पागलपन जैसा व्यवहार कर तथा पाखंड का सहारा लेकर कुछ क्रियाकलाप करते रहे कि किसी को संदेह न हो कि वे कोई राज नेता है।

आपने साधना के बल कुछ सिद्धियाँ प्राप्त कर कुछ चमत्कार भी किये इससे अंग्रेजों के वक्र दृष्टि से बचते रहे।

आजाद हिंद के सम्राट ब्रह्मवर्त नरेश धोण्डोपंत नाना साहब पेशवा जी काजाराम मंदिर नाशीक में तथा सेनाध्यक्ष तात्या टोपे जी सोनगिरी दुर्ग खान्देश में साधु बनकर रह रहे थे उनका शिरडी के सांई बाबा से सीधा सम्पर्क रहता था। इनके बीच में संदेश वाहकों का आवागमन चला करता था।

सांई बाबा जब-जब शिरडी से गायब रहते थे तब-तब वे अपने संबंधित क्रांति नायकों से मिलने के लिए जाते थे।

सांई बाबा न तो मुसलमान थे न तो हिन्दू थे वे प्रखर राष्ट्र भक्त ईश्वर उपासक आर्य थे।

सांई बाबा के नाम से राजनैतिक, सामाजिक द्वेष फैलाना दु:खद है जो कुछ किया गया उनके द्वारा वह पाखंड या चमत्कार अंग्रेजों से बचने के लिये था।

सांई बाबा के पंच भौतिक शरीर का पुत्र युवराज अमरसिंह जी ब्रिटीश सेनानी जनरल निल के हाथों शहीद हुए थे इनकी धर्मपत्नी युवराज्ञी कनिका देवी जी ने मरते दम तक जगदीशपुर का यद्ध लड़ा था।

सांई भक्त सांई के स्वरूप को जाने तथा सांई का राजनीतिकरण न करे। सांई हमारे लिए सम्माननीय है, उन्हें राष्ट्र संत के रूप में देखें।

अनोखा अविश्वसनीय सच

सांई बाबा के विषय में अभी तक जो जानकारियाँ सामने आई थीं उनके अनुसार वे एक फकीर थे किंतु सांई बाबा को राष्ट्र संत बताते हुए जो जानकारी स्वामी सांख्यायन जी ने भेजी है वह अविश्वसनीय होते हुए भी उस पर विश्वास नहीं करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि स्वामी जी आर्य संस्कृति प्रतिष्ठान के संस्थापक होकर पेशवा कुल वंश से सम्बन्ध रखते हैं तथा महाराष्ट्र के इतिहास की आपको अत्यधिक गहन जानकारी है।

परतंत्रता के काल में अनेकों ऐसी महान् विभूतियाँ हुई हैं जिन्होंने प्राणों के संकट के कारण अपना जीवन या तो अज्ञातवास में रहकर व्यतित किया है या भूमिगत रूप से सक्रिय रहकर विधर्मियों के विरूद्ध गुप-चुप कार्य किया है। अनेकों ऐसे भी महान् व्यक्ति हुए हैं जो विधर्मियों तथा अपनों के षड्यंत्र के शिकार होकर अज्ञातवास में रहे हैं तथा उनके विषय में झूठा दोषारोपण कर इतिहास में असत्य स्थापित कर दिया गया। आज श्री कृष्ण जी का उदाहरण हमारे सामने है उन्हें योगीराज के स्थान पर भोगीराज बना दिया गया।

प्राप्त जानकारी अगर सत्य है तो भी उन्हें ईश्वर का अवतार मानना अथवा उनकी मूर्ति बनाकर पूजा करना वैदिक सिद्धांतों के विरूद्ध है। हाँ अगर राष्ट्र के लिये उनका कोई योगदान है तो वे अवश्य यथोचित सम्मान के अधिकारी है।

उपलब्ध तथ्यों के आधार पर शोध किया जाकर सत्य पक्ष से अवगत करवाना आर्य विद्वानों का कर्तव्य है क्योंकि उनके ऋषि संदेश देते हैं **''सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।''** **-सम्पादक**

आर्ष-ग्रन्थ

महर्षि लोगों का आशय जहाँ तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मन्शा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सकें। जैसे पहाड़ का खोदना, कौड़ी का लाभ होना और आर्षग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसे एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियों का पाना। -सत्यार्थप्रकाश, तृतीयसमुल्लास

thearyasamaj.org

अधर्म के अन्धकार को धर्म के प्रकाश से प्रज्वलित करना

- मृदुला अग्रवाल
१९ सी, सरत बोस रोड, कोलकाता-२०
चलभाष-०९८३६८४१०५१

ऋग्वेद में '**सरमा**' (योगी-आत्मा) का '**पणयः**' (सांसारिक धन के लोभीजन) के प्रलोभनों को त्यागकर धर्म के मार्ग पर स्वयं को अडिग रखना।

इन्द्र की गौओं को (गौओं का अर्थ यहाँ 'ज्ञान' है या आत्मा की दिव्य वृत्तियाँ) पणियों ने (सांसारिक माया एवं लोभ-मोह के आवरणों से ग्रस्त लोग) चुराकर अज्ञानरूपी अन्धकार में कैद कर लिया। इन्द्र ने अपनी कुतिया '**सरमा**' अर्थात् योगी की अन्तरात्मा को गौओं का पता लगाने के लिए भेजा। इन्द्र द्वारा प्रेषित सरमा ने गौओं का पता लगाया एवं पणियों को इन्द्र का संदेश सुनाने की चेष्टा की। परन्तु **संसार के लोभी-धनियों को अपने पाप-युक्त शरीर से सिर्फ और सिर्फ अनुचित मार्ग ही दिखता है। वे कामभोगोपलिप्त धनिक तो सांसारिक सम्पत्तियों की मोह-रूपी नदियों के जल में इतनी गम्भीरता से डूबे हुए हैं कि उन्हें अपनी आसुरी वृत्तियों का, नास्तिकता का, परलोक के अच्छे-बुरे मार्गों का, अपने इस जन्म एवं अगले जन्म के सुख वा दु:ख का कुछ भी बुरा या गलत दृष्टिगोचर नहीं होता। वे 'सरमारूपी वेदवाणी'** के वक्तव्य को व्यर्थ समझकर संसारी वैभव वा धन की रक्षा करने को ही उत्सुक हैं। वे भूल गये हैं कि ईश्वर किसी भी अधर्मी, अनियमित आसुरी वृत्ति वाले इन्सान का साथ नहीं देता।

कुछ समय के लिये इस संसारी लोभ से ग्रस्त पणियों को भी ईश्वरीय ज्ञान जैसे प्राप्त होता है। वे इन्द्रदूती '**सरमा**' से पूछने की कोशिश तो करते हैं कि इन्द्र क्या है? उसका दर्शन-विज्ञान क्या है? अगर हम उसे मित्र बनाते हैं या उसके निर्देश पर चलते हैं तो क्या वह हमारी गौओं का रक्षक बन जावेगा? परन्तु यह सब व्यर्थ ही पूछते हैं, क्योंकि कुछ समय पश्चात् ही देवदूती सरमा को धन-वैभव का प्रलोभन देकर उसे अपनी बहिन बनाना चाहते हैं। '**सरमा**'-**अन्तरात्मा की आवाज लोभी-कामियों को रोकती है तब उसे भी बाहरी विषयों के प्रलोभन थोड़े वक्त के लिए अपनी ओर खींचते हैं।** परन्तु वह प्रलोभनों से आकर्षित नहीं होती। वरंच वह अपने विवेक के द्वारा सही और गलत का विचार कर सही का साथ देती है, क्योंकि अंगिरा ऋषि और इन्द्र आदि की योगयुक्त तपोमय तेजस्विनी शक्तियाँ उस पर आच्छादित हैं। उनके प्रति कर्तव्य परायण '**सरमा**' इस पापरूपी या पाप से युक्त शरीर में प्रवेश करती है एवं अपनी हितकारिणी शक्ति से इस संसार रूपी लोभ-मोह से ग्रस्त नदी के जल को पार करने में समर्थ एवं सक्षम होती है। वह अपने कर्तव्य पर, धर्म के मार्ग पर अडिग रहती है। उन धन-लोभियों के प्रलोभनों को ठुकरा देती है। उनकी बहिन बनने से भी इन्कार कर देती है।

धन-लोभी तो सरमा से यहाँ तक भी बोले कि वे भोग से त्याग, इन्द्रियों का संयम, असत्य के पथ से युद्ध करके सत्य-पथ की ओर अग्रसर होना ही नहीं चाहते, क्योंकि सत्य-पथ का अनुसरण करने के लिये 'मन' पर संयम करना अत्यन्त आवश्यक है। श्री कृष्ण ने भगवद्-गीता में जिस प्रकार कहा कि:-

**''असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।''** -गीता, ६.35

:**अर्थात्**-हे महाबाहो, हे कौन्तेय! मन पर अंकुश रखना तो तीव्र वैराग्य के अभ्यास से ही हो सकता है। नि:संदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है। इसीलिये, हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! इस स्थिति के लिये बारम्बार यत्न करके मन को अवश्य ही वश में करना चाहिये।

सरमा ने भी इसी प्रकार पणियों की धन-लोलुपता को ईश्वरीय ज्ञान से नष्ट किया। जिस प्रकार कठोपनिषद् में **''यम-नचिकेता संवाद''** में भी जब यम ने दो वरदान देने के पश्चात् तीसरे वरदान को देने में आनाकानी की एवं नचिकेता को विभिन्न प्रकार के सांसारिक प्रलोभनों से लुभाने की चेष्टा की, तब **नचिकेता ने भी सांसारिक धन-सम्पत्ति एवं पारलौकिक स्वर्ग के सुख को ठुकरा दिया। वह तो आत्म-साक्षात्कार कर जन्म-मृत्यु के बन्धन से छुटकारा पाना चाहता था।** यम से उसने यही प्रार्थना की एवं अमृतपद की प्राप्ति भी की। यही तीसरा वरदान कठोपनिषद् का सार एवं ब्रह्मज्ञान की कुंजी है।

ठीक इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान से प्रभावित एक नि:स्पृह योगी की आत्मा '**सरमा**' ने पणियों की आसुरी वृत्तियों का विनाश कर अपनी देववाणी से उनकी दिव्य-वृत्तियों का उद्धार किया। अपनी तेजस्विनी शक्तियों के द्वारा उन्हें सत्य-पथ की ओर अग्रसर किया। अधर्म को छोड़कर धर्म के उज्जवल मार्ग की ओर प्रशस्त किया। सरमा ने पणियों के दिये हुए प्रलोभनों का त्याग किया, क्योंकि इन्द्र का सच्चा दूत अपने धर्म से नहीं डिगता। यह रोचक काव्य-वृत्ति से भरा संवाद ऋग्वेद के आध्यात्मिक बल को एवं ईश्वरीय ज्ञान को और भी सशक्त बना देता है।

ऋग्वेद, मण्डल-१०, सू.-१०८, म.-१ से ११ तक से उद्धृत है। ●

पृष्ठ क्र. ०६ का शेष **सम्पादकीय........**

है। एक शास्त्र वचन है-

उत्तमो ब्रह्म सद्भावो ध्यानभावस्तु मध्यमः सतुर्तिजपोऽधमो भावो बहिः पूजाऽधमाधमा।

अर्थात् बाह्यपूजा या मूर्तिपूजा सब से नीचे की अवस्था है। आगे बढ़ने, ऊँचा उठने का प्रयास करते समय मानसिक प्रार्थना की दूसरी अवस्था है। सबसे उच्च अवस्था वह है जब परमेश्वर का साक्षात्कार हो जाए।

वेद भी कहते हैं **न तस्य प्रतिमा अस्ति** अर्थात् ईश्वर तेरी कोई प्रतिमा नहीं है। अध्यात्म विज्ञान में महान् वैज्ञानिक महर्षि पतंजलि ईश्वर को बड़ा स्पष्ट रीति से परिभाषित करते हैं। यह परिभाषा साधनों के लिए आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है, क्योंकि यह ऐसा शब्द है, ऐसा सत्य है जिसके बारे में ज्यादातर लोग भ्रमित हैं।

शास्त्र, पुराण, धर्म, मजहब सबने मिलकर ईश्वर की अनेक धारणाएँ गढ़ी हैं कोई तो उसे सातवें आसमान में खोजता है तो कोई मंदिरों पूजाग्रहों में योगेश्वर पतंजलि ने सभी तरह का सत्य निराकरण किया है। वे कहते हैं कि पहले तो ईश्वर को किसी व्यक्तित्व में न बांधो। वह सभी बंधनों से मुक्त हैं। ●

thearyasamaj.org

१७ सितम्बर हैदराबाद मुक्तिदिवस के अवसर पर राष्ट्रनिष्ठ जाने हैदराबाद रियासत के विलय में आर्य समाज और सरदार वल्लभ भाई पटेल का योगदान

जनता के संघर्ष से हैदराबाद मुक्त हुआ है

- चंद्रशेखर लोखण्डे
सीताराम नगर, लातूर (महा.)
चलभाष-९९२२२५५५९७

मराठवाड़ा के औरंगाबाद शहर में ''तामिरे मिल्लत'' संस्था के **कुछं पदाधिकारियों ने अपने देशद्रोही वक्तव्य को उगलते हुए कहा कि** मीर उस्मान अली ७वे निजाम के साथ **'जैसे थे'** करार तय होने के पश्चात् भी सरदार वल्लभ भाई पटेल ने धोखाधड़ी और जबरदस्ती से पुलिस एक्शन के नाम पर सेना भेजकर हैदराबाद रियासत पर कब्जा कर लिया। यह निजाम मीर अस्मान अली के साथ धोखा ही तो था। यह मुक्ति संग्राम काहे का ? यह तो धोखाधड़ी थी, इतिहास को तोड़ मरोड़कर पेश किया जा रहा है, स्कूलों में गलत ढंग से बच्चों को इतिहास पढ़ाया जा रहा है। इसलिए १७ सितम्बर यह हैदराबाद मुक्ति संग्राम दिन के नाम से नहीं मनाया जाना चाहिए। **यह विषैले वक्तव्य हैं ''तामिरे मिल्लत'' के संयोजक डॉ. चिरंजीवी कोल्लूरी, डॉ. एन. पांडुरंग रेड्डी और जियाउद्दीन नय्यर के।**

''ऑल इंडिया मजलिस ए-तामिरे मिल्लत'' यह हैदराबाद में सन् १९५० में स्थापित संस्था निजाम और ''आजाद हैदराबाद'' की तरफ दारी करने वाली संस्था है। **आज हैदराबाद को ६५ वर्ष भारत में शामिल होने के पश्चात् भी यह विद्रोही बेसुरा राग अलाप रही है। उक्त तीनों पदाधिकारी अपने प्रेस वक्तव्य में कहते हैं कि ''१९४७ में लगभग सारी रियासतें हिन्दुस्थान में समाविष्ट हो गयी लेकिन हैदराबाद रियासत पर भारत सरकार ने शामिल होने के लिए सैनिकी दबाव डाला।** निजाम भारत में शामिल नहीं होना चाहता था, इसलिए उसने तत्कालीन सरकार से जैसे थे करार किया। इसका मतलब यह था कि एक वर्ष तक ज्यों कि त्यों परिस्थिती रखी जाय। लेकिन **१२ सितंबर १९४८ को प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के विदेश जाने के बाद सरदार पटेल ने हैदराबाद के चारों ओर से रियासत में सेना घुसवा दी। यह निजाम और हैदराबाद के साथ धोखा था।'' इन तीनों सदस्यों को जान लेना चाहिए कि जब जूनागढ़, भोपाल और कश्मीर जैसी मुस्लिम बहुल रियासतें भारत में शामिल कर ली गयी थीं, तो क्या कारण था कि हैदराबाद रियासत इससे अछूती रह जाय। वैसे लॉर्ड माऊंटबेटन के निर्देशानुसार और बहुसंख्य जनता के मतानुसार वह रियासत भारतवर्ष या पाकिस्तान में शामिल हो सकती थी,** जब कि भौगोलिक स्थिति और जनमत पाकिस्तान के खिलाफ थे। ८९ प्रतिशत हैदराबाद की जनता हिन्दुस्थान में शामिल होने की इच्छुक थी, फिर ''तामिरे मिल्लत'' के पदाधिकारी यह कैसे कह सकते हैं कि हैदराबाद आजाद रहना चाहता था। राज्य जमीन के टुकड़े को नहीं वहाँ की जनता और उसकी संस्कृति को कहते हैं।

हैदराबाद की ८९ प्रतिशत हिन्दू जनता सन् १९३७ से सातवें निजाम के खिलाफ जी जान से संघर्ष कर रही थी। आर्यसत्याग्रह के एक वर्ष पूर्व से अर्थात् १९३७ से १९३९ तक लगभग ४१ आर्यों की हत्याएँ हो चुकी थीं, स्टेट काँग्रेस अपने तरीके से संघर्ष कर रही थी यहाँ तक कि निजाम के मजहब को मानने वाला शोएब उल्लाखाँ हैदराबाद को निजाम से निजात दिलाने के लिए १९४८ में शहीद हो गया। इसके बावजूद ये लोग कह रहे हैं कि सरदार पटेल ने हैदराबाद के साथ धोखा किया यह सरासर झूठ और देशद्रोह है। **इससे पूर्व तेलंगाना के मुख्यमंत्री की बेटी सांसद के. कविता ने भी इसी प्रकार के वक्तव्य देकर अपने आपको सुर्खियों में किया था।**

उनको भी उत्तर देते हुए मैंने कहा था कि-जब **२२५ वर्ष पूर्व अर्थात्, ई. सन् १३१० तक यह भाग वरमंगल (वरंगल) के काकतीय वंश के राजाओं का राज्य था।** उसके बाद १७२४ में आसाफजाही वंश और मध्य एशिया के समरकंद बुखारा जिसका पैत्रिक स्थान था उस निजाम उल्मुल्क मीर कमरूद्दीन चिन किलिच खान ने हैदराबाद पर अपनी सत्ता प्रस्थापित की। **सव्वा दो सौ साल हैदराबादी जनता को गुलाम बनाकर रखने से क्या हैदराबाद विदेशी आक्रान्ताओं का राज्य हो गया ?** यह तो हैदराबादी जनता और उनकी मातृभूमि के साथ अन्याय है।

निजाम **''जैसे थे''** करार के अनुसार चुप थोड़े ही बैठा था। **करार की आड़ में वह भारत के साथ संघर्ष के लिए अनेक षड्यंत्र रच रहा था। जैसे, बहुसंख्यक हिन्दुओं को बाहर खदेड़कर और बिहार उत्तरप्रदेश से मुस्लिम मुहाजिरों को बुलाकर रियासत को मुस्लिम बहुल बनाना, मुस्लिम बहुल बनाकर अन्य राष्ट्रों की सिफारिश से सर्वमत करवाना, रजाकारों को हिंदुओं पर जुल्म करने के लिए उकसाना, चकोस्लावाकिया से छुपे तौर पर ३० लाख पौण्ड के हथियार पाकिस्तान के रास्ते मंगवाना इत्यादि। यहाँ तक कि उसने सिडनी कॉटन द्वारा पाकिस्तान, गोवा के रास्ते करोड़ों के हथियार मंगवाये और रजाकारों (हिंस्र मुस्लम स्वयंसेवक) में बटवाये थे। ''जैसे थे''** करार द्वारा भारत सरकार ने निजाम को यथास्थिति बनाये रखने के लिए मोहलत दी थी इसका मतलब यह तो नहीं था कि उसका दुरूपयोग कर जनता और भारत सरकार से धोखाधड़ी करे।

''जैसे थे'' करार का उद्देश्य यह भी नहीं था कि हैदराबाद पूरी तरह से निजाम को सौंप दिया गया हो। उसका अर्थ यह था कि बातचीत और मेल मिलाप से हैदराबाद को भारत में शामिल करने का कोई रास्ता निकाला जाय। **पं. जवाहर लाल नेहरू ने कश्मीर के मामले में जो गलती की थी (राष्ट्र संघ में कश्मीर को ले जाकर) वह गलती गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल हैदराबाद के बारे में नहीं करना चाहते थे। इसलिए एक वर्ष के लिए ''जैसे थे'' करार दोनों की सहमती से किया गया था। उसका दुरूपयोग पहले निजाम ने किया जब यह सरदार पटेल को पता चला तो उन्होंने यह रास्ता अपनाया और रियासत हैदराबाद को १७ सितंबर १९४७ के पश्चात् १ वर्ष १ महीना, १ दिन के बाद निजाम के चंगुल से मुक्त करवाया।** ●

thearyasamaj.org

योग के साधकों को आश्वासन

-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता
चलभाष-९४३२३०१६०२

महर्षि पतंजलि ने अपने योगदर्शन में योग के आठ अंग बताये हैं – (१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान और (८) समाधि। उनमें प्रथम के चार यम, नियम, आसन और प्राणायाम बहिरंग योग कहलाते हैं। अन्त के चार प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अन्तरंग योग है।

यम पाँच प्रकार के होते हैं –

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।। योगदर्शन साधनपाद-३०

अर्थात् **(अहिंसा)** वैरत्याग, **(सत्य)** सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, **(अस्तेय)** अर्थात् मन, कर्म, वचन से चोरी त्याग, **(ब्रह्मचर्य)** अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम, **(अपरिग्रह)** अत्यन्त लोलुपता, स्वत्वाभिमानरहित होना, इन पाँच यमों का सेवन सदा करें।

नियम – ''शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।।''

योगदर्शन साधनपाद-३२

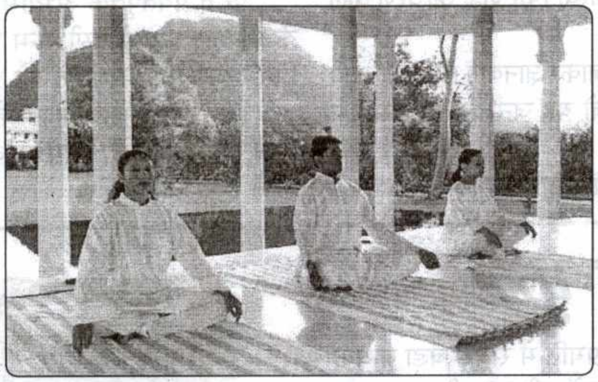

(शौच) अर्थात् स्नानादि से पवित्रता, **(सन्तोष)** सम्यक् प्रसन्न होकर निरूद्यम रहना संतोष नहीं, किन्तु पुरूषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि-लाभ में हर्ष वा शोक न करना, **(तपः)** अर्थात् कष्टसेवन से भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान, **(स्वाध्याय)** पढ़ना-पढ़ाना, **(ईश्वरप्रणिधान)** ईश्वर की भक्तिविशेष से आत्मा को अर्पित रखना, ये पाँच नियम कहाते हैं।

यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करें, किन्तु इन दोनों का सेवन किया करें। जो यमों का सेवन छोड़ के, केवल नियमों का सेवन करता है, वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है।

इस तथ्य के समर्थन में निम्नलिखित मनुस्मृति का श्लोक देखने योग्य है–

यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलमान् केवलान् बुधः।
यमान्पतत्यकुर्वाणो नियमान् केवलान् भजन्।। -मनु. ४/२०४

यम और नियम जीवन जीने के महत्वपूर्ण अंग हैं, इनके अभाव में योग की साधना असम्भव है। यहाँ एक और सच्चाई ध्यान में रखनी चाहिये कि सदाचारी गृहस्थ भी योग की साधना आराम से कर सकता है।

योग का तीसरा अंग है आसन। योगदर्शन का सूत्र है –

''स्थिरसुखमासनम्'' योगसाधना के लिये लम्बे समय तक स्थिर होकर सुखपूर्वक बैठना। योगसाधना के लिये मुख्य रूप से सिद्धासन, पद्मासन व सुखासन बताये जाते हैं। आसन के सम्बन्ध में मुख्य बात यह है कि दोनों पुटठे समान रूप से आसन पर स्थित हों, कमर में जहाँ त्रिकास्थि हैं वहाँ से मेरूदण्ड गर्दन तक सीधा रहे। इससे इडा, पिंगला ओर सुषुम्णा तीनों नाड़ियाँ खुली रहें और प्राणों का आवागमन होता रहे। साधना के लिये इतना ही आसन पर्याप्त है।

योग का चतुर्थ अंग है प्राणायाम। प्राणायाम में प्राणों को श्वास से दोनों नथुनों से बाहर निकालकर रोकना वायु और मूल को संकुचित करना लाभकारी है। अधिक देर बाह्यवृत्ति अर्थात् बाहर रोकना उत्तम है। स्वाभाविक रूप से श्वास अन्दर लेकर थोड़ा रोककर फिर बाहर रोकना मूल पायु का संकोच करना लाभकारी है। इससे इडा, पिंगला और सुषुम्णा तीनों खुलकर सक्रिय हो जाती हैं और साधना में सहयोग मिलता है।

यम, नियम, आसन और प्राणायाम ये चारों बहिरंग हैं। प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये चारों अन्तरंग योग हैं। प्रत्याहार का अर्थ है कि ज्ञान इन्द्रियों को बाह्य विषयों से अन्तर्मुखी करके परमेश्वर में ध्यान लगाना। भगवान ने आँख, कान, नाक आदि ज्ञान इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है, इसीलिये वे बाहर के विषयों को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। उन्हें अन्तर्मुखी करके परमेश्वर के गुण, चिन्तन में लगाना प्रत्याहार है, इसीलिये योगसाधना के समय आँखें अधखुली बन्द कर लेते हैं। कई लोग कानों में रूई का फूहा भी लगा लेते हैं। इससे बाहर के दृश्य, शब्द आदि नहीं सुनायी पड़ते। अन्तरंग योग का द्वितीय साधन ''धारणा'' है। धारणा की परिभाषा है – **''देशबन्धश्चित्तस्य धारणा।''** चित्त को किसी एक स्थान पर बांध देना। कई लोग दीपक की लौ पर भी धारणा करते हैं। किन्तु परमेश्वर की धारणा के लिये हृदय पुण्डरीक-दोनों छातियों के बीच में खाली जगह पर, नासिकाग्र दोनों भौहों के बीच में आज्ञा चक्र पर (जहाँ पिट्यूटरी ग्लैण्ड्स) और सिर में सहस्त्रार (जहाँ खोपड़ी में पिलपिला है) उत्तम स्थान है।

इसके पश्चात् ध्यान का क्रम आता है। योगदर्शन में कहा है– **''तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्''** धारणा को एकरस बनाये रखना, कोई विच्छेद न होने देना ध्यान है। ध्यान में परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करते रहना उचित है। इसका पूर्ण अभ्यास हो जाने पर समाधि लग जाती है। समाधि में सब कुछ भूल जाता है। ध्यान करने वाला अपने को भूल जाता है, मैं ध्यान कर रहा हूँ यह भी भूल जाता है। केवल परमेश्वर का चिन्तन मात्र ही ध्यान में रह जाता है। समाधि भी सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात दो तरह की होती है। इस समय समाधि के इन दोनों भेदों को अब छोड़ रहे हैं, यह साधना का ऊँचा विषय है। योग साधना में समाधि तक पहुँचना अनेक जन्मों में सिद्ध हो पाता है।

अर्जुन ने श्री कृष्ण से गीता में पूछा है यदि कोई मनुष्य योग साधना करता-करता भटक जाये तो उसकी क्या गति होती है –

''अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति।।'' गीता. ६/३७

अर्जुन बोले– हे श्री कृष्ण! जो योग में श्रद्धा रखनेवाला है किन्तु संयमी नहीं है, इस कारण जिसका मन अन्तकाल में योग से विचलित हो

thearyasamaj.org

गया है, ऐसा साधक योग की सिद्धि को अर्थात् भगवत्साक्षात्कार को न प्राप्त होकर किस गति को प्राप्त होता है?

श्री कृष्ण जी उत्तर देते हैं कि योग का मार्ग कल्याण का मार्ग है। योग के मार्ग में चलने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। गीता में श्री कृष्ण के आश्वासन ध्यान देने योग्य है –

''पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति।।'' गीता. ६/४०

श्री कृष्ण बोले – हे पार्थ! उस पुरुष का न तो इस लोक में नाश होता है और न परलोक में ही क्योंकि हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिये अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिये कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।

''प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते।।'' गीता. ६/४१

योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोकों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त होकर, उनमें बहुत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण वाले श्रीमान् पुरुषों के घर में जन्म लेता है।

अथवा वैराग्यवान पुरुष उन लोकों में न जाकर ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म लेता है। परन्तु इस प्रकार का जो यह जन्म है, सो संसार में निःसंदेह अत्यन्त दुर्लभ है।

''तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरूनन्दन।।'' गीता. ६/४३

वहाँ उस पहले शरीर में संग्रह किये हुए बुद्धि-संयोग को अर्थात् समबुद्धिरूप योग के संस्कारों को अनायास ही प्राप्त हो जाता है और हे कुरूनन्दन! उसके प्रभाव से वह फिर परमात्मा की प्रतिरूप सिद्धि के लिये पहले से भी बढ़कर प्रयत्न करता है।

''पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।।'' गीता. ६/४४

वह श्रीमानों के घर में जन्म लेने वाला योगभ्रष्ट पराधीन हुआ भी उस पहले के अभ्यास से ही निःसंदेह भगवान् की ओर आकर्षित किया जाता है, तथा समबुद्धिरूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को उल्लंघन कर जाता है।

''प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धोकल्बिषः।
अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।।'' गीता. ६/४५

परन्तु प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने वाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर सम्पूर्ण पापों से रहित हो फिर तत्काल ही परमगति को प्राप्त हो जाता है।

इस सबका यही आशय है कि मनुष्य को जहाँ तक सुयोग सुविधा मिले, शरीर साथ दे, परमेश्वर के साक्षात्कार के लिये योगसाधना अवश्य करते रहना चाहिये। ●

आपसी फूट

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२, जी.एच.-५३, सेक्टर-२०, पंचकूला (हरि.)
चलभाष-०९४६७६०८६८६

आपसी फूट का राजरोग हमारे देश की प्रगति में सबसे बड़ा बाधक और वर्षों तक पहले मुगलों और फिर अंग्रेजों की गुलामी का कारण रहा है। इस कड़वे यथार्थ से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। कैसे आपस की फूट से रावण की सोने की लंका का सत्यानाश हो गया। पृथ्वीराज चौहान से जयचंद का द्वेष भाव और आपसी फूट से भारत वर्षों तक पराधीन रहा। इसके बाद छोटे-छोटे रजवाड़ों में बंटे देश पर फूट डालो राज करो की नीति पर चलकर व्यापार करने आए अंग्रेजों ने शासन किया। सोने की चिड़िया कहलाने वाले इस देश का दोहन करके इसे दोनों हाथों से भरपूर लूटा। जब भी दो भाई आपस में लड़ते हैं तो तीसरा पंच बनकर उसका फायदा उठाता है। **बिल्लियों की लड़ाई में बंदर का न्याय।**

अथर्ववेद में वेद आदेश देते हैं **''मिथो विघ्नाना उपयन्तु मृत्युम्''** अथर्व. ६.३२.३ अर्थात् परस्पर लड़ने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। वेद के निर्देश और इतिहास की सीख के बावजूद हमारे देश जाति को लगा यह आपसी फूट का राजरोग जाने का नाम ही नहीं ले रहा। किसी भी बीमारी का इलाज करने के लिए उसके कारणों को जानना अत्यंत आवश्यक है। पूरे विश्व को मार्ग दिखाकर नेतृत्व करने की क्षमता रखने वाला हमारा देश जैसे इस आपसी फूट का शिकार होकर स्वयं ही पथ से भटक चुका है और शायद इस तथाकथित विकास की चकाचौंध में सम्मोहित पाश्चात्य अंधानुकरण करता हुआ अपनी दशा और दिशा खोकर अपने लक्ष्य से दूर होता जा रहा है। इस देश की सर्वश्रेष्ठ पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति का पोषक आर्य समाज भी अपने श्रेष्ठतम सत्य सिद्धांतों के बावजूद आपसी फूट के राजरोग का शिकार हो चुका है। इसके कारणों पर जब हम विचार करते हैं तो केवल अधिकारियों की पद लोलुपता, लोकेष्णा की भावना और येन केन प्रकारेण अपने-अपने पद पर चिपके रहने की इच्छा ही इस आपसी फूट का कारण है। लगभग हर आर्य समाज में लेकर प्रत्येक राज्य की सभाओं, युवा संगठनों, राष्ट्रीय वा सार्वदेशिक सभाओं की यही स्थिति है। इनकी अधिकतर शक्ति वेद प्रचार, आर्य सिद्धांतों के प्रसार परोपकार के कार्यों में ना लगा कर अपने-अपने संगठनों में झगड़ों, अदालती मामलों और एक दूसरे की टांग खिंचाई में लग रही है। जितना खर्च, ऊर्जा कोर्ट केसों में हो रहा है उतना यदि यह सभाएँ वेद प्रचार में लगा दें तो **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का देव दयानन्द का संकल्प पूरा हो सकता है।

हम सभी यदि स्वयं को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ कहते हैं महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के सिद्धांतों को मानते हुए दयानन्दी परिवार के सदस्य हैं तो हमारा दायित्व बनता है कि इन संबंधों की गरिमा को बना कर रखें। लेकिन बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अधिकांश आर्य समाजों में जो जिस पद पर एक बार चिपक गया बस उसके बाद वह सारी ऊर्जा येन केन प्रकारेण उस पद पर बने रहने के लिए तथा अन्य उसकी टांग खींचकर उतारने के लिए लगा देते हैं। अब तो यदि किसी आर्य को एक शहर से दूसरे शहर में जाकर रहना पड़े तो नए शहर में उसको कोई स्वीकार करने के लिए भी जल्दी तैयार नहीं होता। आपसी फूट के कारण हम केकड़ा संस्कृति के अनुगामी हो चुके हैं और इतने

शेष पृष्ठ क्र. ३४ पर

thearyasamaj.org

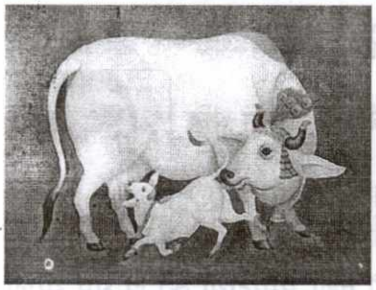

संदेश गोकरुणानिधि से

गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल तथा पशु सात सौ वर्ष के पूर्व मिलते थे उतना दूध, घी और बैल आदि पशु इस समय दशगुणा मूल्य से नहीं मिल सकते, क्योंकि सात सौ वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़ मांस तक भी नहीं छोड़ते तो **(नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम्)** जब कारण का नाश कर दें तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे ? हे मांसाहारी ! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ? हे परमेश्वर ! तु क्यों न इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं दया नहीं करता ? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या उनके लिए तेरी राज्यसभा बन्द हो गई है ? क्यों उनकी पीड़ा, छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता, क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया का प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता ? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें। **- दयानन्द सरस्वती**

आर्य समाज की अखिल भारतीय राजार्य सभा द्वारा प्रधानमंत्री को ज्ञापन

सेवा में, सप्रेम सादर नमस्ते!

'प्रधानमंत्री श्री दामोदर दास नरेन्द्र मोदी जी'

विषय :- गाय रक्षा व राष्ट्रभाषा हिन्दी की रक्षा के सम्बन्ध में।

मान्यवर, आपको बहुत हर्ष व आशा के साथ निवेदित किया जाता है कि हम भारतीयों की लम्बी प्रतिक्षा, तप और निराशा के बाद गाय व राष्ट्रभाषा हिन्दी भक्त प्रधानमंत्री की देश को प्राप्ति हुई है। श्री कृष्ण जैसे, त्यागी, तपस्वी कर्मयोगी प्रधानमंत्री को पाकर हर्ष और आशा का ठिकाना नहीं है। अब वो दिन आ गया है जिस दिन के लिए भारतमाता, गौमाता, मातृभाषा हिन्दी व गाय भक्त आदि प्रतिक्षा में थी। परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि आप को कर्तव्यपरायण का सामर्थ्य प्रदान करें। हमको पूर्ण आशा और विश्वास है कि परमात्मा हमारी ये प्रार्थना अवश्य सुनेंगे आपसे करबद्ध विनम्र निवेदन है कि आप भारत व विश्व के उपकार के लिए उचित व अनिवार्य मांगों को शीघ्रता से पूर्ण करने का कष्ट कर अनुग्रहित करें। जो अग्रलिखित है।

१. गायमाता को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।

२. गाय के दूध की तरह गाय के घी, पनीर, खोवादि का मानक भैंस के घी, पनीर, खोवादि से अलग बनाया जाये। आज की तारीख में गाय का घी, पनीर, खोवादि बेचना कानूनन अपराध है। क्योंकि मानक भैंस के घी, पनीरादि के हैं। गाय के घी, पनीरादि के नहीं।

३. मांस के निर्यात को पूर्णत: प्रतिबन्धित किया जाये। जिससे बहुत बड़ा आर्थिक लाभ भारत को होगा। आज मांस के लिए बिन ब्यायी बछियाओं व कटियाओं को काट दिया जाता है। यदि उनको नहीं काटा जाये तो वे १५-२० बार ब्याएंगी जिससे इतने पशुओं की वृद्धि होगी। मरना सबको है, मांस, चमड़ा आदि अपने आप मरने वाले पशुओं से भी प्राप्त होगा। इसलिए उचित है कि मांस के लिए पशुओं को न मारा जाये। मरे हुए पशुओं का मांस मांसाहारी खाएँ।

४. राष्ट्र का समस्त कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में और क्षेत्र का समस्त कार्य क्षेत्रीय भाषा में किया जाए।

५. मेडिकल, इंजीनियर, वकालत व प्रबन्धादि की सभी पुस्तकें व हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के निर्णय राष्ट्रभाषा हिन्दी में करवायें जाये।

आपसे गौरवान्वित आशान्वित समस्त आर्य समाज।

निवेदक - महेन्द्र सिंह आय
मंत्री-अखिल भारतीय राजार्य सभा

अध्यात्म में सन्तोष है, परन्तु उन्नति के प्रति अनुत्साह भी है, दूसरी ओर विज्ञान में उन्नति के लिए भरपूर उत्साह है, परन्तु असन्तोष का दोष भी है, जीवन में दोनों (अध्यात्म और विज्ञान) की आवश्यकता है, सब जानते हैं कि पक्षी को दोनों पंख उड़ने के लिए अनिवार्य हैं। - चिन्तन तनया

thearyasamaj.org

विश्व शांति का स्रोत वैदिक धर्म

-साध्वी डॉ. उत्तमा यति
दिव्य वैदिक ज्योति आश्रम, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर (राज.)
चलभाष-०९८२८७०३९९३

इस प्राणी जगत् में यदि कोई सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोत्कृष्ट प्राणी है तो वह मानव है। यह मानव जीवन ही सर्व शक्तियों का केन्द्र तथा सर्व सुखों का घर है। हमारी आत्मा मानव जीवन को पाकर ही उन्नति की चरम सीमा तथा जीवन के लक्ष्य (मोक्ष) तक को भी पा सकता है। आत्मा के अन्दर जो दैवी शक्तियाँ हैं। उनका पूर्ण विकास इसी मानव जीवन में ही होना सम्भव है, किन्तु मानवरूपी कल्प वृक्ष विकसित, पुष्पित तथा फलित तभी हो सकता है, जब कि इसे धर्मरूपी शीतल जल से बार-बार सिंचन किया जाये।

बिना धर्म के यह सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन भी नि:सार तथा नीरस है। आत्माहीन प्राणी मुर्दा के समान है। उसी प्रकार धर्महीन जीवन भी मुर्दा के समान है। सुख, शांति को प्राप्त करना तथा विश्व में सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित करना ही मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, किन्तु **मनुष्य अपने इस जीवन के लक्ष्य को भी तभी प्राप्त कर सकता है जब कि वह धर्म का आश्रय ले, बिना धर्म के न तो वह मनुष्य स्वयं सुखी बन सकता है और न विश्व को सुखमय बना सकता है। संसार के क्षणिक पदार्थ में लिप्त न होकर उनका त्याग पूर्वक उपभोग करना ही सुख और शांति का मूल मंत्र है।** विलासमय जीवन कभी सुख और शांति का उपार्जन नहीं कर सकता। जिसका जीवन स्वयमेव सुखमय और शांत नहीं भला वह विश्व को सुख और शांति का संदेश कैसे सुना सकता है।

विश्व में धर्म ही एक वस्तु है, जो मानव जीवन को विलासिता की दासता से छुड़ाकर संसार के पदार्थों का अनासक्ति अर्थात् त्याग पूर्वक उपभोग करना सिखाता है। अत: धर्म ही सुख और शांति का मूलमंत्र है। ऋषि दयानन्द के कथनानुसार सच्चा धर्म वह है, जिसका कोई विरोधी नहीं। इसलिए आदिकाल से लेकर आर्यावर्त तक जितने भी ऋषि, मुनी,संत,महात्मा और सुधारक हुये हैं, उन्होनें धर्म का आश्रय लेकर ही धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय क्रांतियाँ की हैं। धर्म ही उनके सुधार का मूलमंत्र रहा है, किन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि ऐसे परम पुनीत परजन हिताय धर्म से आज समाज उदासीन होता जा रहा है। न केवल उदासीन ही परन्तु धर्म और ईश्वर को घृणा की दृष्टि से देखने लगा है। प्रश्न उठता है कि आज धर्म के नाम पर इतनी भ्रांति तथा उदासिनता क्यों? मेरे विचार में आज धर्म विमुखता के दो ही मुख्य कारण है, एक तो वर्तमान भोगवाद तथा दूसरा धर्म के वास्तविक तथा यर्थाथ का न समझना।

वर्तमान युग भोग तथा विलासिता का युग है। खाओ पियो तथा मौज उड़ाओं यही सभ्य जगत् का मुख्य ध्येय बन गया है। भले ही इस कार्यपूर्ति के लिए दूसरों का गला भी क्यों ना काटना पड़े। जो मानव जीवन किसी महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें विधाता से मिला है आज वही मानव जीवन का उद्देश्य केवल नानाविध भोगों का भोग करना तथा विलासितामय जीवन व्यतीत करना ही रह गया है। यही कारण है कि **विलासिता में विचरनें वाले लोगों ने धर्म को अपना विरोधी समझ लिया है। आज विश्वव्यापी वैमनस्य तथा संशयमय जीवन व्यतीत करना ही शेष रह गया है।** आज का विश्वव्यापी वैमनस्य तथा संग्राम जो धर्मानुसार सच्ची राजनिति से कोसों दूर है। **धर्म के वास्तविक स्वरूप की अनभिज्ञता के कारण आज कल धर्म के नाम पर प्रचलित पंथों, मजहबों तथा सम्प्रदायों को ही धर्म समझ लिया है।** यही कारण है कि जब ये मजहब या सम्प्रदाय किसी भी प्रकार का अनुचित कार्य व अमानुषिक कार्य करते हैं, तो अनभिज्ञ लोग उसे धर्म की ओर धकेल देते हैं। यदि कोई सम्प्रदाय या मजहब देशोन्नती वा राष्ट्र कल्याण में बाधक होता है तो राष्ट्रोत्थान प्रिय पुरुष धर्म को ही इस का दोषी या अपराधी ठहराते हैं। यदि कोई सम्प्रदाय या मजहब रूढ़िवाद का दास बनता है तो इसके लिए धर्म को ही दोषी ठहराया जाता है। यदि अन्यत्र देशों में धर्म के नाम पर रक्तपात होता है या एक ही सम्प्रदाय में परस्पर अत्यधिक अत्याचार होते हैं तो उसे भी धर्म की ओर ही धकेल दिया जाता है परिणाम स्वरूप और विश्व शांति प्रिय पुरुष भी धर्म के नाम से ग्लानि करने लग जाते हैं। **एक देश धर्म का सच्चा जिज्ञासु भी जब धर्म की वर्तमान दुर्दशा को देखता है तो वह भी धर्म से उदासीन हो जाता है। जब वह देखता है कि धर्म व धर्म के नाम पर अमानुषिक अत्याचार हो रहे हैं, और धर्म के नाम पर ही निर्दोष तथा निरपराध प्राणियों का वध हो रहा है। स्वार्थी, आलसी, प्रमादी तथा निकम्मे लोग धर्म के नाम पर ही अन्धश्रद्धालु भोले भक्तों के माल पर मौज मार रहे हैं।** तात्पर्य यह है कि संसार में कौन-सी ऐसी बुराई है जो धर्म के नाम पर न की जा रही हो। यहाँ तक कि दुराचार तथा व्यभिचार तक भी धर्म के ही नाम पर ही किये जा रहे हैं। धर्म की यह दुर्दशा देखकर सत्य तथा शांति की अभिलासी आर्य जाति भी धर्म से विमुख हो जाती है। जहाँ उसे धर्म से सच्ची शांति मिलनी चाहिये थी, वहाँ वही धर्म उसकी अशांति का कारण बन जाता है। वह उल्टा धर्म का विरोधी बन जाता है। वह धर्म का जिज्ञासु होता हुआ भी उल्टा धर्म से विमुख हो जाता है। किसी उर्दु के कवि ने ठीक ही कहा है:-

खुदा के बन्दों को देखकर ही खुदा से मुनासिर हुई है दुनियाँ,
कि ऐसे जिस खुदा के बन्दे हैं वह अच्छा खुदा नहीं है।

अब यह देखना है कि वास्तव में धर्म ही उपर्युक्त बुराइयों तथा रूढ़ियों का जन्मदाता है। आइये थोड़ा हम धर्म शब्द पर विचार कर लें। धर्म शब्द का शाब्दिक अर्थ यह है कि जिसको धारण किया जायें। दूसरे शब्दों में जो धारण करने योग्य है। अर्थात् धर्म किसी विशेष प्रकार की रूढियों, रस्मों, रिवाजों तथा बाह्य कृत्रिम आडम्बरों का नाम नहीं प्रत्युत उस कर्तव्य तथा ड्यूटी का नाम है जो धारण करने योग्य है, जिसको धारण कर मनुष्य, मनुष्य बन कर इहलोक तथा परलोक स्वयं सुख तथा शान्ति को धारण कर प्राणिमात्र के सुख तथा शान्ति का कारण बने, इसलिए महाभारत में कहा है -

धारणाद् धर्ममित्याहु: धर्मो हि धारयते प्रजा

अर्थात् धारण करने योग्य होने से धर्म का नाम धर्म है और यही वास्तव में प्रजाओं को धारण करता है, अर्थात् उनके सुख और शान्ति का मूल कारण है। इससे यह सिद्ध होता है कि धर्म वास्तव में राष्ट्रीयता का

thearyasamaj.org

विरोधी नहीं, प्रत्युत सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय प्रजा के धारण करने अर्थात् प्रजा के सुख और शान्ति का मूल कारण है। खेद है कि आज हम धर्म का प्रजा के सुख और शान्ति के मूल कारण के बहिष्कार करने में अग्रसर हो रहे हैं और इसे ही हम धर्म निरपेक्ष राष्ट्र कहते हैं।

सम्भवत: प्रिय पाठक पूछेंगे कि वास्तव में यदि धर्म का यही उदात्त अभिप्राय है, तो आज धर्म के नाम पर इतना अत्याचार तथा अशान्ति क्यों? इसका निश्चय में उत्तर यही है कि जिस वस्तु को धर्म समझ रखा है वह वास्तव में धर्म है ही नहीं। आज हमनें कुछ दकियानूसी रूढ़ियों, रिवाजों, चिन्हों तथा आडम्बरों के नाम को ही धर्म समझ लिया है, किन्तु यदि उपर्युक्त बाह्य चिन्हों तथा रूढ़ियों आदि का नाम ही धर्म है तो धर्म शब्द के अन्दर इतने उदात्त विचार तथा भावनाएँ निहित न होती।

वास्तव में धर्म का संबंध हमारी आत्मा तथा कर्त्तव्यों से है ना कि रूढ़ि रिवाजों से। अपितु जिन कर्त्तव्य कर्मो से मानवीय आत्मा स्वस्थ, सुदृढ़, पवित्र तथा बलवान बन कर इहलोक में सुख तथा शांति का भागी बने, और अंत में मोक्ष मार्ग में प्रवेश करने का अधिकारी बन सके, वही धर्म है। इसीलिये प्राचीन ऋषियों ने जो धर्म के लक्षण किये हैं उनमें रूढ़िवाद या बाह्य आडम्बरों का लेशमात्र भी स्थान नहीं मिलता। महर्षि मनु ने जो धर्म का स्वरूप बताया है वास्तव में वही धर्म का सच्चा स्वरूप है।

धृति क्षमा दमोस्तेयम्, शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

आपत्ति और संकट में धैर्य रखना, क्षमाशील बनना, परपत्नि या परदेश पर मालिक की बिना आज्ञा के या बिना अनुमति के उस पर अपना अधिकार नहीं जान लेना, शरीर, मन, आत्मा को सदा पवित्र रखना, अपनी इन्द्रियों को कुपथगामी न बनाकर उन्हें सदा अपने वश में रखना, अपनी बुद्धि को सत्पथगामी बनाकर उसे सदा सत्पथ पर चलाना, नाना प्रकार की विधाओं तथा कला कौशल रूपी विज्ञान को प्राप्त करना। मन, वचन तथा कर्म से सदा सत्य का ही व्यवहार करना, सत्य से कभी विचलित न होना, किसी प्राणी पर अनुचित क्रोध न करना, **मानव ज़ीवन को उच्च महान तथा पवित्र बनाने वाले कर्तव्य कर्मो का नाम ही प्राचीन ऋषियों ने धर्म रखा है।** किसी भी विशेष प्रकार की रूढ़ी या रिवाज को धर्म नहीं माना है।

हम आज कल के प्रचलित रूढ़ी प्रधान मतों को, सम्प्रदाय, पंथ, मजहब के नाम से तो पुकार सकते हैं, किन्तु धर्म के नाम से नहीं। जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है कि धर्म उन सार्वभौम तथा सर्वहितकारी नियमों का नाम है, जिन पर चलकर हम परम शांति तथा परम आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं। इन्हीं सार्वभौम सिद्धान्तों तथा नियमों का नाम ही वैदिक धर्म या मानव धर्म है। यही इह तथा परलोक में हमें सुख, शांति तथा परमानन्द प्रदान कर सकता है। मानव धर्म में क्या-क्या विशेषताएँ है इनका हम यहाँ संक्षेप में वर्णन कर फिर कुछ विस्तार पूर्वक दिग्दर्शन करेंगे, जिससे कि सच्चे मानव धर्म के यथार्थ स्वरूप से हम अवगत हो सकें :-

१- मानव धर्म किसी अल्पज्ञ का मनोकल्पित निर्देश नहीं, प्रत्युत उस सर्वज्ञ प्रभु का सन्देश है।

२- मानव धर्म केवल विश्वास प्रधान ही नहीं, प्रत्युत पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ आचार प्रधान भी है।

३- मानव धर्म मनुष्य को साम्प्रदायिक या केवल अंधविश्वासी ही नहीं बनाता, मनुष्य बनाता है।

४- सच्चा धर्म मनुष्य को परस्पर द्वेष या बेर करना नहीं सिखाता अपितु परस्पर विश्व प्रेम का पाठ पढाता है।

५- सच्चा मानव धर्म प्रत्येक वस्तु के यथार्थ स्वरूप को दर्शाता है।

६- सच्चा मानव धर्म उपास्य और उपासक में सीधा संबंध बताता है, किसी पीर पैगम्बर या देवता को माध्यम नहीं बनाता।

७- मानव धर्म अपने जीवन को स्वार्थमय न बनाकर त्यागमय अथवा यज्ञमय बनाना सिखाता है।

८- मानव धर्म अकर्मण्यता एवं भाग्य के भरोसे के चक्कर में न फंसा कर पुरुष को पुरूषार्थता तथा कर्मण्यता का पाठ पढ़ाता है।

संक्षेप में यह आठ विशेषताएँ है, जो कि सार्वभौम धर्म में होनी चाहिए। यही आठ विशेषताएँ सच्चे मानव धर्म अथवा पवित्र वैदिक धर्म में पूर्णतया विद्यमान है। इन्हीं आठ विशेषताओं को कुछ विस्तार पूर्वक आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगी।

मजहब

१) मजहब सम्प्रदाय या पंथ का अर्थ है रास्ता या परिपाटी, जिसको किसी विशेष व्यक्ति ने चलाया या निर्देश किया है। यही कारण है कि आज तक जितने भी सम्प्रदाय या मजहब चले हैं उन व्यक्तियों के विशेष नाम से ही चले हैं या प्रचलित हैं। जिन्होंने कि उनको चलाया या निर्देश किया है जैसे कबीर पंथी, दादू पंथी, नानक पंथी, मरम्बदी इसाई, शैव, शाक्य इत्यादि। मजहबों या सम्प्रदायों के नाम ही हमारी उपर्युक्त सत्यता को स्पष्ट प्रमाणित कर रहे हैं कि यह सम्प्रदाय किसी विशेष व्यक्तियों की अपनी बुद्धि या मन की कल्पना है, न कि ईश्वरीय आदेश, यही कारण है कि उपर्युक्त मजहबों व सम्प्रदायों में से उनके प्रवर्तकों को पृथक कर दिया जाये तो उपर्युक्त मजहब या सम्प्रदाय के केवल नाम शेष ही रह जाएंगे विपरित इसके धर्म ना मजहब है, न सम्प्रदाय प्रत्युत **धर्म ईश्वरीय आदेश है।**

जिसको कि सृष्टि के प्रारम्भ में प्राणी जगत् के कल्याणार्थ तथा सृष्टि के नियम पूर्वक संचालनार्थ स्वयं भगवान् ने वेद के रूप में हमें प्रदान किया है। अत: धर्म किसी व्यक्ति विशेष की उपज नहीं, अपितु स्वयं सर्वज्ञ प्रभु का आदेश है। इसीलिए जहाँ मजहब या सम्प्रदाय अल्पज्ञ मनुष्यों के मस्तिष्क की कल्पना या उपज होने से अपूर्ण है। वहाँ धर्म सर्वज्ञ प्रभु का आदेश होने से पूर्ण है। उपर्युक्त धर्म के सार्वभौम नियमों या सिद्धान्तों का जिस पुस्तक में वर्णन है, उसी पवित्र पुस्तक का नाम वेद है। सम्पूर्ण ऋषि, मुनि या महात्मा जन इस बात को मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं कि वेद ईश्वरीय वाणी है। जो सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्यों के कल्याणार्थ चार ऋषियों के हृदय में प्रदान किया। इस सम्बन्ध में कुछ विशेष उद्धरणों के द्वारा आपके सम्मुख उपस्थित करती हूँ :-

उस स्वयंभू परमेश्वर ने अनादि तथा अविनाशी दिव्य वेद वाणी का सृष्टि के आदि में उपदेश दिया। उस पवित्र वाणी से ही दुनियाँ के सब व्यवहार चले हैं। वेद ज्ञान का सृष्टि के प्रारम्भ में प्रकट होना, वेदों में किसी भी व्यक्ति विशेष के इतिहास का ना होना, वेद किसी भी देश विशेष की भाषा में ना होकर उसका वैदिक भाषा में होना ही इस बात का प्रबल प्रमाण है कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। मोक्षमूलक पाश्चात्य विद्वानों नें भी इस बात को मुक्त कंठ से स्वीकार किया हैं कि वेद ही दुनियाँ के पुस्तकालय में सबसे पूरानी पुस्तक है।

thearyasamaj.org

वेद स्वयं इस बात की साक्षी देता है कि वह किसी मनुष्य विशेष की उपज नहीं प्रत्युत वह स्वयं ईश्वरीय संदेश है। जैसा कि ऋग्वेद में लिखा है:-

यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्वाति,
यो ब्रह्मणे प्रथमो गाः आर्षेन्दता।।

जो प्रभु सम्पूर्ण जगत् के जड़, चेतन पदार्थों का एक मात्र स्वामी है। जिस परमेश्वर ने सर्व प्रथम सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मज्ञानी ऋषियों के हृदय में वेद वाणी को प्रकट किया है उस पावन वेद वाणी से ही दुनियाँ के सब व्यवहार चलें हैं। अथर्ववेद में इसी विषय को दूसरे रूप में इस प्रकार प्रकट किया है :-

यत्र ऋषयः प्रथमजा ऋचः साम यजुर्मही।
एकर्षिर्यस्मिन्नार्पितः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।

अथर्व. १०/७/१४

सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुये ऋषियों ने जिस प्रभु में ध्यानावस्थित होकर ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान प्राप्त किया। जो प्रभु सर्वज्ञ है तथा जिसके अन्दर सारा ब्रह्माण्ड मणिमाला की तरह ओत-प्रोत है, जो सब का आधार है। हे ज्ञानीजनों! उसे कहो कि वह देव कौन-सा है? यहाँ पहेली के रूप में ईश्वर का वर्णन करते हुए प्रभु को सृष्टि के प्रारम्भ में पैदा हुए ऋषियों के हृदय में वेदों का ज्ञान देने वाला कहाँ है?

इन्द्र आदि देव तथा योगीजन जिस प्रभु की प्रेममयी गोद में अपना वास करते हैं वह सम्पूर्ण ज्ञान का भण्डार वेद पति परमात्मा ही निश्चय से सृष्टि के प्रारम्भ में प्रवचनीय विचित्र वेद मंत्रों का उपदेश करता है।

इस प्रकार वेद में अन्यत्र भी बहुत स्थल हैं कि जिसमें वेद स्वयं अपने को ईश्वरीय ज्ञान होने का पूर्ण समर्थन करता है। अतः वास्तव में सत्य धर्म वही है जो ईश्वरीय आदेश है, जो कि सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्म ज्ञानी ऋषियों द्वारा हमें प्राप्त हुआ है।

२) मजहब या सम्प्रदाय केवल विश्वास प्रधान है वो जितनी मुख्यता तथा प्राथमिकता विश्वास को देते हैं, उतनी आचार को नहीं, अपने पैगम्बरों या प्रवर्तकों पर विश्वास लाना ही उनके मत में स्वर्ग या बहिश्त प्राप्ती का एकमात्र साधन है। एक मनुष्य धर्म के सब अंगों का पूर्णतया पालम करता हुआ भी, यदि वह किसी देवता विशेष या पैगम्बर पर विश्वास नहीं लाता तो वह धर्मावलम्बी नहीं कहला सकता। विपरीत इसके यदि वह किसी पैगम्बर या प्रवर्तक या उनके वचनों पर विश्वास लाता है तो वह धर्म के अन्य अंगों की उपेक्षा करता हुआ भी धार्मिक कहलाने का हकदार है।

धर्म आचार प्रधान है।

जहाँ मजहब और सम्प्रदाय विश्वास को प्रधानता देते हैं वहाँ धर्म में आचार को ही प्रधानता दी गई है। वैदिक धर्म के अनुसार आचारहीन मनुष्य धर्मात्मा कहलाने का कभी भी हकदार नहीं, चाहे वह ऋषि मुनियों या उनकी मान्यताओं पर कितना भी विश्वास क्यों न रखता हो, दूसरे शब्दों में आचारवान् पुरुष ही धर्म परायण या धर्मात्मा कहला सकता है। इसलिए वैदिक धर्म में सदाचारी और धर्मात्मा पर्यायवाची शब्द हैं। **वैदिक ऋषियों ने सद्-आचार को केवल धर्म ही नहीं, प्रत्युत परमधर्म कहकर पुकारा है।** जैसा कि महाराज मनु ने आचार को परम धर्म बताया है।

आचारः परमोधर्मः - वैदिक ऋषियों का तो यहाँ तक कहना है कि यदि कोई केवल वेद विश्वासी ही नहीं, अपितु वेद का पूर्ण ज्ञानी भी क्यों न हो, यदि वह आचारहीन है तो चारों वेद भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते यथा महर्षि मनु लिखतें है :-

आचाराद् विच्युतो विप्रः न वेद फलमश्नुते।

अर्थात् आचरण से गिरा हुआ विप्र वेद पढ़ने के फल को प्राप्त नहीं कर सकता। इसीलिये वेद स्थान-स्थान पर बुराइयों को छोड़नें और सद्गुणों को धारण करने का आदेश देता है। वेद कहता है कि :-

ज्ञानीजनों ने मनुष्यों के पाप कर्मों से निवृत्त होने के साथ मर्यादायें बांधी हैं। उनमें से यदि कोई एक का भी उल्लंघन करता है तो वह महापापी है, वेद की सात मर्यादायें निरूक्त के अनुसार निम्न हैं :-

१. सुरापान-शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन।
२. **दुष्टस्य कर्मणः पुनःपुनः सेवनम्**- अर्थात् बुरे कामों का बार-बार सेवन करना और उनसे कभी भी बाज ना आना।
३. **पातकेन्तोद्यम्**- अर्थात् पाप कर्म करके भी उसे छुपाने के लिये असत्य बोल देना।
४. **तल्पारोरणम्**- परस्त्री गमन अर्थात व्यभिचार करना।
५. **स्तेय**- चोरी करना अर्थात् पर पदार्थों पर स्वामी की बिना आज्ञा अनुमति के अधिकार कर लेना।
६. **ब्रह्महत्या**- धर्मात्मा व ज्ञानी जनों की हत्या करना या उन्हें किसी प्रकार का क्लेश पहुँचाना।
७. **भ्रूणहत्या**- गर्भपात करना।

यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से उपर्युक्त मर्यादाओं पर विचार करेंगे तो हमें यह स्पष्ट ज्ञात हो जायगा कि संसार की कोई भी ऐसी बुराई नहीं जो कि उपर्युक्त कोटि की मर्यादाओं के अन्तर्गत ना आ जाती हो, जिनका कि वेद बल पूर्वक छोड़ने का आदेश ना देता हो। वेद तो यहाँ तक कहता है कि उपर्युक्त सात मर्यादाओं में यदि कोई एक मर्यादा का भी उलंघन करता है तो वह महापापी है। आचार के सम्बंध में वेद का कितना ऊँचा आदर्श है इस उच्च आदर्श को लक्ष्य में रखकर भी एक आदर्श वैदिक धर्मानुयायी अपनी दैनिक प्रार्थना में यदि भगवान से कुछ मांगता है तो यही कि है देवाधिदेव -

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

हे प्रभु! आप हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण तथा बुराइयों को हमसे सर्वथा के लिए दूर कर दो तथा जितनी भी हमें पतन की ओर ले जाने वाले दुष्कर्म हैं उन्हें सर्वथा के लिए दूर कर दो तथा हमारे कल्याण की समस्त भद्र भावों को हमें प्राप्त कराओ। एक आदर्श वेदानुयायी यह भली प्रकार जानता है कि -

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः

सदाचार से भ्रष्ट तथा पतित मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। उसे भली प्रकार ज्ञात है कि सदाचारी या धर्मपरायण बनना ही एक आदर्श आर्य बनना है, केवल वेद के पढ़ने-सुनने मात्र से नहीं। इसीलिए वेद में एक आर्य पापकर्म को बल पूर्वक कहता है कि -

यो नः पथमन् न जहासि तमुत्वा जहीमे वयम्

हे पाप! यदि तू हमें स्वेछा पूर्वक नहीं छोड़ता तो हम ही तुम्हें जबरदस्ती अपने जीवनोद्यान में से उखाड़ कर फेंक देते हैं। आप देख लें वेद सदाचार का कितना ऊँचा आदर्श हमारे सम्मुख उपस्थित करता है। क्योंकि धर्म आचार की वस्तु है न कि केवल विश्वास की।

शेष आगामी अंक में

thearyasamaj.org

आर्य समाज के प्रति कुछ भ्रान्तियाँ और उनका निवारण

- खुशहालचन्द आर्य
मार्फत-गोविन्दराम जी आर्य एण्ड सन्स
९२०, महात्मा गाधी रोड, (दो तल्ला) कोलकता-०७
चलभाष-९०३८४८५१५५

यह लेख एक आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आदरणीय रामनिवास जी ''गुणग्राहक'' द्वारा लिखित एक लघु पुस्तिका **''जाने आर्य समाज को''** शीर्षक से उद्धृत किया है। यह आर्य समाज को समझाने के लिए एक अच्छी पुस्तक है। इसमें विद्वान् ने आर्य समाज क्या मानता है और क्या नहीं मानता, इस विषय को बड़ी सरल भाषा में रोचक ढंग से समझाया है। जिसको पढ़ंकर एक जिज्ञासु व्यक्ति आर्य समाज को अच्छी प्रकार समझ सकता है और आर्यसमाज का सदस्य बन कर अपने जीवन को वेदानुसार चला कर अपने व दूसरों के जीवन को सुखी व समृद्धिशाली बना सकता है। इस पुस्तक में आर्य समाज के प्रति लोगों की भ्रान्तियाँ तथा उनका निवारण भी विद्वान् ने अपनी बुद्धि से बड़े अच्छे ढंग से किया है। इस पुस्तक को उपयोगी और लाभदायक समझ कर भ्रान्तियों सम्बन्धी कुछ अंश इस लेख द्वारा प्रकाशित करने का प्रयास किया है। आशा है पाठक गण इससे लाभ उठायेंगे और मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

भ्रान्तियाँ तथा निवारण इसी भाँति:-

१. भ्रान्ति :- आर्य समाज मूर्तिपूजा को नहीं मानता, इसलिए मूर्तिपूजक आर्य समाज को नास्तिक (ईश्वर को न मानने वाला) कहते हैं।

सच्चाई :- संसार में आर्य समाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है, जिसके नियमों में परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप का सटीक परिचय दे कर उसकी भक्ति व उपासना करने की सही प्रेरणा दी गई है। परमेश्वर के सत्य स्वरूप को जानने-समझने के लिए हमारे पास वेद ही एक मात्र साधन है। वेद को पढ़े-समझे बिना हम न तो धर्म को समझ सकते हैं और न परमात्मा को। इसलिए आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने तीसरे नियम में वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना धर्म ही नहीं, परम् धर्म घोषित किया है। ऐसे में आर्य समाज को मूर्तिपूजा न करने के कारण नास्तिक कहना एक भ्रम है, एक अज्ञान है। महापुरुषों की कल्पित मूर्तियाँ बनाकर मनमाने ढंग से उनकी पूजा के नाम पर फल-फूल, मिष्ठान चढ़ाने वाले आज तक न तो वेदों में मूर्ति-पूजा का विधान ही दिखा सके और न तर्कों व प्रमाणों से मूर्तिपूजा को ईश्वर की भक्ति व उपासना प्रमाणित कर सके। आर्य समाज प्रारम्भ से लेकर आज तक अपने सब सिद्धान्तों, सब मान्यताओं को हर दृष्टि से वेद के अनुकूल और सत्य सिद्ध करता रहा है। ऐसे में प्रत्येक विचार शील सज्जन का यह नैतिक और मानवीय कर्तव्य है कि वह आर्य समाज की ईश्वर सम्बन्धी विचारधारा को जाने-समझे और मूर्ति-पूजकों की मनमानी कल्पनाओं के साथ तुलना करके सत्य को स्वीकार करे।

२. भ्रान्ति :- मूर्ति-पूजा के दूसरे रूपों जैसे काली, दुर्गा, भैरव, शनि, सांई बाबा आदि कल्पित देवी-देवताओं का विरोध करने के कारण, आर्य समाज को देवों की पूजा न करने, न मानने वाला भी कहा जाता है।

सच्चाई :- हमारे प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है-**मातृ देवोभव, पितृ देवोभव, आचार्य देवोभव, अतिथि देवोभव** आदि वाक्य आपको वैदिक ही नहीं पुराण-पन्थी साहित्य में भी मिल जाएँगे। ऐसे वचन स्पष्ट बताते हैं कि माता देव है, पिता देव है, आचार्य और अतिथि देव है। इनके देव होने में किसी को सन्देह नहीं। पाँचवा देव पत्नी के लिए पति है और पति के लिए पत्नी भी देवी है। इन पाँच की पूजा-सत्कार का विधान सर्वत्र है और व्यवहारिक भी है। देव का सीधा अर्थ होता है देने वाला। माता-पिता हमें जीवन देते हैं, जीवन के विविध संसाधन व आशीर्वाद देते हैं। आचार्य और अतिथि हमें ज्ञान देते हैं, धर्म-उपदेश देते हैं। पति-पत्नी तो अपना तन, मन, धन और जीवन ही एक दूसरे को दे डालते हैं। ऐसे देवी-देवताओं की श्रद्धा व सम्मान पूर्वक पूजा सत्कार और सद्व्यवहार करना ही सर्वमान्य और सच्ची देव पूजा है। यज्ञ का तो एक नाम ही ''देवपूजन'' है। प्राकृतिक देवों-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की पूजा (शुद्धि) यज्ञ से ही होती है। आर्य समाज जीवन से जुड़े हुए इन देवों की पूजा करता-कराता है। ऐसे देव-पूजक आर्य समाज को देवी-देवताओं की पूजा का विरोधी कहने वाले विचार करके देखें तो उनका स्वयं का हृदय कह उठेगा कि वे स्वयं इन सच्चे देवों की पूजा न करने के कारण देवपूजा से वंचित हैं।

३. भ्रान्ति :- कुछ लोग कहते हैं कि आर्य समाज श्री राम और श्री कृष्ण, हनुमान आदि को नहीं मानता।

सच्चाई :- श्री राम और श्री कृष्ण आदि के कल्पित चित्र व मूर्ति बनाकर, उन पर फल-फूल, चावल, मिष्ठान चढ़ाना ही श्री राम, श्री कृष्ण आदि का मानना है तो आर्य समाज उन्हें नहीं मानता। दूसरी ओर वाल्मीकि रामायण और महाभारत में वर्णित उनके इतिहास को पढ़कर उनके प्रतिश्रद्धा और सम्मान के भाव रखते हुए, उनके श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव बनाना यदि उनका मानना है तो सच यह है कि श्री राम और श्री कृष्ण आदि को आर्य समाज ही मानता है। महर्षि वाल्मीकी ने रामायण लिखने का उद्देश्य बताया है-**रामादिवत् प्रवर्त्तितव्यं न तु रावणादिवत्।** अर्थात् मैं आने वाली पीढ़ियों को यह सन्देश देना चाहता हूँ कि वे राम की तरह जीवन जीये, रावण की तरह नहीं। ऐसा केवल आर्य समाज ही कहता और करता है। आर्य समाज श्री राम और श्री कृष्ण के चित्र की पूजा नहीं करता बल्कि चरित्र की करता है, जो सब को करनी चाहिए।

४. भ्रान्ति :- एक भ्रान्ति यह है कि आर्यसमाज श्राद्ध व तर्पण नहीं मानता।

सच्चाई :- तीर्थ शब्द का अर्थ होता है, दु:खों से तराने वाले कर्म। जैसे सत्य बोलना, विद्या का अभ्यास करना, सत्संग करना, उत्तम विचार रखना, धर्मानुष्ठान, परमात्मा की भक्ति, ब्रह्मचर्य का पालन करना तथा विद्यादान आदि कर्म, संसार सागर से तराने वाले कर्म होने से तीर्थ कहलाते हैं। वेद कहता है-**उपह्वरे च गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत:।** अर्थात् पहाड़ों की गुफाओं और नदियों के किनारे रह कर सन्त-महात्मा योगाभ्यास किया करते हैं। ऐसे तपस्वी साधुओं के निकट जाकर प्राचीन काल में लोग सत्संग व शंका समाधान किया करते थे। अब वहाँ न तो तपस्वी संन्यासी है और न धर्म चर्चा के लिए जाने वाले तीर्थ यात्री। आर्य समाज सत्य बोलना, विद्या पढ़ना, ब्रह्मचर्य के पालन आदि उत्तम कर्मों को सच्चा तीर्थ मानता है और इनको कोई बुद्धिमान व्यक्ति इनकार भी नहीं कर सकता। ●

thearyasamaj.org

प्यारे नेता नरेन्द्र मोदी! जागो वीर महान

प्यारे नेता नरेन्द्र मोदी! जागो वीर महान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
पाकिस्तान पड़ौसी दुश्मन, करता है नित मनकारी।
ऊँच-नीच को नहीं जानता, उसकी अक्ल गई मारी।।
बनं रहा आतंकवाद को, भारत में शैतान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
गन्दे नेता पाकिस्तानी, हरदम झूठ बोलते हैं।
भले-बुरे को, पुण्य-पाप को, पापी नहीं तोलते हैं।।
रचते हैं षडयंत्र रात-दिन, झुठे बेईमान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
पाकिस्तान कुचाली जालिम, कभी बाज ना आएगा।
सच मानो, वह इस दुनियाँ से, जब तक ना मिट जाएगा।।
लात की मार बात ना माने, कहते हैं विद्वान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
उत्तर में है चीन हमारा, दुश्मन खतरनाक भारी।
तिब्बत जिस पापी ने लूटी, पूरा है अत्याचारी।।
जिसकी करतूतों से परिचित, है अब सकल जहान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
सन् उन्नीस सौ बासठ में वह, भारत पर चढ़ आया था।
भारत की भोली जनता पर, जुल्म रात-दिन ढ़ाया था।।
भारत की धरती कब्जाई, हमें खूब है ज्ञान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र को, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
खुदगर्जो से कभी किसी की, हुई मित्रता सफल नहीं।
पढ़ों आप इतिहास पुराना, तुम्हें लगेगी बात सही।।
विदुर, कृष्ण, चाणक्य, जगत में, देते थे व्याख्यान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।
वल्लभ भाई पटेल बनो तुम, लाल बहादुर बन जाओ।
गोली का उत्तर गोलों से, दो दुनियाँ में यश पाओ।।
''नन्दलाल निर्भय'' गाएगा, सारा जग यशगान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची कर दो शान, देश की लाज बचाओ।।

-पं. नन्दलाल निर्भय, ''पत्रकार''
ग्राम-बहीन (पलवल), हरियाणा,
चलभाष-०९८१३८४५७७४

लक्ष्मण की राम से गुहार

गिड़गिड़ाओं मत, धनुष बाण लो कर में, हे रघुनंदन!
भूत लात के बातों से नहि सुनते, याचन-वंदन।।
करके शरसंधान समुन्दर को ही सर्व सुखा दो।
धूर्त, घमण्डी का धरती से नामोनिशा मिटा दो।।
अपना रस्ता आप बनाऐं, इससे राह न मांगे।
हम पुरूषारथ के पूजक, क्यों झुकते इसके आगे।।
हम अपने धनुबाण और भुजबल से अपना रस्ता।
खुदहि छीन लें इससे, ये जड़ अपना क्या कर सकता।।
पुरूषारथ है धर्म हमारा, ये स्वारथ में रत है।
पुरूषारथ के सम्मुख स्वारथ रत की क्या कीमत है।।
फिर भी हमने सख्य भाव से अपना हाथ बढ़ाया।
इसके आगे हाथ पसारे, इसका मान बढ़ाया।।
किन्तु तीन दिन बीत गए हैं, वन्दन करते-करते।
अब, पानी बहता सा लगता है सिर के ऊपर से।।
उठो राम! मित्रत छोड़ो, धनु कर में लो, शर संधानो।
इसको सबक सिखाओं भैय्या, विनय हमारी मानो।।
इस जड़ को, आर्यो के भुजबल का अब भान करा दो।
बहुत हो चुकी मित्रत, जड़ का दूर अभिमान मिटा दो।।
हे सौमित्र! ठीक कहते तुम, ये शायद अपने को।
है कमजोर समझता, इससे सुनता नहि मित्रत को।।
उठे राम सक्रोध, धनुष ले, शर हित हाथ बढ़ाया।
सागर का सम्राट, सपत्निक दौड़ शरण में आया।।
सच कहते हैं, शकती की भगती सब करते, भाई!
भय बिनु प्रीति नहीं होती है, नीति यही सुखदाई।।
शक्ति साधना करी, निशाचर का आतंक मिटाया।
तुमने राम निरापद जीवन का सन्मार्ग दिखाया।।

स्मृति शेष-दयाशंकर गोयल
सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

(शक्ति की भक्ति को लक्ष्य कर रचयित उपरोक्त रचना आर्य जगत् के विद्वान् पं. दयाशंकर जी गोयल के जीवन की संभवत अंतिम रचना है क्योंकि जब उनकी अस्वस्थता का समाचार प्राप्त होने पर मैं उनसे मिलने गया तो उन्होंने उपरोक्त रचना के विषय में चर्चा करते हुए अपनी बेटी को निर्देशित किया था कि वे इस रचना को मुझे भेज देवें। इस भेंट के कुछ दिनों बाद ही आपका निधन हो गया-**सम्पादक**)

thearyasamaj.org

बधाई एवं दायित्व चिन्तनीय

हिन्दी मासिक पत्रिका ''**वैदिक संसार**'' सतत प्रकाशित होते हुए माह अक्टूबर २०१४ को आर्यसमाज एवं वैदिक विचारधारा से जन-जन को अवगत कराते हुए अपने प्रकाशन के तृतीय वर्ष को पूर्ण कर चतुर्थ नव वर्ष में पदार्पण कर रही है। इसके लिए वरिष्ठ समाजसेवी वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित पं. सुखदेव शर्मा एवं उनके सहयोगी सम्पादक मण्डल को बधाई।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने भारतवर्ष में फैले गहन अंधविश्वास एवं विभिन्न मत-मतान्तरों के द्वारा फैलाए हुए पाखण्ड को प्रखर ज्ञानरूपी ''**सत्यार्थप्रकाश**'' के आलोक से प्रकाशित कर सनातन वैदिक धर्म एवं वेदों का प्रचार-प्रसार किया। इस कार्य के सतत जनहित में प्रचारार्थ स्वामी जी ने ''**आर्य जगत्**'' की स्थापना की।

मासिक पत्रिका ''**वैदिक संसार**'' वर्तमान में अखिल भारतीय स्तर पर आर्य विद्वान् लेखकों एवं विदुषी लेखिकाओं के आलेख प्रकाशित कर भारत के जनमानस को महर्षि का संदेश पहुँचा रही है। इसी क्रम के विकासार्थ आर्य जगत् के वरिष्ठ समाज सेवी दानवीर भामाशाह सुप्रख्यात उद्योगपति श्री नेमीचन्द शर्मा, गान्धीधाम ने अपने जन्म दात्री माता श्रीमती मोहिनी देवी की स्मृति में ''**माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट**'' को बनाकर ''**वैदिक संसार**'' के समाजसेवी प्रखर वेद प्रचारक सम्पादक पं. सुखदेव शर्मा को वैदिक यज्ञ सम्पन्नकर वैदिक धर्म प्रचारार्थ ''**वैदिक रथ**'' वाहन भेंट किया। इस आयोजित आयोजन में आर्य जगत् के युवा संन्यासी स्वामी शान्तानन्द, गांधीधाम के कोषाध्यक्ष श्री गुरूदत्त शर्मा एवं गणमान्य आर्यजन उपस्थित थे। पं. सुखदेव शर्मा ने इस पुनीत कार्य के लिए माननीय उद्योगपति श्री नेमीचन्द शर्मा को धन्यवाद दिया।

अब तक वरिष्ठ समाजसेवी आर्य पं. सुखदेव शर्मा अपने अथक परिश्रम एवं जन-जन आर्यों के आर्थिक सहयोग से इस महंगाई के युग में सुन्दर कलेवर से परिमार्जित आर्य पत्रिका का सतत मुद्रण एवं प्रकाशन कर रहे थे। वर्तमान में ''**वैदिक रथ**'' में भ्रमण कर यज्ञ एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ चलित वैदिक रथ के ईंधन व्यय का दायित्व भी उन्हें उठाना होगा।

वर्तमान में वैदिक रथ से वेद प्रचार के लिए प्रतिमास एक निश्चित निधि की आवश्यकता होगी। अत: इस प्रयोजन के लिए एक निधि का संकलन कर उसके ब्याज से वैदिक रथ का संचालन कर ग्राम-ग्राम में सनातन वैदिक धर्म, दैनिक यज्ञ एवं स्वामी जी के विचारों का प्रचार-प्रसार किया जावे। अन्यथा वरिष्ठ समाजसेवी पं. सुखदेव शर्मा इस दायित्व को कैसे वहन कर सकेंगे?

यह एक विचार चिन्तन-मनन का है। इसका समाधान कैसे किया जा सकता है। यह विचारणीय है, आशा है आर्य जगत् के विद्वान् एवं विदुषी महिलागण इस विचार का मंथन करेंगे।

- पृथ्वी वल्लभदेव सोलंकी
२५, सतीमार्ग, गोंदाचौकी, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९८२६५९२९७४

दिया दूर नहीं जात

ऋतु बसन्त जाचक भया, हरख दिया द्रुम पात।
ताते नव पल्लव भया, दिया दूर नहीं जात।।

भावार्थ - प्रकृति भी पेड़-पौधों को पत्तियाँ पुन: लौटाती है। जब बसन्त ऋतु मांगने गयी तब समस्त पेड़-पौधों ने खुश होकर अपनी पत्तियाँ दे दी किन्तु थोड़े समय में ही नई कोंपलें (पत्तियाँ) आ गयी।

हमारे गाँव में घर के पास एक पारस पीपल का वृक्ष बहुत ही लम्बे समय से खड़ा है उसे प्रत्यक्ष रूप में हम देखते हैं कि बसन्त (पतझड़) के आते ही सारी पत्तियाँ एक साथ झड़ जाती है और तीसरे-चौथे दिन ही नई कोंपलें (पत्तियाँ) निकल आती है यह नजारा हमारे मोहल्ले वाले हर वर्ष देखते आ रहे हैं। यह वृक्ष हिन्दू चौराहा पर शिव मन्दिर के पास खड़ा है। उक्त कथन को और स्पष्ट करने हेतु एक कहानी इस प्रकार है :-

एक गाँव था जो पहाड़ी के किनारे बसा हुआ था। गाँव में सभी वर्ण के लोग रहते थे। पहाड़ी पर एक आश्रम था जिसमें महात्मा जी रहते थे। जो गाँव से भिक्षा मांग कर आश्रम में रहने वालों की उदर पूर्ति करते थे। उसी गाँव में दो महिलाएँ रहती थी एक का नाम गंगा व दूसरी का नाम जमना था, गंगा सम्पन्न परिवार से थी। उसके किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी। जमना सामान्य परिवार की थी, मजदूरी करके पेट पालती थी। एक दिन आश्रम से महात्मा जी प्रातः भिक्षा लेने गंगा के घर गये। गंगा कई प्रकार के व्यंजन खा रही थी। महात्मा ने '**भिक्षां देही**' कहा तो गंगा ने २-३ बातें खरी-खोटी सुनाकर बड़-बड़ायी ओर महात्मा को १-२ दिन पुरानी सूखी बासी रोटी दी, महात्मा के कपड़ों की मांग पर उसने फटे-पुराने चिथड़े दे दिये। महात्मा तथास्तु कह कर जमना के द्वार पर गये। जमना ने महात्मा जी से आशिर्वाद लिया और ताजा रोटी वह बना रही थी तो उसने ताजा २-३ रोटी दी, कपड़ों की मांग पर उसने एक अच्छी साड़ी भी दे दी। महात्मा तथास्तु कह कर आगे बढ़ गये। देव योग उसी दिन शाम को भयंकर वर्षा हुई। पूरे गाँव में पानी की वजह से त्राही-त्राही मच गयी। गाँव वाले भाग कर पहाड़ी पर महात्मा के आश्रम में शरण लेने पहुँचे। गंगा व जमना भी वहाँ पहुँची। दोनों ही महात्मा के सामने गिड़-गिड़ाने लगी। महात्मा ने दोनों को आश्रय दिया। भोजन मांगने पर गंगा को उसका दिया हुआ सूखा बासी भोजन दिया एवं कपड़ों की मांग पर फटे पुराने उसने जो दिये थे वह दिये जबकि जमना को ताजी-ताजी रोटियाँ एवं उसकी दी हुई साड़ी दी।

अत: उक्त कथानक से यह शिक्षा मिलती है कि हमें दान अपनी नेक कमाई से दिल खोलकर देना चाहिए जैसा दोगे वैसा पाओगे। जो अपनी नेक कमाई से अच्छे मन से दान करता है ईश्वर उसे कई गुणा करके लौटाता है। जो खराब नीयत से देता है तो उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है।

विशेष: विद्वानों के कथानुसार धन की तीन गतियाँ होती है। पहली धन का अच्छे कार्यो में सदुपयोग (भोग) करें, दूसरी गति अपनी सामर्थ्यानुसार अधिक से अधिक पूण्य कार्य में दान करें, तीसरी गति धन का नाश कर देती है।

अत: हमें महर्षि दयानन्द के निर्देशानुसार अपनी नेक कमाई का दशांश दान करना चाहिये। वर्तमान भौतिकवादी युग में हम दशांश नहीं कर सकते तो कम से कम शतांश (सौवांश) तो अवश्य पुण्य कार्य में दान करना चाहिये। जो सज्जन सम्पन्न होते हुए भी दान-पुण्य नहीं करते हैं उनके धन की तीसरी गति होती है। अत: दिल खोलकर दान देना चाहिये।

-हीरालाल शर्मा, छोटी सादड़ी
चलभाष-९४१३०४५८३३

thearyasamaj.org

प्रयाग में संगम स्नान- संक्रामक रोगों से मुक्त करता है

-मोहनलाल मगो
पी-६५, पाण्डव नगर, दिल्ली

श्री प्रयाग राज को तीर्थों का राजा होने का गौरव प्राप्त है।

पुराणों में माघ मास में तीर्थराज प्रयाग में गंगा-यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी संगम में स्नान का बड़ा ही महत्व बतलाया गया है। पद्मपुराण में कहा गया है कि 'सरस्वती, यमुना और गंगा का जहाँ संगम है वहाँ स्नान करने वाला ब्रह्मपद को प्राप्त करता है। ऐसे तीर्थराज की जय हो।

इसी प्रकार कूर्मपुराण में भी कहा गया है कि गंगा-यमुना के संगम पर जो सुखे गोमय की अग्नि बना कर, पका भोजन सेवन करता है। वह सम्पूर्ण अवयवों से सम्पन्न, रोगरहित तथा पाँचों इन्द्रियों से युक्त होता है।

इस प्रकार संगम तट पर वास करने और संगम स्नान को **हमारे धर्म ग्रन्थों ने एहिक और पारलौकिक दोनों दृष्टियों से उत्तम बताया है। आज आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र भी हमारी इस पद्धति को मान रहा है। इस विषय में दैनिक हिन्दुस्तान दिनांक ०६ मार्च, २०१४ में प्रकाशित समाचार नीचे प्रस्तुत है:-**

संगम में डुबकी बचाएगी संक्रामक बीमारियों से वाराणसी

अगर आप टी.बी., डेंगु, स्वाईन फ्लू, चिकनगुनिया एवं टायफायड जैसी संक्रामक बीमारियों से बचना चाहते हैं तो संगम में डुबकी लगाइए। इसमें मौजूद सुपरबग जीवाणु इन बीमारियों के कारकों को नष्ट करने में सक्षम हैं। महाकुम्भ में संगम स्नान करने वाले कल्पवासियों पर हुए अध्ययन के बाद यह खुलासा किया गया है।

एस.एन.त्रिपाठी मैमोरियल फाउण्डेशन के महासचिव ने बताया कि २०१३ के कुम्भ के दौरान देश की छः समस्याओं के वैज्ञानिकों ने शोध किया था। इसके सार्थक परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों ने पाया कि सुपरबग ऐसे जीवाणु हैं, जिन पर औषधि का प्रभाव नहीं होता, लेकिन यह गंगा में प्राकृतिक वैक्सीनेशन का कार्य कर रहे हैं।

२०१३ के महाकुम्भ में प्रत्येक प्रमुख स्थान पर संगम स्थल से जल के सात सौ नमूने लिए गए। कल्पवास करने वाले एक हजार लोगों के रक्त के नमूनों की भी जाँच हुई।

पहले स्नान से अन्तिम स्नान के बीच लिए गए जल के नमूने एवं कल्पवासियों के खून के नमूनों की जाँच की गयी। जल के नमूनों में प्राकृतिक सूक्ष्म जीवाणु एवं सुपरबग पाये गये। वहीं रक्त के पहले दिन एवं अन्तिम दिन के नमूनों में जल में उपस्थित जीवाणुओं से मनुष्य की रोग प्रतिरोधक क्षमता में लगातार इजाफा पाया गया।

प्रयागराज के नदियों के संगम के चिकित्सीय गुण विश्व के किसी भी संगम में नहीं मिलते इसीलिये भारत विश्वगुरू था और अभी भी पूर्णतः हकदार है। ●

मित्रता

-डॉ. सुभाष नारायण भालेराव
'गोविन्द'
'अवन्तिका' ए-३८, न्यू नेहरु कॉलोनी,
ठाठीपुर, मुरार, ग्वालियर

मित्रता का मतलब
त्याग या बलिदान
मित्रता का मतलब
विश्वास या श्रद्धा
मित्रता का मतलब
जीवन का सत्य सच्चा स्वास
मित्रता को नहीं होती
जात या पात
मित्रता को नहीं होता
कौम या धर्म
मित्रता को होती है
केवल सुगंध, गंध
मित्रता का मतलब
प्यार और प्रेम
मित्रता का मतलब
सुख में सामने
वाले को हाथ देना
मित्रता का मतलब
दुख में सामने
वाले का हाथ लेना
मित्रता को नहीं
मर्यादा
मित्रता को होता है
केवल फायदा या लाभ
मित्रता का मतलब
सुख और दुख में
एकता में भीगा नाता
मित्रता का मतलब
दीपक के अन्दर
हमेशा भगवान के सामने
जलती हुई बाती
मित्रता का मतलब
जन्मांतरी का साथ
आश्वास
मित्रता का मतलब
कभी ना
खत्म होने वाली गांठ
मित्रता का मतलब
जीवन जीने का
सच्चा स्वाभिमान
मित्रता को होती है
इन्द्रधनुषी सप्त रंग
मित्रता को होती है
हर सिंगार की सुगंध ●

thearyasamaj.org

वेदों के मर्मज्ञ पं. शिवनारायण जी उपाध्याय की दृष्टि में वैदिक संसार

प्रिय बन्धु श्री सुखदेव जी शर्मा,

नमस्ते। आज ही डाक से वैदिक संसार माह अगस्त २०१४ की पत्रिका प्राप्त हुई। देख कर मन प्रसन्न हो गया। पत्रिका का मुख पृष्ठ ही आकर्षक है। मुख पृष्ठ पर ही आपने भगवान् श्री कृष्ण के विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती के उद्गार दिए हैं। दोनों के मनभावन चित्र भी है। पत्रिका में ३० से भी अधिक विद्वानों के लेखों को स्थान देना आश्चर्यजनक है। आर्य समाज ही नहीं अन्य समाजों की भी कोई पत्रिका इतने विद्वानों को स्थान नहीं दे पा रही है। सामान्यतया पत्रिकाओं में ५-७ लेख से अधिक लेख नहीं मिलते हैं। मेरे पास आर्य समाज, गायत्री परिवार एवं कई दूसरे समाजों से लगभग २५ पत्रिकाएँ प्रतिमाह आती है परन्तु उनमें से कोई भी पत्रिका ''**वैदिक संसार**'' के द्वारा दिए गए ज्ञान संकलन में उसका सामना करने में समर्थ नहीं है। पत्रिका के प्रत्येक लेख पर मैं टिप्पणी करना चाहूँ तो एक बड़ा लेख बन जाएगा। इसलिए मैं जिन लेखों ने मुझे अधिक प्रभावित किया इन पर विशेष रूप से अपने विचार व्यक्त कर रहा हूँ। दूसरे विद्वानों का भी अनादर करने की मेरी कोई दुर्भावना नहीं है। इसके विषय में भी संक्षिप्त रूप में अपनी भावना व्यक्त कर दूँगा। सम्पादकीय लेख अत्यन्त प्रभावशाली है। इसमें मुख्य रूप से इस विषय पर विचार किया गया है कि प्रकृति का स्वभाव क्यों बदल रहा है? सम्पादक जी ने इसका मुख्य कारण '**पर्यावरण प्रदूषण**' को माना है जो उचित ही है। दैनिक यज्ञों का लोप हो जाना और भौतिकता का प्रभाव बढ़ जाना भी इसका एक मुख्य कारण है। फिर हमारी शिक्षा नीति भी इसे प्रभावित कर रही है। मेरा लेख आत्रेयी तथा स्वामी दयानन्द और विज्ञान में मेरा अपना तो कुछ भी नहीं है और संभवत: मैं वेद को भी ठीक से प्रस्तुत कर पा रहा हूँ अथवा नहीं? इस पर मुझे स्वयं पर ही संदेह है। **वीर दुर्गादास राठौर और ''समर्थ रामदास''** क्रमश: पृथ्वीवल्लभ देव सौलंकी तथा स्वामी उमाशंकर जी सांख्यायन द्वारा लिखित इतिहास से सम्बन्धित लेख है। दोनों ही औरंगजेब के शासन काल में हमारे धर्म और संस्कृति की रक्षा करने में सफल रहे हैं। दोनों ही लेख लघुकाया में होते हुए भी इन दोनों महापुरुषों की देश को दी गई देन को बताने में सफल रहे हैं। दोनों लेखक धन्यवाद के पात्र हैं। प्राचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी तो वर्तमान में आर्य जगत् के गौरव हैं। मैं गत वर्ष जून में एक सप्ताह तक उनके अमृतमय उपदेशों का पान कर चका हूँ। यज्ञ की महत्ता पर कौन दूसरा उनसे अच्छा लिख सकता है। उन्होंने यज्ञ के विषय में वैदिक शास्त्रीय प्रमाणों की झड़ी लगा दी है। कृपालसिंह जी वर्मा का लेख '**महर्षि यास्क द्वारा सोम ऋचा की वैज्ञानिक व्याख्या**' एक शास्त्रीय लेख है। मेरा व्याकरण शास्त्र का अध्ययन नहीं है। सोम शब्द के सामवेद में कई अर्थ लगाए गए हैं। लेखक ने सोम को सौर ऊर्जा की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। वे धन्यवाद के पात्र हैं। मेरे अनुज समान श्री बाबूलाल जोशी वैदिक वांङ्मय पर वर्षों से लगातार अपनी कलम चला रहे हैं और उन्होंने समाज को वेद विज्ञान से परिचित कराया है। उन्होंने '**उद्धारक सोम**' शीर्षक से ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त २५ की ऋचा ११ का पद्यानुवाद किया है जो प्रभावी बन पड़ा है।

आचार्य अग्निमित्र कोटा निवासी ही है। ये वैदिक वाङ्मय पर अभी लिखना प्रारम्भ ही कर रहे हैं। इन्होंने रक्षाबन्धन पर शास्त्र की मान्यता लेख में उपस्थित की है। लेख पठनीय है। श्री मनमोहन आर्य का लेख '**स्वामी दयानन्द ने वेद प्रचार को क्यों चुना?**' भौतिक लेख है। पठनीय भी है। डॉ. गंगाशरण आर्य का लेख, '**आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते**' ज्ञान के अमूल्य होने को सिद्ध करता है। फिर प्रो. उमाकान्त उपाध्याय तो वर्तमान में आर्यसमाज के वयोवृद्ध विचारकों में नामित है। उनका लेख '**संसद की दीवारों के संदेश**' लेख में उन्होंने बताया है कि संसद की दीवारों पर वेद के कई वाक्यों को स्थान मिला है जैसे राज्य सभा के प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी है-'**अहिंसा परमो धर्म:**'। संसद की दीवारों पर जहाँ भी भारत का राजचिन्ह अंकित है लिखा है-'**सत्यमेव जयते**'। इसी प्रकार '**सत्यं वद धर्मं चर एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति**' इसी प्रकार महाभारत के भी कई वाक्य संसद की दीवारों पर अंकित हैं। प्रो. उमाकान्त जी को धन्यवाद।

रामफल सिंह आर्य का लेख-'**देश की सेवा कौन करेगा?**' एक पठनीय लेख है इसमें लेखक ने अपने विचारों को पर्याप्त विस्तार दिया है। श्री शिवकुमार गोयल भक्त रामशरण दास जी के सुपुत्र थे। उनका लेख '**अंग्रेजी भाषा की दासता कब तक?**' प्रेरक लेख है। वास्तव में 'अंग्रेजी की दासता' देश पर कलंक है और यह कलंक अब और भी अधिक गहराता जा रहा है। श्री शास्त्री दीनानाथ गौतम की कविता '**हर गांव बढ़े हर पौर सजे**' उनकी देश के लिए एक भावना है। अस्तु। '**इतिहास की पुनरावृत्ति** लेख के लेखक डॉ. श्रीलाल नेत्र विशेषज्ञ हैं। लेख पठनीय है। श्री रमेशचन्द्र भाट ने अपने लेख **संस्कृत भाषा** में संस्कृत की महत्ता प्रतिपादित की है जो उचित है।

स्वामी शान्तानन्द जी ने '**संस्कृत भाषा की महानता एवं राष्ट्रीय ध्येय**' लेख में भारत में विभिन्न राष्ट्रीय स्थलों पर अंकित संस्कृत वाक्यांशों को बताया है। श्री मोहनलाल जी मगो का लेख, '**तुर्की भाषा से नागरी लिपि तक हिन्दी की यात्रा**' नि:सन्देह एक उत्कृष्ट लेख है।

'**विश्व भाषा के रूप में हिन्दी-नए प्रतिमान**' डॉ. प्रभुलाल चौधरी का लेख पठनीय है। श्री खुशहालचन्द्र आर्य का लेख '**गांधी जी की भूलों से देश को असीमित हानि हुई है**' लेख विचारणीय है। मेरी दृष्टि से महात्मा गांधी मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति पर चलते थे और वह असफल रही। उसके स्वरूप देश का विभाजन हुआ। फिर देश का विभाजन दो राष्ट्रों के सिद्धान्त पर हुआ था फिर भी उन्होंने मुसलमानों को पाकिस्तान जाने से रोका उसका दुष्परिणाम आज सामने है। लेखक धन्यवाद के पात्र हैं।

आचार्य रामगोपाल ने अपने लेख में यह नहीं बताया कि वे देवता के क्या आशय रखते हैं। वैदिक वाङ्मय में दो तरह के देव हैं (१) प्राकृतिक शक्तियाँ जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल आदि (२) सजीव देव में माता-पिता, गुरु और ऋषि आते हैं। इनकी पूजा भी दो तरह से होती है। यदि वे देव से अर्थ भगवान् राम, श्री कृष्ण, विष्णु, ब्रह्मा, शिव आदि से लेते हैं तो उनका चरित्र हनन पुराणों के द्वारा हुआ है और उसके कारण लज्जा से हमारा सिर झुका है। त्यौहार और पर्व भी दो तरह के हैं (१) महापुरुषों के जन्मदिन जैसे जन्माष्टमी, राम नवमी बुद्ध पूर्णिमा आदि (२) ऋतु के सम्बन्धित पर्व जैसे दशहरा, दिपावली, होली। पर्व पद्धति में इन पर अच्छा प्रकाश छाला है। अस्तु।

पाठकों की मांग को देखकर मैंने ३३ ऋषिकाओं के जीवन व कार्य पर संक्षिप्त लेख दिए हैं। एक-दो लेख तो हाथ से लिखे हुए ही भेज दूंगा ताकि आपका कार्य चलता रहे। मेरे पास इस समय टाइप होने के लिए १२५ लेख पड़े हैं, इन्हें टाइप होने में एक वर्ष तक लग सकता है।

अन्त में 'वैदिक संसार' परिवार के लिए शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

- आपका शिवनारायण उपाध्याय

thearyasamaj.org

मुझे हिन्दू होने पर गर्व है पर क्यों?

-आचार्य दार्शनेय लोकेश
सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२३५४०३६

मित्रों! फेसबुक पर आपने उपरोक्त प्रश्न और उसके उत्तर में देश के एक ख्याति नाम ज्योतिषी व्यक्ति के बोल पढ़े होंगे। किसी का नाम लेकर अपयंश उच्छालना मेरा ध्येय नहीं है सिर्फ इसलिए यहाँ इन महानुभाव का नाम नहीं दे रहा हूँ।

मुझे जो उनसे कहना है वह ये है कि आपको ''हिन्दू'' शब्द और भारतीय संस्कृति का ठीक-ठीक ज्ञान तो क्या, शायद संज्ञान भी नहीं है। हम कौन थे और क्या हो गए हैं, में से आपको केवल ये पता है कि 'हम क्या हो गये हैं' किन्तु अफसोस है, श्रीमान जी, कि आपको ये पता नहीं है कि हम कौन थे?

आप कहते हैं, ''**सृष्टि के प्रारम्भ काल सनातन हिन्दू धर्म ने सबसे पहला ज्ञान मानव जाति को ....।**''

जी नहीं, सृष्टि के प्रारम्भ काल में सनातन हिन्दू धर्म नाम का कोई धर्म था ही नहीं! सृष्टि के आरम्भ में केवल वेद थे और उसकी प्रतिबद्धताओं के साथ जुड़ी आचार संहिता को बाद में वैदिक धर्म कहा जाने लगा। शुरू में ही कोई धर्म '**सनातन**' कैसे कहा जा सकता था। किसी धर्म विशेष की दीर्घ कालिक संजीविता के कारण आपको उसे, एक अन्तराल के बाद से ही, सनातन कहना पड़ता है। '**सनातन**' गुणवत्ता आधारित विशेषण है **श्रीमान! हिन्दू पहिचान तो मुगलों की दी हुयी एक समकालिन पहचान मात्र है। क्या आपको पता है कि-**

वेदों, ब्राह्मण एवं संहिता ग्रंथों, उपनिषदों, छः के छः दर्शन शास्त्रों, निरूक्त, महाभाष्य, अष्टाध्यायी, रामायण, महाभारत-गीतादि और उसके भी बाद के सर्वाधिक अर्वाचीन ग्रन्थ रामचरित मानस में कहीं भी हिन्दू शब्द नहीं देखा गया है?

लगता तो ऐसा है कि आप एक भावनात्मक खेल की पारी से जुड़कर अपने को प्रचारित करने में ही केंद्रित हैं भले ही आपका अध्ययन काफी कमजोर है। आपके लेख में आई हुई बहुत सी बाते हैं जिन पर टिप्पणी करने को मन करता है किन्तु मुझे अपना समय नहीं गंवाना है। मुझे दीख रहा है कि जब इतनी बड़ी उम्र तक आप ये भी नहीं सीख पाये हैं कि दुर्भाग्य से '**आर्यावर्त न सही हमारे इस वैदिक धरती खण्ड को भारत**' तो कहा ही जाना चाहिए, तो सचमुच आपको कुछ अब सिखाया भी नहीं जा सकता। किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण (सचमुच के, ना कि तथाकथित जाति के) से इतना तो पूछ ही सकते हैं कि संकल्प मन्त्र में हम ''**आर्यावर्तान्तर्गते पूण्य भूमौ भरखण्डे भारतवर्षे**'' की जगह-

'**हिन्दुस्ताने या हिन्दुस्थाने जो भी आपको अधिक पसन्द हो**' क्यों नहीं पढ़ते या कहते?

चाहे जैसे भी, आज सरकारी काम काज में ही नहीं सर्वत्र हिन्दू शब्द धर्मवाची बन चुका है ना कि देशवाची। आपको धर्म की जगह पर लिखना होता है कि आप हिन्दू हैं या कि मुस्लिम हैं या कि ईसाई या ....। यदि आप हिन्दू हैं तो आपको ये भी लिखना होता है कि आप हिन्दू ब्राह्मण हैं या राजपूत या ....।

आदरणीय मोहन भागवत जी हमारे बहुत बड़े राष्ट्र चिंतक हैं। इसमें शक भी नहीं। आशा करनी चाहिए, ये महापुरुष इस तथ्य को अन्तरित करके समझा सकेंगे कि क्यों हम सब भारतीय नहीं हैं? क्यों हमको भारतीय कहलाने में गौरव नहीं है। क्या है जो हमें हिन्दू कहलाने में मिल जाएगा और क्या है जो हम स्वयं को भारतीय कहलाने में खो देंगे? हाँ, ये बात अवश्य है कि धर्म के स्थान पर जिन्हें आज हिन्दू शब्द से चिन्हित किया जाता है उनको '**वैदिक**' शब्द से ही पहचान मिलनी चाहिए ना कि सनातन या आर्य या पौराणिक आदि। ज्ञातव्य है की आर्य भी एक मानव प्रजाति है धर्म नहीं। पौराणिक एक चिंतन धरा है धर्म नहीं।

आपने ''जन्माष्टमी १७ अगस्त को ही मनाएँ। जाने तिथि का गणितीय आधार।'' की बात को रखते हुए-

लोगों को मार्गदर्शन पूर्वक एक जानकारी दी है, ''अगर कोई तिथि सूर्य उदय के बाद प्रारम्भ होती है तथा सूर्य से पहले समाप्त हो जाती है तो वह तिथि क्षय कहलाती है। इस बार सप्तमी तिथि का क्षय हो रहा है। तथा अष्टमी की वृद्धि हो रही है। अष्टमी तिथि का प्रारम्भ १७ अगस्त को सूर्य उदय से पहले हो रहा है। तथा पूरी रात अष्टमी ही चलेगी।''

यहाँ पर आपके यह कहने पर कि ''**इस बार सप्तमी तिथि का क्षय हो रहा है।**'' मुझे बहुत अफसोस है। ना मालूम कि आप कौन सा पंचांग उपयोग में लाते हैं? मुझे तो आपके ज्योतिष ज्ञान पर भी असन्तोष है।

मेरा आशय यह नहीं है कि **श्री कृष्णजन्माष्टमी १७ अगस्त को थी या नहीं थी। मुझे तो यह कहना है कि जो भी व्यक्ति कहे कि १७ अगस्त को सप्तमी तिथि एक क्षय तिथि थी तो उसको अपने ज्योतिष गणित या कम से कम पंचांग देखने की योग्यता को दुरूस्त करना ही होगा।** जब प्रत्यक्ष तथ्यों में आपका ये हाल है तो फलित ज्योतिष में आप लोगों को कैसा मार्गदर्शन देते होंगे ये तो भगवान ही जानता होगा। **फलित तो वैसे भी बे सर पैर का है। ९० प्रतिशत तो वाक् चातुर्यता का ही करिश्मा है।**

ईश्वर ने मुझे भी ज्योतिषीय तथ्यों के गणितीय आधार का ज्ञान दिया हुआ है। आपको तर्क देना बेकार है परन्तु इतना आप जान लें कि-

१. उस दिन कम से कम राष्ट्रीय राजधानी या वाराणसी के लिये सप्तमी एक क्षय तिथि नहीं थी। .... और यही सारे भारत के लिए मान्य भी होनी चाहिए। वहाँ सप्तमी सूर्योदय व्यापिनी थी ना की अष्टमी जैसा की आप कह रहे हैं।

२. जिन स्थानों पर सप्तमी सूर्योदय व्यापिनी नहीं थी वहाँ ये बात १६ अगस्त के सन्दर्भ की हो सकती है १७ अगस्त के सन्दर्भ की नहीं। उन स्थानों पर भी उस दिन सूर्योदय से लेकर वांछित निशीय व्यापिनी तक (उससे आगे भी) अष्टमी ही अष्टमी थी। तब सप्तमी के जिक्र करने की कोई तुक ही नहीं बनती।

हमारा धर्म '**सनातनधर्म**' नहीं '**सनातन वैदिक धर्म**' नाम से जाना जाता है। मेरी बात सत्य किन्तु अप्रिय हो सकती है, इसके लिए आप एवं सभी मित्रों से क्षमा चाहता हूँ।

जय श्री राम! जय श्री कृष्ण! जय भारत! जय भारती! ●

thearyasamaj.org

समस्याएँ और भी हैं

भारतीय सनातन धर्मध्वजा के संवाहक पूज्य महाराज श्री स्वरूपानंद सरस्वती, जगदगुरु शंकराचार्य जी ने शिर्डी के सांई बाबा की पूजा, आराधना आदि हिन्दू धर्म व्यवस्था के विपरीत बताकर सनातन धर्म की रक्षा का आह्वान करते हुए सांई बाबा की पूजा को नहीं करने का धर्मादेश (फतवा) जारी किया, जिससे सम्पूर्ण हिन्दू समाज में खलबली मच गयी।

जहाँ एक धर्म की रक्षा का प्रश्न है, वहाँ पर और भी अन्य कई समस्याएँ ऐसी भी हैं, जिन पर आज ध्यान दिया जाना अनिवार्य कर्तव्य है। हमारे धर्म ध्वजा धारण करने वाले धर्माचार्यों को क्या सनातन धर्म में कन्या भ्रूण हत्या का ध्यान नहीं आया। इस कुकृत्य के लिए सनातन धर्म ने कौन सा कदम उठाया। **आज लाखों करोड़ों ऐसे सनातन मतावलम्बी हिन्दू हैं, जो कन्या को जन्म से पूर्व ही मार डालने का साहस रखते हैं। ऐसे नरपिशाचों के लिए क्यां स्वामी स्वरूपानंद जी कोई धर्मादेश फतवा जारी कर कन्याओं के जीवन की रक्षा करेंगे? क्या उस हिन्दू को नरकगामी घोषित करेंगे, जो कन्या भ्रूण हत्या करता व करवाता है।**

आज सनातन धर्मानुयायियों में असंख्य हिन्दू परिवार ऐसे भी हैं, जो दहेज के न मिलने पर बालिकाओं को जीवित जला देते हैं, क्या हमारे पूज्य **आचार्य स्वरूपानंद जी को यह महाघातक सनातन धर्मावलम्बियों में नहीं दिखाई पड़ता। आचार्य जी के तो हजारों लाखों शिष्य व अनुयायी हैं, उनमें से कई कन्या भ्रूण हत्या के पापी, दहेज लोभी राक्षस हैं। क्या उनकी पहचान कर आचार्य जी ने उनको धिक्कारवाद कभी दिया है। आज सनातन धर्म में बाल हत्या, बाल विवाह, जाति भेद, छूआछूत का जो झंझावात व्याप्त हो रहा है, क्या उसकी तरफ हमारे आचार्य जी का ध्यान नहीं गया जिन तत्वों को सनातन धर्म से दूर करना है, उन्हीं तत्वों के अनुसरण करने वाले असंख्य शिष्यों की क्या आपने जांच पड़ताल करवाकर उन्हें कभी धिक्कारवाद दिया है?**

हमारे सनातन धर्म में बाँस का जलना अशुभ माना जाता है, लेकिन आज उसी सनातन धर्म के अनुयायी उद्योगपति, व्यवसायी व श्रीमंत हजारों टन की सभी तिलियों की अगरबत्तियों का व्यवहार पूजा पाठ आदि के काम में कर रहे हैं। **शास्त्र के अनुसार जिस जगह पर बाँस जलता है, वहाँ पर मानसिक तनाव, गृहकलह, दरिद्रता बीमारियाँ व अनेक प्रकार के संकटों का आगमन होता है।**

क्या हमारे पूज्य विद्वान् आचार्य जी का ध्यान कभी इस महा अपकर्म की ओर गया। **स्मरण रहे, जहाँ बाँस जलता है, वहाँ पर वंश का क्षय माना जाता है।** इस ओर आज तक जगत् के गुरु का ध्यान नहीं गया, जबकि धर्मादेशानुसार अगरबत्ती के स्थान पर धूप, गुगल का प्रयोग उचित माना गया है। क्या इस समस्या का धर्म की आज्ञा मान लिया गया है।

आप किसी भी गुरुद्वारे, चर्च, मस्जिद या किसी अन्य तथाकथित धार्मिक स्थान पर जाएंगे, तब आपको वहाँ की स्वच्छता, शांति व वातावरण आश्चर्यचकित कर देगा, लेकिन हमारे तिर्थों पर जितनी गंदगी, प्रदूषण व अपविष्ट सनातन मतावलम्बियों द्वारा छोड़ा जाता है, उससे तीर्थ व तीर्थजल का प्रदूषण प्राणघातक हो जाता है। आज यदि सनातन धर्म को बचाना है तो पहले इन अवरोधों को दूर करना होगा, लेकिन सनातन धर्मावलम्बी दोहरा चरित्र जीते हैं। जिस श्री गणेश व देवी प्रतिमा के समक्ष वे पूजा पाठ, मंत्रोच्चार, नाच, गाना, उछलकूद करते हैं, उसी पूज्य देवता की प्रतिमा को चाहे जहाँ फेंक आते हैं, अन्य धर्मावलम्बी यह देख सनातन धर्म की हंसी करता है। अतः स्वामी स्वरूपानंद जी केवल सांई बाबा की पूजा के विरोध से काम नहीं चलेगा, सनातन धर्म को तो दूसरे घुन लग चुके हैं, उनकी ओर आपका ध्यान कब जाएगा?

-पं. ओमप्रकाश शर्मा भारद्वाज

विश्वकर्मा और उनकी सन्तान

- नरेन्द्र शर्मा 'अल्पज्ञ'
लक्ष्मी मुकुन्द, १०९-बलदेव नगर
जोधपुर, राजस्थान
चलभाष-९४१४०७२१०९

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्मणः।
यस्यां मीयन्ते स्वरवः पृथिव्यामूर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्।
स नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना।। अथर्व. १२/१/१३

भावार्थ - जिस भूमि पर विश्वकर्मा (सब काम में चतुर) लोग वेदि (यज्ञ स्थान) को घेर लेते हैं, जिस भूमि पर यज्ञ (देवपूजा, संगतिकरण और दानव्यवहार) को फैलाते हैं। जिस भूमि पर ऊँचे और उजले विजय स्तम्भ आहुति (पूर्णाहुति, यज्ञपूर्ति) से पहले गाड़े जाते हैं। वह बढ़ती हुई भूमि हमें बढ़ाती रहे।।

इस मन्त्र में परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि **'विश्वकर्मा लोग जिस भूमि पर ऊँचे-ऊँचे और उजले विजय स्तम्भ गाड़ कर यज्ञ वेदि बना कर यज्ञ करते हैं, वह भूमि उन्हें बढ़ाती रहे'।** वैसे भी जो मनुष्य यज्ञ करता है उसकी बढ़ोत्तरी होती ही है, यज्ञ का तात्पर्य देव पूजा, (पूजा का अर्थ यथा-योग्य सत्कार से है न कि ढ़ोल-नगाड़े बजा, दीपक दिखा, घण्टी बजाना) संगतिकरण और दान है। अर्थात् देवों के सानिध्य में दान दिया जाए तो समृद्धि अवश्य आएगी। यहाँ आया विश्वकर्मा शब्द उन विशेष लोगों के लिए आया जो सब कामों में चतुर हैं, अर्थात् सभी प्रकार के काम करना जानते हैं।

सारे काम करने में एक और एक मात्र परमात्मा ही सक्षम है तथा वेद में परमात्मा के कई नाम उसके गुण विशेषण के आधार पर आए हैं। वेद में आए विश्वकर्मा शब्द परमात्मा के विश्व निर्माण को दर्शाता है। इस कार्य में वह परमात्मा किसी की सहायता नहीं लेता है। सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, पृथिवी और उनके उपग्रह चन्द्रमा आदि के साथ-साथ इस पृथिवी पर जल-वायु भूमि-पहाड़ समुद्र-तालाब नदी-नाले इत्यादि का निर्माण कर, जीव-जन्तु पेड़-पौधे वनज, पालतू पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि के बाद मनुष्य को उत्पन्न कर वेद ज्ञान देने में परमात्मा ना तो किसी की सहायता लेता है और ना ही अन्य कोई सक्षम है। लेकिन लोक व्यवहार में कोई मनुष्य परमात्मा के इन गुणों में से किसी एक गुण की सामीप्यता

thearyasamaj.org

करता है, तो उसे भी उसी विशेषण नाम से पुकारा जाता है। इसीलिए इस संसार के मनुष्यों में जो सब कामों में निपुण हो उसे विश्वकर्मा, ऐश्वर्यवान (जिस का सत्य विचार, शील, ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य हो) को ईश्वर, समग्र ऐश्वर्ययुक्त वा भजने योग्य को भगवान, सब का पालन करने से प्रजापति आदि कहते हैं।

इस वेद मन्त्रानुसार विश्वकर्मा वंशियों को यज्ञ करने में निपुण होना चाहिए। तभी हमें यज्ञ से नाना प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, अन्यथा न हम और न संसार के अन्य प्राणी लाभान्वित होंगे। निपुणता छोड़ आज हम दिखावे के लिए भी यज्ञ नहीं कर सकते, वेद का पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना छोड़ दिया। निपुण तो आज हम अपने पैतृक कार्य में भी नहीं, फिर भी हम अपने आप को विश्वकर्मा वंशी मानने का श्रम करते हैं। उन सब कामों से मुक्ति पाने के लिए विश्वकर्मा के पांच पुत्र की कथा तीन-चार प्रकार से जोड़ रक्खी है। इन सभी विश्वकर्माओं की वंशावली अलग-अलग अर्थात् पिता, पितामह, प्रपितामह आदि के नाम पृथक-पृथक लेकिन संतति एक जैसी सभी के वे ही पाँच पुत्र मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ और जन्म तिथि भी अलग-अलग। सभी अपने आप को शास्त्र सम्मत शुद्ध कहते हैं। ये सभी पुराणों की कथाओं का एक ओर विश्वास करते हैं, तो दूसरी ओर इन कथाओं पर भ्रमित करने का दोष लगाते हैं। जिससे हम सब काम करने से बच जाएँ और वेदज्ञ कर्म से भी निजात पा लें।

मेरी दृष्टि में इस चराचर जगत् को रचने वाले परमात्मा का नाम विश्वकर्मा है और वह ही सम्पूर्ण जगत् के प्राणियों का पालन करने से सबका पिता अर्थात् परमपिता है। इस कारण सभी प्राणी उस परमात्मा की संतान है। ●

अंगूठे की महिमा

-विनोद गोयल
वृन्दावन टाउनशीप, हरणी रोड़, बड़ोदा (गुज.)
चलभाष-०९८२५३१५१२०

अपनी अँगुलियों पर दृष्टि डालिए। अँगुलियों का राजा अँगूठा है। हाथ की सारी चाबी अँगूठे के हाथ में रहती है। अन्य चारों अँगुलियाँ मिलकर भी किसी वस्तु को दृढ़ता से नहीं पकड़ सकती। जब तक वे अँगूठे का सहयोग नहीं पाती हैं सभी सबल होती हैं, तभी हाथ की मुठ्ठी बँधती है और तभी आपकी मुठ्ठी में कोई वस्तु आती है। अँगूठे को अलग खड़ा रखकर केवल चारों उँगलियों को मिलाकर किसी को एक मुक्का लगाइए तो उसे कुछ भी चोट न लगेगी, किंतु अँगूठे का आश्रय लेरक मारिये तो आपकी पूरी शक्ति केन्द्रित होकर प्रहार करेगी।

अँगूठे की बड़ी महिमा है। उसी से राजतिलक होता है, उसी से आप लिखते हैं और उसी से किसी वस्तु को पकड़ते हैं। यदि अँगूठा न हो तो एक अक्षर भी लिखना कठिन होगा। वह न हो तो आप एक लोटा भी सीधे नहीं उठा सकते। अँगूठा जब चेतन्य होकर खड़ा हो जाता है, उस समय चारों अँगुलियाँ सारी शक्ति लगाकर भी हथेली को ढँककर नहीं रख सकती। इतना प्रभावशाली अंग मनुष्य के प्रभाव और पुरूषार्थ का निश्चय ही प्रतीक होगा।

एक विद्वान् ने मानव-परीक्षा की एक अच्छी युक्ति बताई है। मुठ्ठी बाँधने पर जिसका अँगूठा चारों अँगुलियों के ऊपर रहता है, वह मनुष्य आत्मविश्वासी, धैर्यवान, चेतनावान, शक्तिसम्पन्न, स्वाभिमानी, दृढ़निश्चयी और साहसी तथा क्रियाकुशल होता है। जो व्यक्ति अँगूठे को अँगुलियों के बीच में रखकर मुठ्ठी बाँधता है, वह भीरू, साहसहीन, निर्बल, सन्देहग्रस्त, आलसी, अकर्मण्य, परावलम्बी और चेतनाहीन तथा चंचलचित होता है। इसकी आप स्वयं परीक्षा करके देखिए। अँगूठे को ऊपर रखकर मुठ्ठी बाँधने से हाथ ही में नहीं, मन में दृढ़ता आती है, नवीन स्फूर्ति आती है और एक प्रकार का आत्मबल अनुभूत होता है। अँगूठे के अंदर रखने से मुठ्ठी कसकर नहीं बाँधी जा सकती। इस अवस्था में मन भी ढीला रहता है और अँगूठे के बँधने से सारी आत्मा बँधी-हुई-सी लगती है। अतएव स्पष्ट है कि अँगूठा हमारी शक्ति का द्वारपाल है और अपने स्थान का सरदार। यदि बच्चे अँगूठे को उँगलियों से दबाकर रखते हों तो समझिए कि वे निकम्मे होंगे। यदि आप घरेलू काम के लिए परम स्वामिभक्त सेवक चाहते हों तो ऐसे आदमी को लीजिए, वह कभी स्वतंत्र मनोवृत्ति का न होगा। यदि आप महत्वपूर्ण कार्य के लिए किसी व्यक्ति की खोज में हो तो ऐसे व्यक्ति को देखिए जो मुठ्ठी बाँधना जानता हो।

मनुष्य के अंगूठे में जन्म से ही विशेषताएँ होती हैं। एक विशेषता तो यह होती है कि प्रत्येक व्यक्ति के अँगूठे की रेखाएँ भिन्न होती हैं। इसलिए सरकारी कागजों पर अँगूठे के निशान लिए जाते हैं। पर अँगूठे की रेखाएँ सदैव एक-सी रहती हैं। यही कारण प्रमाण है कि अँगूठा हमारी स्थायी व्यक्तित्व का सच्चा प्रतीक होता है। व्यास के मत से मनुष्य की सूक्ष्म देह अथवा आत्मा अंगूठे के बराबर होती है।

अब अँगूठे की बनावट पर संक्षेप में इतना जान लीजिए। अँगूठा न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा होना अच्छा माना जाता है। बहुत बड़े अँगूठेवाला उच्छृंखल और असहनशील होता है। छोटे अँगूठे वाला दयाहीन, मन्द, अल्पधी और संकीर्ण विचारों का होता है। वह सुविभक्त अर्थात् उँगलियों से सुदूर रहे तथा स्वतंत्र एवं प्रभावशाली प्रतीत हो तो मनुष्य की श्रेष्ठता का बोध होता है। अँगुलियों के बहुत निकट और हथेली से सटा हुआ होने पर वह किसी व्यक्ति की अयोग्यता प्रकट करता है। अँगूठा इतना बड़ा होना चाहिए कि वह मुठ्ठी बाँधने पर बीच की अँगुली की गाँठ के ऊपर जाकर उसके ठीक से दबाकर पकड़ सके। वीर स्वभाव के मनुष्य का अँगूठा नीचे स्थूल, बीच में तलवार की धार-सा उभरा हुआ और ऊपर पीछे की ओर कुछ झुका हुआ किंतु मांसल होता है। मूर्ख ही वह व्यक्ति भीतर से क्रियाशील और उत्साही होगा। जिसका मूल भाग पतला, ऊपर का अंगुष्ठ भाग स्थूल होता है वह निर्बल होता है।

अन्त में, हम पुनः कहेंगे कि अंगों की बनावट को ही सर्वस्व न मान लेना चाहिए। उनका सांचा न बदले यह ठीक है, पर उनका संस्कार प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है और मुख्य बात यह है कि मनुष्य अपनी आत्मा को प्रबल बनाकर शारीरिक असमताओं के रहते हुए भी अपना एक ऊँचा व्यक्तित्व बना सकता है।

अविश्वसनीय काम करने के लिये
असंभव काम करने का सपना देखना होगा ●

thearyasamaj.org

कर्मफल सिद्धांत-कुछ अनसुलझे प्रश्न

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर
२२, नगरनिगम क्वाटर्स, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
दूरभाष- ०७५१-२४२५९३१
ई.मेल. - khullar2010@gmail.com

आजकल सभी चैनलों पर कश्मीर में जल-प्लावन प्रलय के भयंकर दृश्य दिखाए जा रहे हैं। मैं भी देख रहा हूँ। तीनों सेनाओं की सम्मिलित टुकड़ियों के प्रयास से हजारों लोगों को प्रतिदिन बचाया जा रहा है। समाचार केवल श्रीनगर और जम्मू के आ रहे हैं। बाकी के लिये कहा जा रहा है कि १२२० ग्रामों में से ४५० ग्राम बिलकुल नेस्तनाबूद हो गये हैं। उनका अस्तित्व मिट गया है। जन-धन की हानि का आंकलन करने का अभी समय नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वायुयान द्वारा स्थिति का आंकलन किया और एक हजार करोड़ की सहायता राशि की घोषणा की। कोई खबर नहीं है कि इस घोषणा से पूर्व उन्होंने केबिनेट की मीटिंग बुलाई अथवा नहीं। रक्षामंत्री श्री अरूण जेटली मुम्बई में अस्पताल में भर्ती थे। प्रधानमंत्री जी ने सशस्त्र सेनाओं को तत्काल राहत कार्यवाही करने का आदेश दिया और बिना समय खोये सेना इस काम में जुट गई। श्री मोदी जी के काम करने का तरीका तो अब सबके समझ में आ गया होगा। विपक्ष को भी समझ में आ गया। खैर, राजनीति से मुझे क्या लेना देना।

रात तीन बजे नींद खुल गई। घड़ी में समय भी देखा। सोचा सो जाऊँ। अभी क्या करूँगा। मस्तिष्क सक्रिय हो चुका था बाढ़ से निकाली गई १०-१२ साल की लड़की से टी.वी. संवाददाता ने पूछा-तुमने क्या देखा? उसने कहा-लाशों के ढेर बहे जा रहे थे और पीड़ा से उसकी मुख मुद्रा बिलकुल बदल गई। अन्य लोगों ने बताया कि उन्होंने अपने बच्चों को जलप्रवाह में बहते देखा है। अनेक शव पेड़ों पर लटके हुए हैं। बचावकार्य दिन-रात चल रहा है जो ११ सितम्बर २०१४ तक सेना द्वारा १ लाख १० हजार मानव जीवन बचाया जा सका है। छः लाख अभी भी बाढ़ में फंसे हुए हैं।

त्रासदी के दो पक्ष हैं। एक तो वे जिन्हें जल समाधि मिल गई। दूसरे वे जो बच गये। जम्मू-कश्मीर की मूल आबादी के अतिरिक्त देश-विदेश से आये हजारों पर्यटक भी हैं, जिनके परिवार, समाचार, हाल-चाल जानने के उत्सुक हैं और संचार व्यवस्था ठप्प हो जाने से समाचार भी नहीं मिल रहे हैं। उनकी भी भूख-प्यास, नींद गायब हो गई है।

सम्पूर्ण क्षेत्र में १५ से २० फीट तक पानी भरा है। दो तीन मंजिलें मकानों की छतों पर ही सात दिन से भूखे-प्यासे हैलीकॉप्टर द्वारा लिफ्ट करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस कष्ट का अनुमान तभी हो सकता है जब दिनों को घण्टों में और घण्टों को मिनटों में, सैकण्डों में परिवर्तित किया जावे और उनके कष्ट की अनुभूति की जावे।

इस पूरी अकल्पित, अयाचित प्राकृतिक त्रासदी पर मेरा कष्ट कुछ अलग है। सितम्बर २०१२ में मैंने एक लेख **''कर्मफल सिद्धांत-एक अलग दृष्टिकोण''** लिखा था। जिसे आठ पत्र-पत्रिकाओं ने प्रकाशित किया था। अब वह मेरी पुस्तक **''ऋषि-अर्पण''** का अंश है। परोपकारी (अजमेर) को मैंने यह लेख प्रेषित नहीं किया था लेकिन परोपकारी ने दिसम्बर २०१२ के प्रथम अंक में आचार्य सत्यजीत ने उसकी बखिया उधेड़ी थी। दोनों पढ़कर आर्य-जगत् के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् ने मुझे पत्र द्वारा सूचित किया कि आचार्य जी का काट बिलकुल सही है। इन्टरनेट पर आचार्य सत्यजीत का इस विषय में संक्षिप्त प्रवचन हुआ। उससे आचार्य जी की सोच का और पता चला। आचार्य जी कहते हैं कि किसी अपराध की शासन द्वारा दी गई सजा अपर्याप्त है तो ईश्वर जितनी सजा आवश्यक समझता है वह स्वयं सजा देकर पूर्ति करता है। आचार्य सत्यजीत के लेख का मैंने उत्तर प्रेषित किया था जिसको परोपकारी ने मई २०१३ (प्रथम) में प्रकाशित किया। आचार्य जी ने शास्त्रीय भाषा व प्रमाणों में मुझे उलझाना चाहा था। फिर उनका अलग से पत्र आया था कि परोपकारी के जिज्ञासा समाधान **''कॉलम में अब वह नहीं लिख रहे हैं।''**

आठ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने पर भी आर्यजगत् के किसी विद्वान् और संन्यासी ने कोई अभिमत नहीं दिया। संभवतः उनके लिये वेद में जो भी लिखा है वह अंतिम प्रमाण है। उसकी आलोचना नहीं हो सकती। उस पर विवाद नहीं हो सकता। ठीक है। विचार तो किया ही जा सकता है। विचार करने का ही मेरा आग्रह था। महर्षि ने भी बुद्धि की धरातल पर तौलकर ही तो कोई बात स्वीकार करने का आदेश दिया है। मैंने उस लेख में कर्मफल सिद्धांत के प्रश्न के संबंध में अनेक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की हैं। उनकी पुनरावृत्ति इस लेख में नहीं करूँगा। केवल एक पक्ष को उजागर कर विद्वज्जनों एवं संन्यासियों से वेद सम्मत समाधान की अपेक्षा रखता हूँ।

वैदिक धर्मी तीन अनादि सत्ताएँ मानते हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर और जीव की चर्चाएँ वेद में, उपनिषद् एवं अन्य ग्रन्थों में बहुत हैं। प्रकृति की अनादि सत्ता है। ईश्वर उसका उपयोग सृष्टि निर्माण कार्य में करता है। जीव उसका उपभोग करता है। ऐसी स्थिति में जीवन का प्रकृति द्वारा लालन पालन और विनाश भी होता है।

जन्म और मृत्यु, पाप और पुण्य की अवधारणा से जुड़ी हुई हैं। जन्म पर विचार करें तो विकासशील देशों-एशिया व अफ्रीका के देशों में जन्म संख्या जैट स्पीड से बढ़ रही है। महर्षि दयानन्द के समय भारत की जनसंख्या २० करोड़ थी और आज १२० करोड़ से ज्यादा है। वैदिक धर्मियों के पास भी इस जनसंख्या वृद्धि का वेद प्रमाणित कोई उत्तर नहीं है और है तो मैं जानना चाहूँगा।

कश्मीर के महाप्रलय ने प्रकृति की विनाशकारी शक्ति का विकराल स्वरूप दिखाया है। कश्मीर समतल प्रदेश नहीं और यदि वहाँ बाढ़ का पानी बीस फीट की ऊँचाई पर बह रहा है तो कल्पना कीजिए वहाँ बचा ही क्या होगा? जन-धन, पशु-धन-मकान-पेड़ सबको बहा ले गया प्रवाह।

बताईये, इस भारी मानव विनाश की संगति कर्मफल सिद्धांत में कैसे बिठाएंगे? यही बात संदर्भित लेख में उत्तराखण्ड जल प्रलय व सुनामी आपदाओं के विषय में भी हजारों लाशें। उत्तराखण्ड में लाशें अभी कुछ समय पूर्व तक निकाली जा रही थीं। ये सब 'मृत्यु' ईश्वरीय कर्मफल-व्यवस्था के अंतर्गत हुई। मुझे मानने में बहुत संकोच है, आपत्ति है।

शेष पृष्ठ क्र. ३८ पर

thearyasamaj.org

मांस भक्षण निषेध

-श्रीमती सुशीला वर्मा एडवोकेट
उर्वशी उन केन्द्र, नवलपुरा, बड़वानी (म.प्र.)
चलभाष-९४०७१७६०६३

अहिंसा परमो धर्मः, यतो धर्मस्ततो जय।

प्रिय बंधुओं! समस्त प्राणीमात्र को सुख के प्राप्त करने की और दुःख को दूर करने की इच्छा रहती है। इसलिये उनके उपाय अपने पूर्वज ऋषि महर्षियों ने शास्त्रों में वर्णन किये हैं। उन उपायों को ही धर्म कहते हैं। धर्माचरण से परम पुण्य प्राप्त होता है अब प्रश्न यह उठता है कि धर्म किसे कहते हैं एवं धर्म की उत्पत्ति कहाँ से है? इसके उत्तर में एक ऋषि का वचन है कि-**दयामूलो भवेद्धर्मो दया प्राणानुकंपनम्।**

दयायः परिक्षार्थ गुणः शेषाः प्रकीर्तिताः।
धर्मस्य तस्य लिंगनि दमः क्षान्तिरहितता।
तपो दानं च शील च योगो वैराग्यमेव च।

अर्थ :- धर्म का मूल कारण दया है, संपूर्ण जीवों की रक्षा करने को ही दया कहते हैं। इन्द्रिय दमन, क्षमा, अहिंसा, तप, शील, योग वैराग्य ये सभी दया धर्म के ही लक्षण हैं। अतएव दया जगत् में सार है। और उसे धारण करने से ही बेड़ा पार है। जो दया नहीं करते हैं उनसे ईश्वर कदापि प्रसन्न नहीं रहता है और उनकी अवस्था भी शोचनीय रहती है। दया का महत्व अपार है इसका वर्णन नहीं हो सकता, तथापि जो कुछ वर्णन किया गया है आशा है पाठकगण इतने से ही दया की महत्ता समझ गये होंगे।

यह बात सही है कि कोई-कोई मांसाहारी यद्यपि स्वयं हिंसक नहीं हो सकता तंथापि वह हिंसा पाप का अधिकारी माना गया है। क्योंकि बिना कारण के किसी कार्य की उत्पत्ति नहीं होती यदि संसार में मांसाहारी न हों तो हिंसा भी क्यों होने लगी? अतएव मांसाहारी गौण रूप से हिंसक हैं और जहाँ हिंसक हैं वहाँ दया का प्रदेश नहीं जहाँ दया नहीं वहाँ धर्म कहाँ से? और धर्म बिना मुक्ति नहीं अतएव हे मांसाहारी भाईयों! मन से सोचो विचार करो कौन कहता है कि मांस भोग्य पदार्थ है? मांस भक्षण अनावश्यक अपवित्र शक्ति बल तथा बुद्धि का हरने वाला एक धर्म विरूद्ध आचरण है।

वैद्यक में स्पष्ट कहा गया है कि मांसाहारी कदापि स्वस्थ नहीं रह सकता प्रत्युत अनेकानेक रोगों का घर हो जाता है धन का नाश होता है क्योंकि वह मंहगा बिकता है और खाने वालों को एक व्यसन हो जाता है जिससे चाहे जैसी प्रतिकूल स्थिति में भी उसे मोल लेकर खाना पड़ता है। धर्म का तो सत्यानाश हो जाता है क्योंकि शास्त्रों में मांस भक्षण को महा अपवित्र माना गया है। एक स्थान पर लिखा है कि **यक्षरसः पिशाचान्नं मद्यमांसं सुरासवं** अर्थात् मदिरा मांस सुरा आसव ये चारों यक्ष राक्षस और पिशाचों के खाद्य हैं मनुस्मृति में भी लिखा है कि-मांस भक्षण सभी प्रकार के पापों में बड़ा घातक है। क्योंकि हिंसा करना महापाप है। ब्राह्मण सर्वस्व में लिखा है- **समुत्पत्ति तु मांसस्य वधबंधो च देहिनां प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात्।**

अंर्थात् मांस की उत्पत्ति और पशुओं का वध बंधन देखकर सर्व प्रकार के मांस से विरक्त हो जाना चाहिए जीवों को मारने से मांस की उत्पत्ति होती है। **रसाद्रक्त ततो मांस** अर्थात् रस धातुओं के रक्त से बनता है और रक्त के जम जाने से मांस बन जाता है।

मनुस्मृति में मांस शब्द का निरूक्ति द्वारा यह अर्थ किया है जिसे मारकर मैं भक्षण करूंगा मां वह सब जन्मान्तर में मारकर खायेगा एक स्थल में ऐसा लिखा है जो कि सरसों के बराबर भी मांस खाते हैं वे तब तक नरक के दुःख भोगते हैं जब तक सूरज और चन्द्र इस भूतल पर विद्यमान हैं। कपिल ब्राह्मण को सहस्त्र गोओं के दान देने से जितना पुण्य होता है उससे कई अधिक पुण्य एक जीव की रक्षा करना है अतएव प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य को वध की भयंकर यंत्रणा का ध्यान कर मांसाहार से बचना चाहिए अतिरिक्त इसके मांसाहार महानिन्द्य और घृणित कार्य है।

विद्वान उदाराशय और धर्मात्मा सज्जन गण को उचित है कि मांस जैसे अभक्ष्य और घृणित पदार्थ को मन, वचन और कार्य से जीवन पर्यन्त त्याग दे।

मांसाहारी मनुष्य अपनी आत्मा का हित नहीं कर सकता और न किसी भांति का सद्गुण धारण कर सकता है। मांसाहार में तमोगुण का प्राबल्य विशेष रूप से हैं और यह सत्य है कि तमोगुणी मनुष्य कदापि धर्माचरण नहीं कर सकता काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सरादि तमोगुण के प्रधान अंग है और तमोगुण से अस्वाभाविक आचरण उत्पन्न होता है अतएव मांस सर्वया त्याज्य है।

वैज्ञानिकों का कथन है कि मानव शरीर की बनावट उन जीवों के समान है जो शाक, पात और अन्न खाते हैं। अतएव मांस खाना प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करना है।

वैद्यक शास्त्र के मतानुसार मांस भक्षण से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। उनमें से कुछ यह है। मांस भक्षण से गठिया मूत्र, संबंधी रोग सरदर्द, मृगी, चित्तभ्रम, सुस्तीपन, हृदय की निर्बलता, अनिद्रा, पक्षाघात, क्षय, मंदाग्नि, हृदयरोग, प्रमेह, जंलधर, पथरी, हाथ-पाँव का फूटना, नेत्रज्योति का घटना, बुद्धिमद, शरीर का सूजना, प्रभृति रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

सिवाय इसके मांसाहारी पक्के निर्दयी होते हैं खून के भूखे झगड़ालू और क्रोधी भी पहले नंबर के होते हैं। कहा है जिसकी आँत में दया नहीं उसका जीवन इस संसार में निरर्थक है। मानव जीवन का मुख्योद्देश्य यही कि वह अपने जीवन काल में कोई भी ऐसा कार्य करे की जिससे उसकी कीर्ति प्रसारित हो उसके मरने के पश्चात् भी उसका नाम रहे परन्तु भाईयों यह कोई सहज कार्य नहीं परहित साधने में स्वार्थ तथा आत्मा का भोग देना पड़ता है।

ये काम महान् और उन्नत आत्मा ही कर सकती है भला फिर कहियेगा कि एक निर्दयी मांसाहारी कैसे परोपकारवृत्ति धारण कर सकता है उसको तो निशदिन कुवासनाएँ ही सताती रहेंगी एक तमोगुणी व्यक्ति को अच्छा काम करने की स्वप्न में भी इच्छा नहीं होती। अतएव प्यारे भ्रातगुण ऋषिकी पवित्र संतानों अपने को एक महा अपवित्र, अस्पर्श्य, अस्वाभाविक, अभक्ष्य निद्य तथा घ्रणित पदार्थ से बचाओ! बचाओ! बचाओ अन्यथा धर्म का लोप होने में और अपने पतन होने में कुछ भी विलम्ब न लगेगा।

अब भी चेतो अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। सुबह का भूला भटका अगर शाम को चला आवे तो वह भूला हुआ नहीं कहलाता यदि आप सच्चे मन से अपना दोष स्वीकार कर ईश्वर से क्षमा याचनाँ करोगे तो वह परम दयालु प्रभु तुम्हें धर्म मार्ग पर चलने का आत्मबल प्रदान करेगा। आओ सब एक साथ मिलकर ईश्वर को बीच में रख एक दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि आज से हम कदापि इस घृणित विनाशकारी पदार्थ का सेवन न करेगें तथा ऐसे पदार्थो छुना को भी महापाप समझेंगे।●

वैदिक धर्म सिद्धांतों के रक्षार्थ एवं वृद्धि हेतु जूझ रहे हैं आचार्य सर्वेश सिद्धांचातार्य जी

वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल, केहलारी-एक परिचय

वैदिक धर्म सिद्धांतों तथा आर्य समाज की गतिविधियों से पूर्णतः शून्य आदिवासी बहुल क्षेत्र जहाँ पर ईसाई मिशनरियों की कुदृष्टि कार्य कर रही है तथा वे सेवा आदि का मुखौटा लगाकर घुसपैठ कर धर्मान्तरण की गतिविधियों में सक्रिय हैं। ऐसे आर्थिक अभावग्रस्त क्षेत्र में जब वैदिक धर्म सिद्धांतों का सूर्य अस्ताचल की ओर प्रतित हो रहा है और ऋषिभक्त होने का तमगा लगाये विद्वान् या तो दक्षिणा-सुविधा आदि के द्वारा मात्र मंचों पर सीमित हैं। या फिर सम्पन्न क्षेत्रों जहाँ पर वैदिक विचारधारा के आर्यजनों की बहुलता हो ऐसे क्षेत्रों में गुरुकुल-आश्रम आदि संचालित कर ऋषि के कार्य को आगे बढ़ाने की स्वसंतुष्टि कर धन्य हो रहे हैं। ऐसे समय में आचार्य सर्वेश सिद्धांताचार्य जी ने मध्यप्रदेश के खण्डवा (पूर्वी निमाड़) जिला-मुख्यालय से २० मिलोमीटर की दूरी पर ग्राम-केहलारी के समीप करीब एक एकड़ भूमि क्रय कर गुरुकुल की स्थापना २७.०४.२००६ गुरुवार को की। स्थापना के शैशव काल में ही लगभग पाँच वर्ष की अवधि में गुरुकुल प्राकृतिक आपदा चक्रवात का शिकार भी हुआ जिसमें एक ब्रह्मचारी की मृत्यु भी हुई। किन्तु जुझारू प्रवृत्ति और कर्मठता के धनी आचार्य सर्वेश जी के पुरूषार्थ तथा परम पिता परमात्मा की कृपा से गुरुकुल पुनः अपनी गतिविधियों को संचालित करने में सफल हो पाया वर्तमान में ८ कक्ष का विरजानन्द छात्रावास पक्की छत का बना हुआ है जिसमें करीब २० ब्रह्मचारी निवास कर रहे हैं कामधेनु गौशाला के माध्यम से १२ गौओं का पालन आदि होकर ब्रह्मचारियों के दूध आदि की व्यवस्था हो रही है गुरुकुल स्थापना से पूर्व जमीन पथरिली तथा बंजर थी जहाँ पर वर्तमान में फल आदि के वृक्षों से आच्छादित होकर मन मोह रहा है। अतिशीघ्र जैमिनि यज्ञशाला, स्वामी ब्रह्मानन्द छात्रावास का निर्माण प्रस्तावित है जिसके सहयोग के लिये आर्यजन महानुभाव गुरुकुल की संचालित गतिविधियों के अवलोकनार्थ सादर आमंत्रित हैं।

कौन हैं आचार्य सर्वेश सिद्धांताचार्य जी ?

ग्राम बहिन, तह.-बिधूना, जिला-इटावा उत्तरप्रदेश के मूलनिवासी आचार्य जी ने प्राथमिक शिक्षा ग्राम में प्राप्त करने पश्चात् आर्ष गुरुकुल एरल कटरा से साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त करने उपरांत उपदेशक महाविद्यालय टंकारा में आचार्य विद्यादेव के चरण कमलों के बैठकर सिद्धांताचार्य की उपाधि प्राप्त की उसके पश्चात् दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार से विद्यावाचस्पति की उपाधि के साथ निकटवर्ती प्राकृतिक उपचार केन्द्र पर डॉ. रवी केड़िया डाक्टर ऑफ नैचरोपैथी तथा डाक्टर ऑफ योगा की उपाधि भी प्राप्त की उपरोक्त शिक्षा के मध्य ही आपने डी.ए.वी. प्रबन्धकत्री सभा के प्रधान ज्ञानप्रकाश जी चौपड़ा तथा शिक्षा डायरेक्टर कुलवन्त तथा मनोज जी द्वारा आयोजित शिविरों में स्थान-स्थान पर अपनी सेवाएँ प्रदान की। आपने श्रद्धानन्द गुरुकुल महाविद्यालय परली बैजनाथ में अध्यापन कार्य तथा आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) में तीन वर्ष भी सेवाएँ लगभग निःशुल्क प्रदान की, जो भी दक्षिणा स्वरूप प्राप्त हुआ उससे अपना व्यय पूर्ति करते हुए शेष ब्रह्मचारियों पर व्यय कर दिया गया। दिनांक-०९ जुलाई २०११ को आर्य समाज मन्दिर रामनगर, जिला-लातुर (महा.) में आपने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। आपके विवाह का सम्पूर्ण व्यय एवं प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र ने वहन किया।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती गीता आर्या डबल एम.ए., बी.एड आदि उपाधियों से विभूषित उच्चशिक्षित वैदिक सिद्धांतों के समर्पित परिवार से होकर आचार्य जी के कंधे से कंधा मिलाकर ब्रह्मचारियों को विज्ञान विषय का ज्ञान प्रदान कर रही हैं। साथ ही मनोविज्ञान विषय पर शोधकार्य (पी.एच.डी.) भी कर रही हैं। एक सुपुत्री-श्रुति आर्या की किलकारियाँ भी गुरुकुल को गुंजाय मान कर रही हैं। आचार्य जी द्वारा वेद योग आयुर्वेद संस्थान वर्ष २००५ से पंजीकृत करवाकर औषधियों आदि का निर्माण कर आत्मिक आरोग्यता के साथ शरीरिक आरोग्यता से भी आर्य जगत् को लाभान्वित कर रहे हैं। चित्रावली देखें पृष्ठ क्र.- ४६ पर - **संपादक**

आध्यात्मिक जिज्ञासा/प्रश्न आपके, जवाब वैदिक विद्वानों के

जिज्ञासा/प्रश्न क्रमांक - १

१. ईश्वर की प्राप्ति के लिए क्या गुरु बनाना/दीक्षा लेना आवश्यक है?

२. आर्य समाज में प्रति रविवार को यज्ञ करने का क्या औचित्य है?

एक जिज्ञासु- **दिलीप भाटिया**, रावतभाटा

जिज्ञासा/प्रश्न क्रमांक - २

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश सम्मुलास में उल्लेख है कि, (१) मूर्तिपूजा का चलन जैनियों से प्रारम्भ हुआ (२) पश्चात् वैष्णवादियों ने श्रृंगारित मूर्तिपूजा का चलन प्रारम्भ किया। इस कथन का ऐतिहासिक आधार क्या है? क्योंकि प्राप्त ऐतिहासिक तथ्य यह संकेत देते हैं कि भारत में मूर्तिपूजा का चलन आर्य-द्रविड संस्कृति की देन है, जैनियों की नहीं विद्वान समाधान करें क्या सही हैं?

प्रश्नकर्ता- रूपकिशोर जाकर, इन्दौर

उपरोक्त जिज्ञासा का वेदानुकूल उत्तर विद्वान् महानुभावों से शीघ्रातीशीघ्र अपेक्षित है। - **सम्पादक**

ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा तथा अध्यात्म (धर्म) से संबंधित आपकी कोई जिज्ञासा अथवा प्रश्न हो तो उठाइये कलम और वैदिक संसार को लिखिए पत्र, उत्तर वैदिक विद्वान् महानुभावों से प्राप्त कर प्रकाशित किये जावेंगे। - सम्पादक

thearyasamaj.org

बाढ़ त्रासदी मानव निर्मित

- देशराज आर्य, से.नि. प्रधानाचार्य
रेवाड़ी, हरि., चलभाष-०९४१६३३७६०९

उत्तराखण्ड की विनाशलीला को अभी हम भूल भी नहीं पाये थे कि सवा वर्ष बाद ही जम्मू कश्मीर में भयंकर बाढ़ ने सर्वनाश कर दिखाया। चारों तरफ जल ही जल भर जाने से हाय हाय मची हुई है। लगभग सम्पूर्ण जम्मू कश्मीर भंयकर बाढ़ की चपेट में आ चुका है। हजारों गाँव बाढ़ से प्रभावित है। अनेक पुलों, सड़कों एवं मागों को बाढ़ के पानी ने ध्वस्त कर दिया है। मकानों की दो-दो मंजिल पानी में डूब जाने से बेहिसाब जन जीवन एवं सामान का विनाश हुआ है। अनुमान है कश्मीर घाटी के तीन हजार गांव बाढ़ के शिकार हुए हैं। ३९० गाँव तो पूरी तरह शेष राज्य से अलग थलग पड़ गये हैं। दूरदर्शन पर दिखाया जाता है कि हवाई सर्वेक्षण के दौरान चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई देता है। मकान होने के कहीं-कहीं कुछ संकेत मिलते हैं। बड़ा दर्दनाक दृश्य बना हुआ है। जो प्रभावित है उन पर क्या बीत रही होगी उसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। जहाँ मनुष्यों का जीवन बचाना कठिन हो रहा हो वहां घर के सामान और पशु मवेशियों की क्या गत हुई होगी अनुमान लगाया जा सकता है। कितने ही परिवारों के सदस्य अज्ञात जलप्लावन में खो गए होंगे। सुन्दर पर्यटन स्थल और धरती का स्वर्ग समझा जाने वाला जम्मू कश्मीर अब भयंकर बाढ़ की विनाशलीला से तहस-नहस हो गया है।

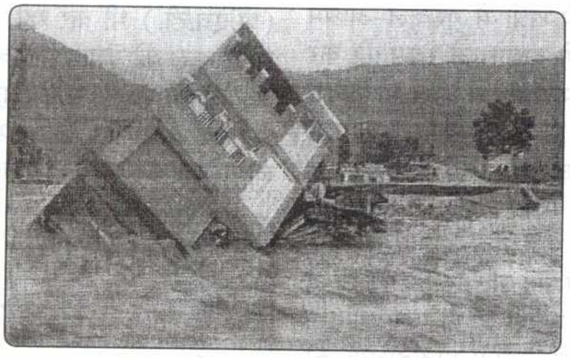

इस संकट की घड़ी में धन्य है भारतीय वीर सैनिक जो स्वयं अपने जीवन को जोखिम में डालकर देवदूत बनकर मौत से जूझते नागरिकों को बाढ़ के पानी से निकालकर सुरक्षित स्थानों और राहत शिविरों में पहुँचा रहे हैं। उन्हें भोजन, पानी और दवा उपलब्ध करवा रहे हैं। कई दिनों से दिन रात एक कर लाखों लोगों का जीवन बचा लिया गया है। सेना, गृहमन्त्रालय और राष्ट्रीय आपदा नियन्त्रण बल के कन्ट्रोल रूम ने आपातकालीन टेलीफोन लाईन बिछा कर घाटी के बाहर से राहत कार्य जुटाने में सराहनीय कार्य किया है। यद्यपि दूरसंचार का आधारभूत नेटवर्क तबाह हो चुका है। केवल जमीनी स्तर पर ही बचाव कार्य किये जा रहे हैं। भारत के समस्त नागरिक इस विपदा की घड़ी में जम्मू कश्मीर के लोगों के साथ खड़े हैं। माननीय प्रधानमन्त्री महोदय ने भी तुरन्त ११ हजार करोड़ की राहत राशि बाढ़ राहत में प्रदान की है। सम्पर्क सूत्र जोड़ने हेतु पनटून पुल बनाकर सेना के तीनो अंग बाढ़ राहत में ऐतिहासिक काम कर रहे हैं। हर अन्तिम बाढ़ प्रभावित परिवार सदस्य तक पहुँचने का प्रयास किया जा रहा है। सबके एक साथ मिलकर संयुक्त प्रयास का ही परिणाम है कि बहुत कम जन हानि हुई अन्यथा जलप्लावन से प्रलय जैसा दृश्य उपस्थित हो गया था। धीरे-धीरे उत्तराखण्ड की भांति इस विपत्ति से भी निपट लिया जाएगा, परन्तु भविष्य में ऐसा कहर कहीं भी किसी भी समय में हो सकता है उसके अनिष्ट का चिन्तन करना आवश्यक है।

सृष्टिकर्ता ईश्वर न्यायकारी है तथा दयालु भी है और सबका रक्षक भी है। जिस प्रकार माता-पिता अपनी सन्तान का सब प्रकार से भला चाहते हैं, उसी प्रकार ईश्वर भी सभी मानवों, जीवों का हित चाहता है। फिर भी ऐसे भंयकर हादसे क्यों होते हैं यह विचारणीय विषय है। परमात्मा स्वाभाविक रूप से ही सृष्टि रचता है और उन सब जीवों का पालन भी करता है। मानव ने स्वयं ही अपने विनाश का मार्ग प्रकृति से छेड़छाड़ कर उत्पन्न किया है। वेद में लिखा है-**जीवेम शरदः सतं, हम सौ वर्ष तक जीवन जीये, परन्तु सौ वर्ष तक जीवित रहने के वेद में बताये यम-नियम, रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या, आचार-विचार, स्वाध्याय करने का अभ्यास छोड़ दिया। स्वयं की इच्छा से जीवन व्यतीत करने के कारण मनुष्य की आयु घट गई है।**

प्राकृतिक आपदाओं को भी मानव ने स्वयं निर्मित किया है। जब जब भी मानव द्वारा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ होती है तब तब ही विनाशलीलाएं उत्पन्न होती है। वर्षा का अधिक होना, पानी का ढलान की तरफ बहना सब स्वाभाविक है। परन्तु प्राकृतिक जल मार्गों का अवरोध, पहाड़ों और वनों के काटकर उनका अनुचित दोहन कर लिया गया है। स्वाभाविक जलमागों के आस-पास आवास आबादी बनाने से स्वयं संकट में पड़ने की स्थिति उत्पन्न कर ली है, पृथ्वी निर्माण के साथ ही पहाड़, घाटी, नदी-नालों का स्वाभाविक निर्माण, स्थान और मार्ग बनाया। हमारे पूर्वजों को इन बातों का ज्ञान था तथा उन्होंने पानी बहाव के मार्गों से दूर ऊँचे स्थानों पर अपना निवास बनाया था। प्रकृति के साथ उन्होंने कभी छेड़छाड़ नहीं की, संसाधनों को क्षति नहीं पहुँचाई। पर्यावरण तब दूषित नहीं था, वर्षा भी खूब होती थी परन्तु बाढ़ कभी विनाश का कारण नहीं बनी। पहाड़ों पर बने मकान भी पेड़ों के कारण सुरक्षित थे। ५०, ६०, १०० वर्षों के अन्तराल में नदियों में बाढ़ आती रही है। हमने इतिहास पुस्तकों में पढ़ा था कि शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह के जमाने में झेलम नदी में भयंकर बाढ़ आई थी। काबुल के बादशाह की दो बड़ी तोपें बाढ़ के पानी में बह गई, सैनिक तोपों को निकाल नहीं पाये। महाराजा रणजीत सिंह को पता लगा तो उन्होंने तोपों को पानी से निकलवाकर बादशाह के पास इन्हें ले जाने की सूचना भेजी। परन्तु काबुल के बादशाह ने दोनों तोपें महाराजा रणजीत सिंह को वापिस पुरस्कार स्वरूप भेंट कर दी थी। इस प्रसंग से हमें जम्मू कश्मीर में झेलम नदी में बाढ़ आते रहने की जानकारी मिलती है। हमने जल प्रवाह के मार्ग का अवरोध कर दिया जो विनाश का कारण बन गया।

यदि हम विचार करें तो हमें यह आपदा मानव निर्मित ही लगती है। विशेषज्ञों का मानना है कि पहले उत्तराखण्ड तथा अब जम्मू कश्मीर में आई बाढ़ त्रासदी मानव की गलतियों का नतीजा ही है, प्रकृति ने इसे अधिक विनाशकारी बना दिया। हमने प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर लिया तथा करते जा रहे हैं। वन के वन साफ कर दिये नये वृक्ष

शेष पृष्ठ क्र. ३४ पर

अवसाद (डिप्रेशन)

– गिरीश त्रिवेदी
४९६, शनीवार पेठ, इलिना अपार्ट., पुणे
चलभाष-०८०८७५९०३५६

'नृत्य परमात्मा को छुने की सरल तरकीब है। अहंकार विसर्जित करके नाचो। मयुरी छुम छना छन नाच – मयुरी नाच – मगन मन नाच। मयुरी आंगन-आंगन नाच। हृदय खोल कर नाचो। सब तरह की कृपणता छोड़ के नाचो। संभाल-संभालकर नाचोगे तो नाच घटित नहीं होगा। बे संभाले नाचो। नियंत्रण तोड़ के नाचो। अराजक हो के नाचो। नियंत्रण जारी रखा तो वो मनुष्य का नाच है, परमात्मा नहीं नाच पाता। तुम बागडोर उसके हाथ में दे दो फिर होता है नाच।' – **ओशो (रजनीश)**

एक बार मुल्ला नसरुद्दिन और चन्दूलाल संध्याभ्रमण को नगर से बाहर निकले थे। मार्ग में वहीं उन्होंने जोर-जोर के संगीत की आवाज सुनी। संगीत की आवाज आ रही थी एक ऊँची-सी दीवार के उस पार से। मुल्ला को जिज्ञासा हुई कि उधर क्या हो रहा है पता करें। दीवार ऊँची थी सो मुल्ला ने चन्दू को अपने कन्धों पर खड़ा किया और कहा देख अन्दर क्या हो रहा है। चन्दू चढ़ा, देखता रहा आनन्द लेता रहा, फिर उतरा। वहाँ से चलते-चलते चन्दू ने कहा -'मुल्ला! अन्दर बहुत से लोग नाच रहे हैं। जोर-जोर से नाच रहे हैं। हाँ लेकिन किसी के तन पर कपड़े नहीं है।' मुल्ला ने उतावला होकर पुछा -'वे पुरुष थे या स्त्रियाँ भी थी?' 'अरे हाँ, वो तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया।' चन्दू ने उत्तर दिया।

अरे हाँ अवसाद की बात करनी थी और मैं ले बैठा नृत्य को। वास्तव में बात ये है कि मैं स्वयं नृत्य का शौकिन हूँ। नाचना कुछ आता नहीं मगर नाचता बहुत हूँ। बंद कमरे में, इस्कॉन मन्दिरों में और बीच चौराहे पर। मेरा अनुभव है -सात्विक नृत्य से मन अतिशीघ्र हल्का-फुल्का हो जाता है। मन पर पड़ा भार हट जाता है। यदि प्रभु की याद के साथ नृत्य हो तो कहना भी क्या। नृत्य के बाद अपार शांति, मनोविकारों से मुक्ति और प्रभु प्रेम की खूमारी ऐसी चढ़ती है जो लंबे समय तक आनन्द बरसाती है।

मेरी बात में कितनी सत्यता है क्या आप नहीं परखेंगे? नृत्य योग्य संगीत वाले भजन-कीर्तन की धुन या फिर अपनी पसंद का कोई नृत्य संगीत किसी म्यूजिक सिस्टम में या मोबाइल में चलाकर, जोर की आवाज से या इयर फोन में सुनें तथा आप अकेले कमरे में खिड़की, दरवाजा, परदे बंद कर अब हो जाओ शुरु। शरीर की पूरी ताकत झोंक दो नृत्य में आंसु बहे तो बहने दो, कपड़े गिरे तो गिरने दो, विस्मृत कर दो स्वयं को, समय को और स्थान को। तब परमेश्वर स्वयं उतरता है नृत्य में। अब तुम नहीं नाचोगे वही अकेला नाचेगा ऊर्जा के नये भंडार शरीर से वह स्वयं खोलेगा और नाचता रहेगा, नाचता रहेगा। जब तुम्हें होश आयेगा तुम अपने को फर्श पर पड़ा पाओगे। होश संभालते ही लगेगा जो कुछ पाना चाहिये वह पा लिया। फिर या तो मौन घटित होगा या रुदन घटित होगा रोना आए तो उसे भी मत रोको। यह धन्यवाद का रुदन है, यह विरह का रुदन है और यह मिलन का भी रुदन है। अब शांत भाव से कमरे से बाहर निकलो तो मौन रह कर अनुभव को पचाओ। अब संसार के सभी व्यवहार-व्यापार पूर्ववत ही रहेंगे। अब ये सब ऊपरी- ऊपरी लगेगा। अन्दर तो मदमस्त गहरी शांति होगी और प्रतिपल उसकी याद होगी। हाँ, अपने अनुभव बताते मत फिरो। दूसरे संसारी लोगों में मजाक का पात्र मत बनो। हाँ अब तुम्हारी शादी उससे हो चुकी है। अब वो तुम्हारा पिया, तुम उसकी मीरा अब जब चाहो जितना चाहो मिलते रहो।

उपरोक्त प्रयोग सभी के करने योग्य है लेकिन यदि आप अवसाद (डिप्रेशन) के शिकार हैं और आप कुछ देर के लिये अपने डर, भय, चिन्ता, फिकर दर्द और पीड़ा को एक तरफ रख-कर यह प्रयोग ठीक-ठाक कर लेते हैं तो आपकी बीमारी आपके पास रह नहीं सकती। सीधा आपसे दूर भागने का रास्ता पकड़ेगी।

अवसाद मन की बीमारी है। दु:ख तीन प्रकार के होते हैं – १. आध्यात्मिक (सीधा मन को दु:खी करने वाले कारणों से), २. भौतिक अर्थात् रोगाणु, किटाणु, राक्षस और हिंसक पशु-पक्षियों द्वारा दिया जाने वाला दु:ख, ३. दैविक अर्थात् अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि जो पंच दैवीशक्तियों (जल, पृथ्वि, वायु, अग्नि और आकाश) द्वारा कष्ट दिया जाता है। हमारी यह अवसाद की बीमारी भौतिक नहीं आध्यात्मिक है। यदि भौतिक होती, शरीर के स्तर पर होती तो सीधा मैं औषधियों के नाम ही गिनाता चूँकि यह मन की बीमारी है अत: इसमें जब तक मन का उपचार नहीं किया जायेगा और औषध सेवन की जाएगी तो मात्र औषधियों के सहारे यह बीमारी ठीक होना बड़ा मुश्किल है।

मैं आपको शत् प्रतिशत ठीक होने का पूरा मार्ग बता रहा हूँ। आपका जितना प्रयत्न होगा, विश्वास होगा, समर्पण होगा उतनी ही सफलता मिलेगी। मैं इस बीमारी को अत्यधिक कष्टप्रद मानता हूँ क्योंकि शरीर की बीमारी होती तो हम अपने मन को उससे निर्लेप रख के मस्त रह सकते हैं लेकिन जब मन ही रुग्ण हो गया तो सुख की किसी भी मार्ग से अनुभूति होना मुश्किल है।

आओ अब पहले **अवसाद है क्या?** वो समझने का प्रयत्न करें।

आदरणीय संपादक जी, सादर नमस्ते।

अवसाद एक महादु:खदायी बीमारी है। ज्ञान के अभाव में इसके रोगी भयंकर मानसिक पीड़ा को सहते हैं। उनका जीवन नर्क बन जाता है। ये या तो डॉक्टरों के जाल में फंसते हैं और जीवन भर दवा खा खाकर दिन गुजारते हैं या फिर पाखंडियों के पल्ले पड़ते हैं।

क्यों न हम **'वैदिक संसार'** के माध्यम से उन्हें पीड़ा मुक्त करने का प्रयत्न करें।

-गिरीश त्रिवेदी, पुणे (महा.)

thearyasamaj.org

अवसाद वास्तव में माया का शिकंजा है। माया व्यक्ति को बड़ी निर्दयता से पकड़कर रखती है। तब व्यक्ति की सोच ही मायाक्रान्त हो जाती है। व्यक्ति अत्यधिक डरा-डरा रहता है। वह किसी भी सकारात्मक बात को भी नकारात्मक ढंग से सोचता है। उसे तरह-तरह के हानि के विचार उठते रहते हैं। वह कहीं छुप जाना चाहता है मगर मार्ग नहीं मिलता। तब उसे आत्महत्या के विचार आते हैं। कुछ लोग तो आत्महत्या कर भी लेते हैं। माया उन्हें शांत बैठने नहीं देती, सोने नहीं देती और ये अवसाद के रोगी दिन-रात अन्दर ही अन्दर तड़पते रहते हैं। उन्हें लगता है मुझे अमुक बीमारी हो गई है। डॉक्टर के पास जाते हैं। रक्त, मुत्र, एक्सरे, इ.सी.जी., सी.टी. स्केन, टु.डी. इको, एम.आर.आई., विनोग्राम आदि बहुत कुछ परिक्षण होते हैं। यदि वास्तव में कोई बिमारी है तो पकड़ में आ जाएगी अन्यथा सभी रिपोर्ट सामान्य ही आयेगी और धीरे-धीरे वास्तव में फिर शरीर भी रुग्ण होने लगता है। कोई बड़ी बीमारी आ घेरती है क्योंकि बिना स्वस्थ मन के स्वस्थ शरीर रहना मुश्किल है।

यह बीमारी होती क्यों है? डरो मत। तुम्हारे जैसे बहुत हैं, सुना है हर दस में एक व्यक्ति कम या ज्यादा इस बीमारी से पीड़ित है। मुझे भी विंश्वास नहीं कि क्या इतने सारे लोग इस बीमारी को झेल रहे होंगे? यह नतिजा है भोगवाद का और अज्ञान एवं अध्यात्म में अरुची का।

भारतीय वैदिक वांगमय का स्वाध्याय करो विशेष रूप से दर्शन, उपनिषद् और भवगद् गीता का उनकी शिक्षाओं को जीवन में उतारो। स्वाध्याय किये हुए का मनन करो। पूरे जीवन को ही प्रभु के हवाले कर दो। वो तुमसे जो करवाये, करते जाओ तुम मात्र भोक्ता भाव से देखते रहो और आनन्दित रहो। बाहर से भले ही नहीं मगर अन्दर से पूरी तरह उस प्रभु के भक्त बन जाओ। रोम-रोम तक भक्ति को भरो। तब तुम्हारा नजरिया ही बदल जाएगा। तुम '**आत्मवत सर्व भूतेषु**' का फिर अनुभव करने लगोगे। तुम्हें हर जीव में साक्षात प्रभु के दर्शन होंगे। सजीव-निर्जीव जहाँ देखो वहाँ प्रभु ही प्रभु दिखेंगे। हाँ, दुश्मन में भी तुम्हें प्रभु मुस्कुराता दिखेगा। अनायास ही तुम्हें हर किसी को प्यार करने का मन करेगा। लोकलाज से भले तुम किसी के सर पे गाल पे हाथ न फेरो पर तुम्हारी नजरें हर किसी को प्रेम करती ही रहेगी। तुम्हारी रगों में ऊर्जा ऊफान मारती अनुभव होगी। तुम्हारे होंठ हमेशा मुस्कुराने का मौका नहीं चुकेंगे। तुम से मिलने वाला हर व्यक्ति आनन्द का प्रसाद पाकर लाभान्वित होगा।

अवसाद का दूसरा कारण है दुनियाँ द्वारा और विशेष रूप से अपनों द्वारा दिया जाने वाला धोखा। निकट संबंधियों द्वारा लूटा जाना, छला जाना, बार-बार अपमानित किया जाना और यह संसार में कुछ अपवाद छोड़कर लगभग सबके के साथ घटित होता रहता है। पहला उपाय तो है सतर्क रहो। भक्त अवश्य बनो मगर भोले और मूर्ख मत बनो। अन्याय का प्रतिकार करो। **गीता के पहले ही अध्याय में हम पाते हैं अर्जुन मोहवश अवसाद को प्राप्त हो गया था उसी के निवारणादि श्री कृष्ण को गीता का उपदेश करना पड़ा था।** वही गीता आज हमारे भी अवसाद के निवारणार्थ उपयोगी है।

एक गाल पर थप्पड़ पड़ने पर दूसरा गाल आगे करने का सिद्धांत हमारे शास्त्र नहीं बताते। आपने जितने भी देवी देवताओं के चित्र देखे होंगे सभी के हाथों में एक नहीं चार-चार अस्त्र-शस्त्र देखे होंगे। प्रेरणा लो उनसे। हूँकार भरके खड़े हो जाओ। मन ही मन ठान लो अब तक मेरे साथ जितना अन्याय-अत्याचार किया सो तो इतिहास हो गया। आगे से फिर ऐसा हुआ तो रणचंडी बन कर अगला-पिछला पूरा हिसाब बराबर करुँगी। उपरोक्त बात का चिंतन करो और पूरी हिम्मत भर लो अपने में। खून गरम हो जाने दो। जैसे ही हिम्मत का संचार होगा तब सब भय भाग खड़े होंगे।

अवसाद में जो भय लगता है। अनिष्ट के होने के विचार उठते हैं वास्तव में वे सब झूठ होता है, भ्रम होता है। जो बुरा कभी होना ही नहीं है वह अवश्य हो जाएगा ऐसा प्रतीत होता है। अत: अब ऐसे विचार माया के प्रभाव से कल्पना को मूर्त रूप दे रहे हैं और डरा रहे हैं। इसकी सत्यता को जानो और मुक्त हो जाओ। **अवसाद का एक कारण अपने ही द्वारा की हुई छोटी-बड़ी कई गलतियाँ भी होती हैं जिन्हें अब सुधारना असंभव होता है।** जैसे कुछ संपत्ति खरिदनी थी और चूक गये। पैसे का मोल तो कुछ खास बढ़ा नहीं और उस संपत्ति का मोल देखते-देखते दस-बीस गुना बढ़ गया। कुछ काम और दुष्कर्म ऐसे किये हैं जो बंद लिफाफे की तरह पड़े हैं जो कभी खुल गया तो भंडाफोड़ हो जाएगा। आर्थिक हानि होगी या इज्जत का दिवाला निकल जाएगा। अरे मित्रों सच कहता हूँ कपड़ों के निचे सब नंगे हैं। गलती मनुष्य से ही होती है। हम कोई हरिशचन्द्र तो है नहीं। हो गया सो हो गया अब डरते-डरते सहने से तो कुछ फायदा होने वाला नहीं जो होगा देखा जाएगा। प्रभु से मात्र प्रार्थना करो कि बचाले और आगे से संभल के रहो। निश्चित रूप से आप पायेंगे कोई अनिष्ट नहीं हुआ।

एक संतान होना भी मुसीबत का मुख्य कारण है। संतान के घर से निकलने के साथ ही माँ की चिंताएँ शुरु हो जाती हैं सो सकुशल घर न आ जाए माँ किसी अनहोनी की कल्पना में डूबी ही रहती है। जबकि बुरा किसी दिन कुछ होता नहीं है।

आप चाहे जिस कारण से अवसाद से पीड़ित हैं तो पहले तो एक ध्यान प्रयोग बताता हूँ जिससे हम अपने मन पर जमा कचरे को साफ कर सकें। एक कमरे में बंद हो लिजिये अब कम से कम दस मिनिट और ज्यादा आपकी इच्छानुसार रोना शुरु किजिये लगातार रोते रहिये। जैसा चाहे वैसा रोयें चाहें तो दहाड़े मार-मारकर रोयें, अपने एक-एक कष्ट, दु:ख को याद कर करके खूब रोयें। रोना रोको तब तुरंत हँसना प्रारंभ कीजिये। पूरे मूर्ख बन के हँसिये, लगातार ठहाके लगाइये जब पूरे थक जाओगे तो वही शवासन में लेट जाइये। प्रतिदिन यह प्रयोग करने से अवसाद तो जाता रहेगा साथ ही दुनियाँ देखने की नई दृष्टि मिलेगी। मेरा भी अनुभव है।

यदि आप शीघ्र ठीक होना चाहते हैं और कुछ नहीं कर सकते। कुछ भी करने में मन नहीं लगता तो आपको दो प्रकार के प्राणायाम अवश्य करने चाहिये। एक अनुलोम-विलोम आधा घंटा और अधिक जितना चाहो, दूसरा भ्रामरी १०-२० बार। ये प्राणायाम निश्चित रूप से अवसाद को जड़ से मिटायेंगे।

प्राणायाम के साथ-साथ मेधावटी एक-एक या दो-दो गोली सुबह-शाम भोजन के बाद। मेधाक्वाथ का काढ़ा महिनाभर दिन में एक या दो बार लें। मेधाक्वाथ को रातभर पानी में भिगोकर सुबह उबालें। एक सारस्वतारिष्ट दिन में दो बार भोजन के बाद लें। बस ये तीन औषध ही सभी प्रकार के अवसाद के लिये ठीक हैं। ये आपको पतंजलि आरोग्य सेवा केन्द्रों तथा आयुर्वैदिक दवाइयों की दुकानों पर मिलेगी। मेधावटी को कुछ महिनों तक लेते रहें। आयुर्वैदिक वेद्यों से भी परामर्श अवश्य लेते रहें।

'**अलसी**' एक औषध नहीं लेकिन दिव्य भोजन है। आप प्रतिदिन

thearyasamaj.org

तीस से पचास ग्राम अलसी का सेवन करेंगे तो तीन महिनों में चमत्कारिक प्रभाव अनुभव करेंगे। अलसी खाने के कई तरीके हैं लेकिन मैं एक सरल प्रयोग बताता हूँ। एक-दो कटोरी अलसी कड़ाही में हल्की-सी भुनिये फिर मिक्सर के चटनी पोट में पीस लीजिये। दूध, छाछ या पानी में पचास ग्राम अलसी घोल के पीजिये। पीसी हुई अलसी ज्यादा दिन टिकती नहीं खराब हो जाती है अत: चार-पाँच दिन से ज्यादा की एक साथ नहीं पिसें।

विटामिन बी-१२ को बढ़ाने के लिये सोयाबिन का प्रयोग करें। केल्शियम बढ़ाने को एक चावल के दाने जितना चूना प्रतिदिन खायें। स्त्रियों के लिये तो बहुत ही आवश्यक है। दूध में एक चम्मच गाय का घी डाल कर सुबह पियें। शरीर अशक्त लगे तो शतावरी चूर्ण एक चम्मच और अश्वगंधा चूर्ण एक चम्मच या अश्वगंधा केप्सुल एक दूध के साथ कुछ दिन लेवें।

अवसाद निवारण के लिये अपने को दिन भर काम में व्यस्त रखें। अपने अन्दर के कलाकार को जागृत करें और जिस कला या कलाओं में रुची हो वो अभ्यास करें, रचनात्मक कार्य करें। अपने हाथ से कुछ बनाएँ। यदि डर कर एक ही जगह दिन भर दुबक कर बैठे रहे तो बीमारी बढ़ती जाएगी और कोई भी दवा अपना प्रभाव नहीं बताएगी। आस-पड़ोस के लोगों से बातें करें। मित्रों से भी बतियाएँ। रुची हो तो प्रात: खुली हवा में एक घंटा टहलने जाएँ, तेज चलें। प्रतिदिन सुखासन में बैठ कर ध्यान करें।

अपने आस-पास यदि कोई निस्सहाय, दुखियारा, रुग्ण गरीब सड़क पर बैठा मिले तो उससे प्रेम से दो बातें करें। उसके कष्टों को, कहानी को सुनें। उसे खाने को कुछ देते रहें। आवश्यकता हो तो औषध भी खरीद कर दिलवाते रहें, सांत्वना दें। घर का बचा खाना कचरे में न फेंकें बाहर जा कर कुत्तों को दें। घर की खिड़की में पक्षियों के लिये दाना-पानी रखो। पंछी आवे तब देख के प्रसन्न होओ। कौएँ के लिये आधी रोटी रखो। गाय उपलब्ध हो तो उसे भी कुछ खिलाने जाओ। घर में चूहें हों तो उन्हें पिंजरे में पकड़ कर दूर छोड़ आओ, हत्या मत करो। आस-पड़ोस के छोटे बच्चों को घर में बुलाओ उनके साथ खेलो चाहे आपकी उम्र कुछ भी हो। बच्चे अधिक हों तो धमाल-मस्ती हो जाने दो साथ ही आप भी एक बच्चा बन जाओ।

आप के अवसाद पीड़ित होने पर लोग आपको बताएंगे कि तुम्हें भूत, पिशाच, डायन, चुड़ैल लग गया है। पूर्वज सता रहे हैं, तुम झपाटे में आ गये हो, दुश्मनों ने कुछ मैली विद्या से करवा दिया है। पाखंडी पंडित बताएगा तुम्हारे पर राहु का प्रकोप है, शनि की दशा चल रही है। ग्रह अनुकूल नहीं हैं, पितृदोष है। उपरोक्त सभी बातें महामुर्खों की हैं। धूर्त, पाखंडी, पोपपंडे, अंघोरी, भोपा, तांत्रिक, फलित ज्योतिषि ये सब महाठग हैं। इन जैसे किसी के चक्कर में मत पड़ो। टोना-टोटका, गंडा, ताबिज, डोरा, तर्पण, श्राद्ध, रत्न, पत्थर अंगुठी, कृपा, आशीर्वाद, झाड़ा, जाप, भभूत, अभिमंत्रित पानी ये सब महापाप हैं, लूट हैं, छल हैं। ऐसे नीचों, धूर्तों के चक्कर में मत पड़ो, कोई टोना-टोटका मत करो, ग्रहों के मंदिरों, मजारों के चक्कर मत काटो। यदि आप ऐसे किसी भी अंधविश्वास में फंसते हैं तो आपके जैसा महामूर्ख कोई नहीं। आप कहेंगे मरता क्या न करता। अरे मितवा इन की बातों में उलझे तो समय, धन और स्वास्थ्य तीनों को खोओगे। आपके जेब से पैसा निकल चुकने के बाद वे तो ठहाका लगायेंगे और आप ठगे-ठगे से गिड़गिड़ायेंगे। उनका उत्तर होगा इतने में फरक नहीं पड़ा है तो अब बड़ा अनुष्ठान करना होगा। जाओ और ज्यादा रुपये लाओ। इन दुष्ट लुटेरों से दूर रहो। जब भी कोई तुमसे ऐसी अण्ड-बण्ड अन्धविश्वास की बात करे उसकी मखौल उड़ाओ अपमानित करो हतोत्साहित करके भेजो। निश्चिंत रहो आपका कुछ बुरा नहीं होगा।

इसी तरह एलोपेथी के मनोचिकित्सक (साइक्रियाटिक) के पास जाने की भी उतावल मत करो। जितना बच सको बचो। एलोपैथी की दवाइयाँ भी आपको एक प्रकार के चक्रव्युह में फंसा देगी। पीड़ा सहन नहीं होती और डॉक्टर के पास जाना ही है तो पहले एक होमियोपैथी के डॉक्टर के पास जाओ। निंद आने का उपचार होम्योपैथी में भी है। यदि आप मनोचिकित्सक के पास जा रहे हैं। दवाइयाँ भी लगातार ले रहे हैं तब भी कोई बात नहीं। आप अनुलोम-विलोम प्राणायाम शुरु कर दो। जितना ज्यादा कर सको करो और फिर धीरे-धीरे एलोपेथी की गोलियों को छोड़ते जाओ।

एक्युप्रेशर भी लाभकारी है अत: कुछ देर तालियाँ बजाओ या बाजार से एक्युप्रेशर का बेलन खरीद उसे हथेलियों पर घुमाओ, कर सको तो सर्वांगासन भी करो, लाभकारी है।

मांसाहार करते रहने के साथ और कुछ करने से भी लाभ होना मुश्किल है। मांसाहार तमोगुण की वृद्धि करता है और अवसाद निवारण के लिये सत्वगुण की वृद्धि करनी है तो कैसे संभव होगा। **अत: तुरंत मांस, मछली और अंडा भी हमेशा के लिये त्याग दो तभी हम अनेक बीमारीयों से बच पाएंगे। साथ ही हमारी चेतना भी जागृत रहेगी।**

रात को सोने से पहले दिन में किये हुए स्वाध्याय का मनन करो। खुश होने की बात को बार-बार सोचो। अन्त में प्रभु को धन्यवाद देते हुए, प्रेम करते-करते निंद में डुब जाओ।

कुछ दिन छुट्टी निकाल कर दूर कहीं पर्यटन-तीर्थाटन को निकल जाओ साथ में अपने प्रिय व्यक्ति को रखो। बहुत लाभ होगा।

घर के लोग मनोरुग्ण के साथ कैसा व्यवहार करें -

इन लोगों का मन बहुत ही कमजोर हो जाता है। इन्हें किसी बात पर झट से विश्वास नहीं आता। हर किसी पर शक करते हैं। बार-बार प्रश्न करते रहते हैं। सोच-फिकर करते हुए डर कर दुबक कर बैठे रहते हैं। इन्हें निंद भी कम आती है। भूख भी नहीं लगती कृपया इन्हें बिल्कुल डांटे नहीं। इनका अपमान न करें, इनसे मुस्कुराकर बात करें, खूब अधिक प्रेम करें, इनका सम्मान करें, इनका कहा काम शीघ्र करें, कहना मानें, विरोध न करें, इनकी सराहना करें। डर, नुकसान और खतरे वाली कोई भी बात भूल कर भी इनके कान तक न जाने दें। घर के बाकी सदस्य खुशियाँ मनाओ, शीघ्र ही एक दिन यह व्यक्ति भी तुम्हारे साथ आ के बैठेगा, मुस्कुराएगा, बातों में रुची लेगा। इन्हें बस अधिकाधिक प्राणायाम करने की प्रेरणा देते रहें। दो-चार घंटे भी करें तो करते रहने दें।

थोड़ी सी अलसी खाओ बहुत अधिक प्राणायाम करो तो शीघ्र ही पूरा-पूरा स्वास्थ्य लाभ होगा।

आपको शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होने की शुभकामनाएँ। ●

ध्यान शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर के तत्वावधान में आचार्य सानन्द जी के सान्निध्य में दिनांक १९ से २१ सितम्बर २०१४ तक त्रिदिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पचास शिविरार्थियों ने भाग लिया। महर्षि पातंजलि प्रणीत एवं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग पद्धति के आधार पर आचार्य सानन्द जी ने ध्यान का शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक जीवन में महत्व समझाते हुए इसके प्रयोग शिविरार्थियों को सिखायें। शिविर के समापन के अवसर पर सम्भागियों ने अपने-अपने अनुभव सुनायें। जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान आचार्य जी ने कुशलता पूर्वक किया। **-भंवर लाल आर्य , प्रधान**

चित्र देखें पृष्ठ क्रमांक २ पर

thearyasamaj.org

'वैदिक संसार' प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएं एवं रचनाकार महानुभावों से विशेष विनम्र अनुरोध

* '**वैदिक संसार**' प्रकाशन को मात्र व्यवसाय समझने की भूल न करें वसुधैव कुटुम्बकं तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का संदेश समक्ष रखकर वैदिक धर्म, संस्कृति तथा राष्ट्रिय मूल्यों के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु योगदान देना हमारा परम् लक्ष्य है।

* **वैदिक संसार** में प्रकाशित प्रकाशन सामग्री के लिए '**वैदिक संसार**' का सहमत होना आवश्यक नहीं है, यह लेखकों के अपने दृष्टिकोण एवं प्राप्त जानकारी अनुसार है।

* '**वैदिक संसार**' से संबंधित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।

* '**वैदिक संसार**' आपका अपना समाचार पत्र है। विज्ञापन, सहयोग निधि (स्वैच्छिक दान) एवं प्रकाशन सामग्री से सहयोग करने की कृपा करें।

* वैवाहिक आवश्यकताएँ, प्रतिभा समाचार, लेख, कविताएँ, अन्य समाचार, सूचनाएँ एवं शोक समाचार नि:शुल्क प्रकाशित किए जाते हैं। कृपया प्रकाशन सामग्री स्पष्ट लिखी हुई, हस्ताक्षर युक्त, पूर्ण डाक पते एवं मोबाइल नं. सहित भेजें।

* प्रकाशन सामग्री की श्रेष्ठ गुणवत्ता एवं समाचार पत्र में स्थान उपलब्धता पर ही प्रकाशन संभव हो सकेगा।

* वेद विरुद्ध, सृष्टि नियम विरुद्ध, भूत-प्रेतादि, चमत्कारी, भविष्यफल आदि कपोल-कल्पित, कथा-कहानियों का प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

* वेद सम्मत, ज्ञानवर्धक, मार्गदर्शक, प्रेरणास्पद, सत्य आधारित रचनाओं/समाचारों का स्वागत है। रचनाएँ संक्षिप्त (तीन पृष्ठों से अधिक नहीं) तथा मौलिक हों। दो मास में एक रचना के अनुपात से अधिक रचनाएँ न भेजें।

* रचनाकार विद्वान्, महानुभाव प्रथम बार अपना चित्र भेजने का कष्ट अवश्य करें।

* '**वैदिक संसार**' में प्रकाशित किसी सामग्री पर किसी महानुभाव को कोई शंका, जिज्ञासा, शिकायत होने पर संबंधित लेखक से सीधे सम्पर्क करें तथा हमें भी अवगत करवाये एवं कोई सुझाव हो तो हमें पत्र द्वारा अवश्य अवगत करवाएँ, हमें आपके पत्रों, रचनाओं एवं आर्थिक सहयोग की प्रतीक्षा है, इसके बगैर हमारा प्रयास अपूर्ण है।

* पत्रों के अतिरिक्त अनेक स्नेहीजनों के द्वारा दूरभाष पर मौखिक समर्थन, बधाई तथा हर्ष के संदेश सतत् प्राप्त होते हैं, समस्त स्नेहीजनों का '**वैदिक संसार**' परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

* '**वैदिक संसार**' स्वास्थ्य संबंधी एवं महिलाओं, बच्चों से संबंधित, स्वास्थ्य रक्षक-वर्धक, हितकारी, ज्ञानवर्धक, रुचिकर, उत्साहवर्धक, प्रेरणादायी सामग्री प्रकाशित करता है। अत: विद्वान् महानुभाव संबंधित सामग्री भेजने का कष्ट करें। प्रकाशन सामग्री के ऊपर निर्देशित करने का कष्ट करें कि सामग्री किस परिशिष्ट से संबंधित है।

* महापुरुषों की जन्मतिथि/पुण्यतिथि तथा वैदिक पर्वों से संबंधित आलेख कम से कम दो माह पूर्व भेजने का कष्ट करें।

* अस्वीकृत रचनाएं लौटाना संभव नहीं होगा। - **संपादक**

पृष्ठ क्र. १४ का शेष **आपसी फूट......**

खुले वातावरण में भी कूप मंडूक बनकर टर्रा रहे हैं। आर्य समाजों में निरंतर घटती संख्या का यह एक मुख्य कारण है और यह समस्या केवल आर्य समाजों तक नहीं अपितु पूरी जाति समाज और राष्ट्र की हो चुकी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर हम पूरे समाज राष्ट्र को जाति, भाषा, क्षेत्र के कबीलों में बांटकर लड़वा रहे हैं और उसी अंग्रेजी नीति फूट डालो और राज करो पर चल रहे हैं।

वेद भगवान आदेश देते हैं **मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षत्** । अथर्व. ३.३०.३ अर्थात भाई-भाई से द्वेष ना करें। वेद भगवान के इस आदेश को मानकर पहले हम सभी दयानन्दी परिवार के सदस्यों एक दूसरे के प्रति द्वेष भाव को त्याग कर '**संगच्छध्वं**' की भावना के साथ कार्य करते हुए परस्पर सहयोग करके अपनी दशा दिशा सुधार कर धर्म के मार्ग पर चलकर स्वयं खुद को परिवार समाज वा राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले चलें। इस आपसी फूट की बीमारी का इलाज करने के लिए हमें उन स्वार्थी पद लोलुप लोगों को पहचान कर रास्ते से हटाना होगा जो अपनी पद लोलुपता और सत्ता प्राप्ति के कारण हमें आपस में लड़वा रहे हैं। आपसी फूट के इस राजरोग को जड़ से मिटाकर भाई-भाई से प्रेम करते हुए विश्व के सर्वश्रेष्ठ संगठन के श्रेष्ठतम सिद्धांतों के पथ पर पूरे विश्व को एक साथ लेकर चलें तभी हम सभी का कल्याण संभव है अन्यथा इस आपसी फूट के कारण हम एक बार फिर गुलाम हो जायेंगे तब आने वाली पीढ़ियां हमसे यह प्रश्न पूछेगी तो हमारे पास इसका कोई उत्तर नहीं होगा और हम भी जुए में हारे पांडवों की तरह चुपचाप सिर झुकाए अपनी भारत माता के द्रोपदी के चीरहरण को देखने के लिए विवश होंगे। ●

पृष्ठ क्र. ३० का शेष **बाढ़ ......**

लगाते नहीं। चिपको आन्दोलन चलाने वालों तथा पर्यावरण विदों को सनकी व मूर्ख समझा गया। हम यह भूल गये कि प्रकृति को बिना कुछ दिये हम उससे लेते ही रहे तथा अब हमें बाढ़ मिल रही है। पहाड़ों में खनन हेतु विस्फोट, वनों का व्यापक नाश तथा अंतहीन बांध परियोजनाओं ने उत्तराखण्ड एवं जम्मू कश्मीर में नदियाँ को बेलगाम बना दिया है। तूफानी नदियाँ विस्फोट से हिल चुके पहाड़ों को चीर डालती हैं क्योंकि पानी के वेग को रोकने वाला पेड़ों का हरा-भरा कवच अब नहीं रहा। नदियाँ अपने मूल स्वाभाविक मार्ग से गलत बान्धों के कारण किनारे छोड़ बेकाबू हो रही है। हमने उसके प्रवाह के साथ छेड़छाड़ कर दी है।

प्राकृतिक संतुलन को बहाल करने के लिए हमें पुरानी परम्पराओं पर चिन्तन करना होगा। अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे। पहाड़ों में खनन विस्फोटों को रोकना होगा। पहाड़ों को संरक्षित क्षेत्र घोषित कर पेड़-पौधों को काटने से बचाना होगा। नदी नालों के प्राकृतिक बहाव में रुकावटों को हटाकर मूल रूप में बहाल करना होगा। वर्षा ऋतु में हमें सचेत भी रहना होगा। अधिक वर्षा होने के संकेत हमें पूर्व में मिल जाते हैं। इन राज्यों में आई बाढ़ से हमें अन्य राज्यों में भी सावधानी रखनी होगी। यह प्रकृति का रौद्ररूप है जो कहीं भी और कभी भी विनाशकारी बन सकता है। उत्तराखण्ड और जम्मू कश्मीर में तो अब पुन: निर्माण करते समय पहले की भूलों से सबक लेना होगा। आवास भवन ऊँचे और सुरक्षित स्थानों पर ही बनावें जावे, बेसक थोड़ी जगह ही उपलब्ध हो जहां मानव सुरक्षित तो रह सकेगा। एक बार चपेट में आने पर दूसरी बार सावधान होना जरुरी है। ●

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की गतिविधियों का साक्षी बना वैदिक संसार

वैदिक संसार द्वारा समय-समय पर अनेकों स्थानों पर पहुँच कर आर्य जगत् द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार निमित्त संचालित गतिविधियों में सहभागिता का निर्वाह तथा सघन जन संपर्क हेतु उपस्थित होकर आँखो देखी गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाया जाता रहा है।

इसी तारतम्य में वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का एक विलक्षण भ्रमण कार्यक्रम राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश तथा उत्तराखण्ड के अनेक स्थानों पर दिनांक २३ सितम्बर से ८ अक्टूबर २०१४ तक पाँच राज्यों में सम्पन्न हुआ। प्रकाशक महोदय की अपनी लेखनी से प्रस्तुत है महत्वपूर्ण आँखों देखा चित्रण – **सम्पादक**

आर्य समाज ब्यावर का ९२वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न-

ऋषि दयानन्द के परम् शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली तथा नगर के मध्य विशालकाय भवनों में बालिका शिक्षा के लिये कार्य कर रही आर्य समाज ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.) का ९२वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २६ से २९ सितम्बर तक आर्य जगत् के **वयोवृद्ध संन्यासी, उद्भट विद्वान्, देश के विभिन्न प्रांतों के ९ स्थानों पर उत्कृष्टतम् गुरूकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती** के मुख्य आतिथ्य एवं उनके विशेष अभिनन्दन द्वारा हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर औरैया (उ.प्र.) से पधारे आचार्य राजवीर जी शास्त्री तथा बिजनौर (उ.प्र.) से पधारे भिष्म जी आर्य के धर्मोपदेश का लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया।

यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व तथा गतिविधियों का सुचारू संचालन संस्था पुरोहित पं. अमरसिंह विद्यावाचस्पति ने किया।

ऋषि दयानन्द के प्राण घातक जोधपुर प्रवास का १३१वाँ स्मृति दिवस सम्पन्न-

आर्य जगत् का सर्वाधिक क्षतिकारक ऋषि दयानन्द का प्राण घातक जोधपुर प्रवास का १३१वाँ स्मृति दिवस ऋषि स्मृति भवन न्यास जोधपुर राज. द्वारा दिनांक २४ से ३० सितम्बर २०१४ तक ऋषि को विष दिये गये भवन व भवन के विशाल प्रांगण में सम्पन्न किया जाकर वैदिक धर्म विस्तार हेतु न्यास द्वारा संचालित गतिविधियों को तीव्र गति देने का प्रयास किया गया।

प्राचीन स्वरूप में घास-फूस से तैयार अस्थायी विशाल यज्ञशाला में ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। परोपकारिणी सभा अजमेर से पधारे आचार्य पं. धर्मवीर जी, मेरठ से पधारे आचार्य वेदपाल जी, अबोहर (पंजाब) से पधारे इतिहास मर्मज्ञ पं. राजेन्द्र जिज्ञासु के प्रवचनों व दिल्ली से पधारे भजनोपदेशक पं. कंचन कुमार के भजनों का रसास्वादन उपस्थितों ने किया। ऋषि स्मृति भवन के प्रांगण में प्रस्तर द्वारा निर्मित भव्य यज्ञशाला निर्माणाधिन है तथा उपदेश महाविद्यालय एवं वानप्रस्थियों-संन्यासियों के आवास निर्माण हेतु प्रयास जारी होकर अतिशीघ्र निर्माण कार्य प्रारम्भ होने बाबद न्यास की ओर से अवगत करवाया गया।

न्यास प्रधान श्री विजय सिंह जी भाटी के नेतृत्व में उनके सहयोगियों तथा ऋषि स्मृति के सम्पादक पं. रामनिवास जी गुण ग्राहक, पुरोहित पं. रामनारायण जी शास्त्री एवं पं. विमलेश जी शास्त्री द्वारा अथक श्रम से आयोजन सम्पन्न होकर गतिविधियाँ सक्रियता से जारी है।

वैदिक प्रचार विहिन क्षेत्र फलौदी को वैदिक धर्म सिद्धांतों युक्त करने में जुटे हैं स्वामी सत्यानन्द जी-

पाकिस्तान सीमा तथा जैसलमेर जिले की सीमा के निकट जोधपुर जिले की दूरस्थ तहसील फलौदी से लगभग १० किलोमीटर की दूरी पर भाखरियाँ ग्राम के समीप स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती द्वारा स्वपरिवार द्वारा दान में दी गई २ बीघा भूमि पर पातंजल योगाश्रम की स्थापना लगभग वर्ष २००८ में कर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार इस क्षेत्र में प्रारम्भ किया गया। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि फलौदी नगर में किसी प्रकार की आर्य गतिविधियों की सक्रियता नहीं है। पश्चात् स्वामी जी द्वारा पातंजल योगाश्रम के प्रकल्प के रूप में **'सत्यानन्द सर्व कल्याण धमार्थ न्यास'** का गठन कर स्व अर्जित धन के ५० लाख रूपये न्यास के स्थायी निधि के रूप में समर्पित कर उसके ब्याज से कार्यों को गति प्रदान की। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ब्याज से अर्जित तथा दान से प्राप्त राशि का उपयोग स्वामी जी अपने निजी आवश्यकताओं में नहीं करते हैं। स्वामी जी हरियाणा के शाहजहाँ पुर क्षेत्र के निवासी होकर भारतीय सेना से सेवानिवृत है। आप पेन्शन के रूप में प्राप्त होने वाली राशि से अपने निजी व्यय सम्पन्न करते हैं। १ जुलाई २०१४ से स्वामी जी द्वारा प्राथमिक स्तर पर वैदिक विद्यापीठ प्रारम्भ किया गया है जिसमें ३६ बालक प्रात: ७:३० से सायंकाल ५:३० तक विद्या के साथ-साथ सर्वांगीण विकास से जुड़ रहे हैं। प्रत्येक बालक से २०० रू. शुल्क लिया जाकर पुस्तके, स्वल्पाहार आदि गुरूकुल की ओर से नि:शुल्क उपलब्ध करवाया जाता है। उपरोक्त बालकों में आठ बालक मुस्लिम परिवारों के भी है। जो गुरूकुल की यज्ञ-मंत्रपाठ आदि समस्त गतिविधियों में सम्मिलित होते हैं और अभिवादन नमस्ते करते हैं। बालकों का वेदारम्भ संस्कार २१ अक्टूबर को किया जावेगा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं गोरक्षार्थ अखिल भारतीय राजार्य सभा द्वारा २ अक्टूबर को दिल्ली के जंतर-मंतर पर तथा जनहित मोर्चा द्वारा माँस निर्यात बन्द करने एवं गोहत्या को सख्ती से प्रतिबंधित करने हेतु सांकेतिक धरना प्रदर्शन कर प्रधान मंत्री जी को ज्ञापन दिया-

पूर्व घोषित कार्यक्रम अनुसार अखिल भारतीय राजार्य सभा पीलीभित (उ.प्र.) के नेतृत्व में देश के अनेक स्थानों से पहुँचे आर्यो ने २ अक्टूबर गान्धी जयन्ति अवसर पर दिल्ली के जन्तर-मन्तर धरना-प्रदर्शन स्थल पर प्रात: १०:३० बजे यज्ञ उपरांत राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं गो रक्षार्थ धरना-प्रदर्शन कर स्वामी अग्निवेश जी सहित अनेक विद्वानों के उद्बोधन हुए समापन पश्चात् प्रधान मंत्री जी को ज्ञापन सौपा गया (देखें पृष्ठ क्र. १५)। उपस्थितों के भोजन का प्रबन्ध धरना स्थल पर ही सिक्ख गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी, दिल्ली द्वारा पूर्ण आत्मियता से किया गया। लगभग इन्हीं मांगों को लेकर जनहित मोर्चा द्वारा भी इसी दिवस को पृथक से सांकेतिक धरना-प्रदर्शन कर व्यापक आंदोलन की चेतावनी देते हुए मांगे पुरी न होने पर १५ फरवरी २०१५ से अनिश्चित कालीन विशाल धरने की घोषणा की गई (देखें विस्तृत समाचार एवं मांगे पृष्ठ ३९ पर)।

मूढमति जन कहते हैं कि देव सो रहे हैं और यहाँ लखमन परिवार में विवाह भी हो रहा है और परमपिता परमात्मा अपनी असीम कृपा की वर्षा भी कर रहा है – प्रसन्नचित्त के धनी, सेवाभावी-वरिष्ठ समाज सेवी एवं प्रतिष्ठित उद्योगपति श्री राधेश्याम जी शर्मा सुपुत्र पीतमसिंह जी शर्मा निवासी-शामली (उ.प्र.) के अनुज श्री हरिश्याम जी की सुपुत्री **सौ.का. स्वाती का विवाह संस्कार** श्री पुरूषोत्तम जी शर्मा, निवासी-राणाप्रताप बाग दिल्ली के सुपुत्र **चि. विवेक के संग** वयोवृद्ध वरिष्ठ समाज सेवी श्री रामधन जी शर्मा की प्रेरणा से एवं मार्गदर्शन में पूर्ण वैदिक विधि द्वारा वैदिक आचार्य द्वारा पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न करवाया गया। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि **श्री राधेश्याम जी शर्मा विवाह दिवस से मात्र चार दिवस पूर्व अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की प्रदेश सभा उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष पद के ऐतिहासिक निर्वाचन**

thearyasamaj.org

में अपने निकटतम् प्रतिद्वंदी से २३१ मत अधिक प्राप्त कर समाज का विश्वास अर्जित करने में सफल हुए हैं। वैदिक संसार परिवार की ओर से विवाह समारोह में उपस्थित होकर वर-वधु को मंगलमय जीवन हेतु आशीर्वाद प्रदान किया तथा राधेश्याम जी को प्रदेश अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने पर बधाई देते हुए उनके कार्यकाल में समाज के सर्वांगीण विकास हेतु शुभ कामनाएं व्यक्त करते हुए हरसंभव सहयोग की प्रतिबद्धता जताई।

गुरुकुल यमुनातट मंझावली, जिला फरीदाबाद (हरियाणा) के प्राकृतिक सुरम्य विशाल परिसर में निरन्तर १५ दिनों तक विशाल सात यज्ञ शालाओं के बृहद आकार के यज्ञ कुण्डों में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं सवा करोड़ गायत्री मंत्रों से आहूत होगी आहुतियाँ

शुभारम्भ हुआ ४ अक्टूबर २०१४ को

समापन होगा ८ मार्च २०१५ को,

व्यय होंगे लगभग सवा दो करोड़ रूपये–

वैदिक संसार माह सितम्बर २०१४ के पृष्ठ क्र. ३७ पर उपरोक्त आयोजन संबंधी संक्षिप्त समाचार पर्याप्त जानकारी के अभाव में प्रकाशित किया गया था। उपरोक्त आयोजन के शुभारम्भ पर आयोजन के मुख्य सूत्रधार एवं यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विद्यादेव जी पूर्व प्राचार्य उपदेश महाविद्यालय टंकारा से विस्तार से जानकारी प्राप्त की जो निम्नानुसार है।

पर्यावरण एवं वैचारिक प्रदूषण को दूर कर सर्व जन की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति तथा प्राणी मात्र के कल्याणार्थ इस बृहद आयोजन को किया जा रहा है।

इस बृहद यज्ञ हेतु अथर्ववेद के मंत्र सत्यं बृहद ऋतम् उग्र दीक्षा तपों ब्रह्म यज्ञ पृथिवि धारयन्ति के अनुसार यज्ञ की सात धाराए (१) सत्य, (२) ऋत, (३) दीक्षा, (४) तप, (५) ब्रह्म, (६) यज्ञ, (७) पृथिवि है उपरोक्तानुसार सात बृहद यज्ञ शालाओं का निर्माण प्राचीन स्वरूप में किया गया है सभी यज्ञ शालाओं में बृहद आकार के यज्ञकुण्ड लगभग ५ X ५ फिट चौड़ाई तथा लगभग ६ फुट गहराई के बनाये गये हैं जिसमें केसर, जावित्री, जायफल, लता कस्तुरी, ईलाइची, शहद आदि सुगंधित स्वास्थ्य वर्धक एवं रक्षक पदार्थ युक्त २०० क्विंटल देशी गाय का घी तथा लगभग ७०० क्विंटल सामग्री द्वारा निरंतर १५६ दिनों तक सवा करोड़ गायत्री मन्त्र तथा चारों वेदों के सम्पूर्ण मन्त्रों से आहुतियाँ प्रदान की जावेगी। इस भव्य यज्ञायोजन में आहूति प्रदान करने हेतु समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित है अतिथियों के भोजन-आवास का सुन्दर प्रबंध आयोजन समिति द्वारा किया गया है।

यज्ञ में आहूति देने के लिये वे महानुभाव ही पात्र होंगे जिनका जीवन दुर्व्यसन मुक्त हो तथा जो भारतीय वेशभूषा धोती-कुर्ता व महिलाए साड़ी पहने होंगी। प्रातः ४ से ५:४५ तक ध्यान एवं साधना अपने आवास स्थान पर, ५:४५ से ६:४५ तक सामुहिक आसन प्राणायाम, ७ से ९ बजे तक यज्ञ, ९ बजे से १० बजे तक यज्ञ वेदी एवं पात्रों का परिमार्जन, व्यवस्था आदि १० बजे से ११ बजे तक शंका समाधान एवं मार्गदर्शन, ११ से १ बजे तक भोजन, १ से २ बजे तक विश्राम, २ से ३:४५ तक आश्रम विहार, ३ से ५ बजे तक सायंकालीन यज्ञ, ५ से ५:४५ तक सेवाश्रम, ६ बजे से ७ बजे तक साधना आदि दिनचर्या में अनुशासित रूप से आगंतुकों की सहभागीता की अपेक्षा भी की गई है।

उपरोक्त आयोजन में सवा दो करोड़ रूपये व्यय होने का अनुमान है। आयोजन का उद्घाटन ४ अक्टूबर को महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) तथा अन्य विद्वानों की उपस्थिति में ४ अक्टूबर को किया गया तथा समापन ८ मार्च २०१५ को होगा।

आयोजन स्थल गुरूकुल मझावली यमुना तट पहुँचने के लिये दिल्ली-मथुरा रेल्वे लाइन पर वल्लबगढ़ स्टेशन से मंझावली ग्राम की बसे अथवा तिगाँव तक के टेम्पों और तिगाँव से मंझावली ग्राम के टेम्पों मिलते हैं तथा मंझावली ग्राम से लगभग एक किलोमीटर दूरी पर पक्की रोड़ पर गुरूकुल संचालित है रात्रि में आवागमन का कोई साधन नहीं मिलता है।

आर्य समाज सिविल लाईन, रामघाट रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ –

आर्य समाज, सिविल लाईन, रामघाट रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.) का ४वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ३ से ६ अक्टूबर २०१४ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ चार दिवस तक आयोजित इस आयोजन में भिन्न-भिन्न विषयों पर प्रतिदिन व्याख्यान हुए। हिमाचल प्रदेश से पधारे क्रांतिकारी, ओजस्वी आर्य नरेश जी, गाजियाबाद से पधारे पं. ब्रजेश जी शास्त्री तथा अन्य विद्वानों के व्याख्यान व भजन हुए। इस अवसर पर आर्य समाज सिविल लाईन को अपने जीवन का अधिकतम् योगदान देने के फलस्वरूप पं. शिवप्रसाद जी शर्मा का अभिनन्दन किया गया तथा आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् साहित्यकार पं. देवनारायण जी भारद्वाज द्वारा वैदिक संसार के प्रकाशक की तुलना पौराणिक जगत् के गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक हनुमान प्रसाद से करते हुए कहा की शर्मा जी वैदिक जगत् के हनुमान प्रसाद पोत्दार है इन्हें मात्र पुस्तक विक्रेता समझने की भूल न करे ये लोग अपनी लेखनी के माध्यम से असीमित कष्टों को सहते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही उनकी ओर से का माला, शाल, साहित्य तथा नगद राशि भेंट कर मुझे सम्मानित किया गया।

अपने इस प्रवास के समय मुख्य आर्य समाज, अचलतालाब, अलीगढ़ (उ.प्र.) पहुँचकर पुरोहित पुष्पेन्द्र जी शास्त्री से भेंट कर जानकारी प्राप्त की तथा अवलोकन किया।

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार उत्तराखण्ड में गुरूकुल बरनावा द्वारा आयोजित ५ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ सम्पन्न–

दिनांक २ से ८ अक्टूबर २०१४ तक हरिद्वार के आर्य जगत् के ऐतिहासिक स्थल जहाँ पर कुंभ मेले के समय महर्षि दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका पहराकर कुंभ-मेले में आये हुए श्रद्धालुओं का अंधविश्वास-पाखण्ड के विरूद्ध प्रवचन देते हुए वैदोक्त ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग दिखाया था जो वर्तमान में वैदिक मोहन आश्रम के नाम से जाना जाता है वहाँ पर चतुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ आचार्य अरविन्द जी गुरूकुल बरनावा (महाभारत काल का लाक्षागृह) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि विशाल भू-खण्ड पर फैले वैदिक मोहन आश्रम में डी.ए.वी. स्कूल संचालित हो रहा है।

वानप्रस्थ-संन्यास आश्रम-हरिद्वार – वैदिक मोहन आश्रम आयोजन समापन पश्चात वानप्रस्थ-संन्यास आश्रम हरिद्वार जो की विस्तृत तीन भुखण्डों पर पृथक-पृथक पास-पास ही तीन शाखाओं के माध्यम से कार्यरत है जहाँ पर सैकड़ों वानप्रस्थि एवं संन्यासी अपने जीवन की अंतिम संध्या में जीवन को वेदोक्त ज्ञान-ध्यान में समर्पित कर इस जीवन को सफल बनाकर आगामी जीवन के उत्कृष्ट निर्माण में लगे हुए हैं।

प्रकाशक महोदय ने स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, वेदमुनि जी, सुभाषचन्द्र आर्य तथा सदानन्द जी आर्य आदि महानुभावों से भेंट कर आश्रम का अवलोकन किया तथा गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की एवं सायंकालीन भोजन आश्रम में ग्रहण किया। **जांगिड ब्राह्मण सभा उत्तराखण्ड के अध्यक्ष अस्वस्थ**-हरिद्वार प्रवास के समय जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा उत्तराखण्ड के प्रदेश अध्यक्ष श्री शिवचरण जी शर्मा के अस्वस्थ होने के समाचार प्राप्त होने पर उनके निवास पहुँचकर उनसे भेंट कर कुशलक्षेम जाना तथा शीघ्र स्वस्थ हो दीर्घायु जीवन हेतु शुभकामनाऐं अर्पित की।

thearyasamaj.org

कोषिक्कोड में महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र वेदाश्रम का २००८ कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के साथ भव्य समारोह पूर्वक हुआ शिलान्यास

केरल में होगा द्रुत गति से वैदिक धर्म का शंखनाद

आर्य समाज का अपनी स्थापना से एक ही सबसे बड़ा उद्देश्य रहा है मानव मात्र को वेद तथा वैदिक संस्कृति का ज्ञान कराना। इसलिए वह देश-विदेश के प्रत्येक कोने में पहुँचकर लोगों की चेतना को जागृत कर ऋषियों की पावन संस्कृति से जोड़ने का सत्कार्य करता आ रहा है।

इसी पृष्ठभूमि में देवभूमि केरल में लोगों को महर्षि दयानन्द की मान्यताओं से अवगत कराने तथा साम्यवाद और इंसायत के बढ़ते प्रभाव से अपनी स्वयं की संस्कृति को भूलते जा रहे केरल वासियों तक वेदों का दिव्य ज्ञान पहुँचाने के लिए दीर्घकाल से अनेक प्रयास किये जा रहे थे जिसमें अनेक आर्य विद्वानों का योगदान रहा है-**आचार्य नरेन्द्र भूषण जी** को इसके लिए हमेशा याद किया जाएगा। उन्हीं से प्रेरणा पाकर **आचार्य एम.आर.राजेष जी** ने अपने जीवन को वेद की आज्ञाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए समर्पित कर दिया तथा उनके कार्य का ऐसा प्रभाव हुआ कि आज केरल में वेद मन्त्र पुन: घर-घर में उच्चारित होते हैं तथा प्रात:-सायं अग्निहोत्र की अग्नि घर-घर में प्रज्वलित होने लगी। कार्यों को और आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान का ५०० गज का भवन भी पर्याप्त नहीं था। अत: अधिक साधन की आवश्यकता थी।

उन सभी प्रयासों की परिणति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम) के रूप में हुई। जिसका शिलान्यास १५ अगस्त २०१४ शुक्रवार को कोषिक्कोड (कोझीकोड) केरल में भव्य राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के साथ समारोह पूर्वक हुआ।

वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह में आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त सर्वश्री **स्वामी सदानन्द जी** (पंजाब), **स्वामी प्रणवानन्द जी** (दिल्ली), **स्वामी सौम्यानन्द जी** (हरियाणा), **स्वामी ऋतस्पति जी** (होशंगाबाद), **महात्मा ब्रह्मुनि जी, महाशय धर्मपाल जी** चेयरमेन-एम.डी.एच., **सत्यपाल सिंह जी** माननीय संसद सदस्य, **विनय आर्य जी** महामंत्री-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, **धर्मपाल जी आर्य** वरिष्ठ उपप्रधान-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, **राजीव जी आर्य** महामंत्री-आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, **राधाकृष्ण जी वर्मा**, छत्तीसगढ़ सभा के मन्त्री **दीनानाथ जी वर्मा** एवं दिल्ली सभा के उप प्रधान **ओम प्रकाश जी आर्य** सहित देश के प्रत्येक कोने से आर्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ हुआ जिसमें चारों वेदों के मंत्रों का पाठ किया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वैदिक ओउम् ध्वज के साथ ही राष्ट्रगांन पूर्वक राष्ट्रीय ध्वजारोहण भी किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य एम.आर. राजेश जी थे जिन्होंने पिछले एक दशक से अपना तन मन एवं धन सब कुछ ऋषि के इस मिशन के पीछे समर्पित कर दिया है। मलयालम में दिये गये उनके स्वागत भाषण की प्रत्येक पंक्ति पर लगातार तालियों की गड़गड़ाहट हो रही थी। उन्होंने केरल की ओर दृष्टि करने एवं यहाँ पधारने के लिए सभी का धन्यवाद भी किया।

इस अवसर पर **महाशय धर्मपाल आर्य चेयरमेन एम.डी.एच. मसाले के कर-कमलों से नव संकल्पित वेदाश्रम भवन का शिलान्यास किया गया।** विधिवत वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ संकल्प व्यक्त किया गया कि आगामी १५ अगस्त २०१५ को इस भवन का लोकार्पण समारोह भी इसी प्रकार से भव्य रूप से मनाया जाए।

कोषिक्कोड का यह वेदाश्रम शिलान्यास समारोह कोई साधारण भवन के शिलान्यास की तरह नहीं था। इसमें भावना छिपी थी संस्कृति के संरक्षण की, वेदों के पुनरूद्धार की, ईसाई, मुस्लिम और कम्युनिस्ट विचारों के जबरदस्त प्रभाव के कारण दबाई, कुचली जा रही भारतीय अस्मिता की रक्षा की और यही कारण था कि विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने उद्बोधन में शंकराचार्य की इस जन्मभूमि में मथुरा से निकली देव दयानन्द की ज्योति को घर-घर में पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया।

समारोह में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. मसाले वालों ने कहा कि **यदि स्वर्ग चाहते हो तो ओम् का जाप करो, यज्ञ करो।** वेद का यही आदेश है-इस विचार को आचार्य जी घर-घर पहुँचा रहे हैं। जितना महान ये यज्ञ कर रहे हैं उसमें हम तो एक छोटी सी आहुति देने आए हैं। परमात्मा हम सबको ऐसा आशीर्वाद दे कि हम सब मिलकर यह कार्य पूरी शक्ति से कर सकें।

संसद सदस्य श्री सत्यपाल सिंह ने कहा कि लार्ड मैकाले ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का जो कुचक्र रचा उसका निराकरण वैदिक संस्कृति के संरक्षण और व्यापक प्रचार से ही संभव है। उन्होंने कहा कि यहां आकर देखा वो जो सोचा भी नहीं था। जो देखा वो स्वप्न ही है। उन्होंने कहा कि **सुदूर केरल में उचित वेद ज्ञान का यह सूर्य पूरे भारत में वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाएगा।**

आर्य सन्यासी स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने ऐसे भव्य आयोजन और शुभ संकल्प के लिए महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते हुए सभी दिशाओं में इस प्रकार के आश्रम खोलने को कहा।

कार्यक्रम में स्वामी सौम्यानन्द जी, स्वामी ऋतस्पति, डॉ. ब्रह्ममुनि जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह के अवसर पर आर्य समाज के सिद्धांतों को जन जन तक पहुंचाने के लिए **आचार्य एम.आर. राजेश जी द्वारा मलयालम भाषा में लिखी गई नौ पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।**

केरल के कोझीकोड में आयोजित इस भव्य समारोह में देश के विभिन्न आर्यसमाजों से आर्यजन पहुँचे थे इस समारोह की सबसे बड़ी विशेषता रही आगन्तुक अतिथियों को अतिथि सत्कार जिसने आने वाले प्रत्येक जन का हृदय जीत लिया। रेलवे स्टेशन से समारोह स्थल तक ले जाने, ठहरने का जो प्रबंध आयोजक कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन ने किया उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

अभूतपूर्व स्वागत

समारोह में पधारे प्रत्येक अतिथि का तुलसी के पत्तों की माला पहनाकर स्वस्तिवाचन के मंत्रों के साथ केरलीय ढोल नगाड़ों की थाप पर आत्मीयता पूर्वक स्वागत किया गया। ऐसा स्वागत लेखक ने इससे पूर्व कभी नहीं देखा। बस से उतरते ही **मलयालम की भूमि पर हिन्दी में नमस्ते का श्रवण आनन्दातिरेक से हृदय को पूरित कर रहा था।**

मण्डप द्वार पर स्थानीय निवासियों एवं अग्निहोत्र करने वालों का

thearyasamaj.org

रजिस्ट्रेशन किया जा रहा था जिसका प्रबन्ध अत्युत्तम था।

पेट भरा पर मन नहीं

चूंकि कार्यक्रम केरल में था और मन में यह धारणा पूर्व से ही बैठी हुई थी कि दक्षिण में तो रोटी मिलना मुश्किल है जितने दिन रूकेंगे केवल दाल चावल से काम चलाना होगा। किन्तु जब इस समारोह के अतिथि सत्कार को देखा तो पूर्व की सारी धारणाएँ ध्वस्त हो गई। प्रात:काल के नाश्ते में इडली, बड़ा, मेदुबड़ा, सांभर, नारियल की चटनी, पुलाव ने उत्तर भारतीय भोजन को विस्मृत करा दिया।

मध्याह्न में जब केले के पत्तों पर कयापातोरन, कोजीकोड, हलवा पायसा, केला फाई, चना मीठी, पूरी, चटनी, भाजी (केला, गाजर, आलू व अन्य मिक्स सब्जी) रोटी, दाल के साथ खाई तो आत्मा तृप्त हो गई। इतने स्वादिष्ट भोजन के उपरोन्त तो मुझसे रहा नहीं गया और आचार्य राजेश जी को कह दिया कि आचार्य जी पेट भरा है पर मन नहीं।

एक कांतदर्शी व्यक्तित्व आचार्य राजेश जी

केरल में वेदाश्रम की स्थापना का यह समारोह जितना भव्य और दिव्य रहा उतना ही भव्य और दिव्य है इसके पीछे अहर्निश कार्य करने वाला एक क्रान्तदर्शी व्यक्तित्व। जिनका नाम है आचार्य राजेश। कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक **आचार्य राजेश जी विगत एक दशक पूर्व केरल आये तो देखा कि केरल में वेद का मतलब बाइबिल है वैदिक शब्द का अर्थ पादरी है। बस यहीं से भीष्म प्रतिज्ञा कर संकल्प लिया कि केरल की नई पीढ़ी वेद को वेद कहेगी, वैदिक को वैदिक कहेगी, पादरी और बाइबिल नहीं** और लग गये महर्षि दयानन्द की मान्यता के अनुरूप वेद प्रचार के कार्य में।

इसके साथ ही शुरू हुआ महाभियान की मान्यता जिसमें जाति लिंग के भेद को भुलाकर सबको वेद के वास्तविक रूप से अवगत कराया। बिना किसी भेदभाव के सभी को परमात्मा के पुत्र-पुत्रियाँ मानते हुए वैदिक संध्या, हवन सिखलाना प्रारंभ किया। शाकाहार को बढ़ावा दिया। सेवा करके लोगों को जोड़ा।

बतौर आचार्य राजेश के अनुसार इसके लिए मातृशक्ति ने **गाँव-गाँव, घर-घर जाकर वेद प्रचार का कार्य किया और यही कामना है कि अतिशीघ्र ही केरल का प्रत्येक नागरिक वेद के सही अर्थ को समझ सके।** वेद प्रचार में रत इस तपोनिष्ठ व्यक्तित्व को शतश: प्रणाम एवं धन्यवाद।

आर्य शिरोमणि महादानी महाशय धर्मपाल जी द्वारा दो करोड़ रूपये दान देने का निर्णय महज दो सैकण्ड में

महाशय धर्मपाल जी गत फरवरी मास में जब वहाँ गए तब वहाँ वेदाश्रम के लिए भूमि दिखाई गई तो उन्होंने तुरन्त कहा खरीद लो एवं पूछा कि कितने की है। उन्हें जानकारी दी गई कि दो करोड़ रूपये की। महाशय जी ने कहा ठीक है। इस निर्णय में महाशय जी ने दो सैकण्ड का भी समय नहीं लिया। **महाशय जी वेदाश्रम के लिए पूर्ण व्यय कर सकते हैं। लेकिन आर्यजनों को प्रेरित करने के लिए एक करोड़ ग्यारह लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रूपये (रू. १,११,११,१११/-) दान देने की घोषणा विशाल मंच से की। महाशय जी की घोषणा से आर्यजनों ने राशि देने की घोषणा शुरू कर दी है और इसी दिन ७५ लाख रूपये के संकल्प व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में उपस्थित एक ऑटो चालक ने भी मंच पर आकर १०,००० रू. दान दिए।**

विशाल मंच पर **स्वामी प्रणवानन्द जी ने महाशय धर्मपाल जी के द्वारा महर्षि दयानन्द के मिशन एवं आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा करते हुए महाशय धर्मपाल जी को "महात्मा" कहकर सम्बोधित किया।**

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ

कश्यप वेद रिसर्च फाउण्डेशन तथा दिल्ली सभा के संयुक्त तत्वावधान में वेदाश्रम के इस शिलान्यास समारोह का सर्वप्रमुख आकर्षण का कोई केन्द्र रहा तो वह था राष्ट्रसमृद्धि महायज्ञ। शिलान्यास समारोह होते हुए भी इसने वैदिक कालीन याग सत्रों का स्मरण करा दिया।

राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ के इस अवसर पर २००८ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। या के प्रारम्भ से पूर्व यज्ञ में यजमान बनने के लिए लोग पंक्तिबद्ध होकर विशेष काउण्टरों पर अपना रजिस्ट्रेशन करा रहे थे। इस यज्ञ का ब्रह्मा कौन बने तो उपस्थित **संन्यासी परिषद ने निर्णय दिया कि जो पिछले ग्यारह वर्षों से लगातार लोगों को संध्यावंदन एवं यज्ञ सिखला रहे हैं वे आचार्य राजेश जी ही ब्रह्मापद के अधिकारी है।**

आचार्य राजेश जी के ब्रह्मत्व में राष्ट्र समृद्धि यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के पूर्व गुरुवंदन सूक्त, भाग्य सूक्त तथा संगठन सूक्त का पाठ किया गया। पश्चात वैदिक संध्या के साथ यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। यज्ञ में ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों के पश्चात छोटे दीपक से बड़ा दीपक जलाया गया। यजमानों ने समिधाधान मंत्रों में अत्यन्त भावपूर्ण समर्पण के साथ समिधाओं को हृदय से लगा कर यज्ञ में आहुती दी।

यज्ञ में यजमान बना प्रत्येक व्यक्ति एक जैसी भारतीय वेशभूषा में था। पुरुषों ने धोती व उत्तरीय पहना हुआ था जबकि महिलाओं ने गोल्डन कशिदाकारी युक्त श्वेत साड़ी पहन रखी थी। वस्त्रों की यह एकरूपता दिव्यता का स्मरण करा रही थी कि श्वेत वस्त्रों के समान जीवन भी उदस्त भावों से श्रेष्ठ बने। यज्ञ में प्रत्येक यजमान के लिए पृथक-पृथक तांबें के यज्ञ कुण्ड थे। सभी के लिए छोटा दीपक, बड़ा दीपक, समिधा, सामग्री, घी, यज्ञपात्र थे जो स्वयं यजमान लेकर आये थे। यज्ञ के प्रति यह उनकी अगाध श्रद्धा का परिचायक थी।

यज्ञ समापन के उपरान्त मलयालम भाषा में यज्ञ प्रार्थना एवं विश्वकल्याण की कामना की गई। इस यज्ञ की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें बच्चे एवं बुजुर्गों के अतिरिक्त ८० प्रतिशित युवा दम्पत्तियों ने आहुतियां दी।

३०० के लगभग स्वयं सेवक इस महान राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ में अपनी सेवाऐं दे रहे थे उनके कर्तव्य के प्रति समर्पण को बारम्बार प्रणाम। यज्ञ के अंत में **"होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से"** भजन गाकर यज्ञ के भौतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को बतलाया गया।

लगभग ५०००० नर-नारियों ने इस महान यज्ञ में भाग लिया तथा सबके लिए भोजन की सुंदर व्यवस्था की गई थी।

-विनय आर्य

चित्रावली देखें पृष्ठ क्र. २ पर

पृ. २७ का शेष **कर्मफल सिद्धांत.....**

जल प्रलय के पश्चात् प्राकृतिक आपदाओं में वायरस-रोगाणु अन्य बीमारियों से हजारों मानव काल-कवलित हो, जाते हैं। पहिले मलेरिया, फिर टी.बी. (तपेदिक) और अब डेंगू, मेननजाइटिस, एवसेफिलाईट्स, चिकनगुनियाँ, कैंसर और अभी पिछले एक दो महिनों से इबोला महामारी/बीमारी का नाम सुना जा रहा है। मानव द्वारा इतनी पीड़ा, यातना और परिणाम स्वरूप मृत्यु को भी क्या कर्मफल सिद्धांत की परिधि में लाया जा सकता है? क्या इनके द्वारा ईश्वर पीड़ा व मृत्यु देने के नये-नये औजारों का निर्माण करता है?

आर्य संन्यासियों व विद्वानों से आग्रह है कि इस लेख का पता चलने पर अपने विचारों से आर्य जनता को लाभान्वित करें, मौन न रहें। मैं निवेदन कर रहा हूँ कि आर्यजगत् व इतर की पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों से नाचीज लेखक को पर्याप्त प्रोत्साह मिल रहा है। यह लेख विद्वानों व संन्यासियों से समाधान की अपेक्षा रखता है। ●

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की वर्ष के ३६५ दिन सक्रिय

प्रेरणास्पद, शीर्षस्थ संस्था

आर्य समाज गान्धीधाम का भव्य हीरक जयन्ती समारोह

दिनांक १२ से १४ दिसम्बर २०१४ तक

आर्य जगत् गुजरात भूकम्प त्रासदी पीडितों तथा पांडिचेरी में सुनामी की भीषण त्रासदी में अपनों को खो चुके बालक-बालिकाओं के जीवन निर्माण हेतु गान्धीधाम व पांडिचेरी में आर्यसमाज गान्धीधाम द्वारा संचालित प्रकल्प 'जीवन प्रभात', संस्कार केन्द्र, डी.ए.वी.वी, प्रस्तावित वोकेशनल ट्रेनिंग सेन्टर आदि प्रकल्पों से सुपरिचित ही है।

प्रतिवर्षानुसार की भांति इस वर्ष का वार्षिकोत्सव विशेषता लिये हुए आर्य समाज गांधीधाम के **'हीरक जयन्ती समारोह'** के रूप में संस्कार केन्द्र के भव्य सभागर में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है जिस हेतु समस्त आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान्

आचार्य नन्दिता जी शास्त्री, पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी (उ.प्र.)
पं. कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री, अहमदाबाद (गुजरात)
स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, फरीदाबाद (हरियाणा)
साध्वी डॉ. उत्तमा यति जी, वैदिक आश्रम अजमेर
आर्य पथिक गिरीश जी खोसला, अमेरीका
आचार्य सत्यानन्द वेदवागी जी,
आचार्य बलवीर जी, रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुभाष वेदालंकार तथा आर्य जगत् के अनेक विद्वान्, पदाधिकारी एवं गणमान्य महानुभाव पधार रहे हैं। कृपया धर्मचर्चा का लाभ प्राप्त कर।

निवेदक एवं सम्पर्कः-

प्रधान-पुरूषोत्तम पटेल, चलभाष-९८२५२२९८७९
महामंत्री-आचार्य वाचोनिधि, चलभाष-९५१००३२९२७
कोषाध्यक्ष-गुरूदत्त शर्मा, चलभाष-९४२६२१५३३८
मंत्री-मोहन जांगिड, चलभाष-९४२६२१५४५१

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ. सुरेन्द्रकुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' सम्मान

सामाजिक एवं औद्योगिक संस्था **'देव विमल हर्बल हैरिटेज एण्ड एजुकेशनल सोसायटी'** देहरादून की ओर से एक भव्य अलंकरण समारोह में १४ सितम्बर, २०१४ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति **डॉ. सुरेन्द्रकुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' के सम्मान से सम्मानित किया गया।** डॉ. सुरेन्द्रकुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने के फलस्वरूप दिया गया।

इससे पूर्व इन्हें 'ऑल इंडिया कांफ्रस ऑफ इंटलेक्चुवल सोसायटी, दिल्ली' की ओर से **'उत्तराखण्ड रत्न'** अलंकरण से सम्मानित किया गया था।

-डॉ. प्रदीप जोशी, जनसूचना अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., हरिद्वार

पशु बचाओ, देश बचाओ, कैंसर से भी राहत पाओ।
बच्चें, बूढ़े, बीमारों को, शुद्ध दूध उपलब्ध कराओ।।

अनिश्चितकालीन विशाल धरना प्रदर्शन

जनहित मोर्चा द्वारा माँस निर्यात बन्द करने हेतु
१५ फरवरी रविवार २०१५ से जन्तर मन्तर, नई दिल्ली पर

प्रमुख मांगे :- १. गोश्त (माँस) के निर्यात लाइसेंस रद् कर तत्काल गोस्त का निर्यात बन्द किया जाए।

२. गो हत्या रोकने के लिए गोवध अधिनियम का सख्ती से पालन हो तथा इस सम्बन्ध में केन्द्र सरकार द्वारा नया राष्ट्रीय कानून लाया जाये।

३. अवैध कमेले व गौवध को पकड़ने व पकड़वाने वालों को पुरस्कृत करते हुए उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाये।

४. गोश्त (माँस) निर्यात पर भारी मात्रा में दी जाने वाली छूट पशु पालन (डेरी उद्योग) को दी जाये।

बन्धुओं, आज बड़े पैमाने पर देश से खाड़ी के देशों को गोश्त का निर्यात किया जा रहा है। निर्यात में गोश्त की अधिक कीमत मिलने के कारण कम दूध देने वाली भैसों एवं अन्य दूधारू पशुओं का भी कटान करके गोश्त निर्यात किया जा रहा है। भैंस का गोश्त निर्यात होने के कारण स्थानीय आपूर्ति लिए लोग चोरी छिपे भारी मात्रा में गोवध भी कर रहे हैं। गोश्त की सप्लाई से अधिक लाभ होने के कारण गोश्त की स्थानीय आपूर्ति व निर्यात के लिए लोग अवैध रूप में कमेले चला रहे हैं व दुधारू पशुओं की चोरी कर कटान कर रहे हैं। इससे पशुओं की चोरी होने व गोवध होने पर साम्प्रदायिक माहौल बिगड़ने की भी पूरी संभावना रहती है। जनता व पुलिस इस अवैध धन्धे से जुड़े धनी ताकतवर, राजनैतिक संरक्षण प्राप्त लोगों के विरूद्ध ठोस कार्यवाही करने से बचती रहती है। इसी प्रकार, देश से गोश्त का लगातार निर्यात होता रहा तो अगले १० वर्षो में दुधारू पशुओं की भयंकर कमी व महंगाई हो जायेगी और बच्चे, बूढ़े, बीमारों को भी शुद्ध दूध उपलब्ध नहीं होगा। वर्तमान में भी जितने दूध व घी की खपत है उतना उपलब्ध न होने के कारण नकली (सिन्थेटिक) दूध व घी बाजार में सप्लाई किया जा रहा है जिससे लोग कैंसर जैसी घातक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं।

इस प्रकार की कई अन्य गंभीर समस्यओं का निराकरण व जनहित के कार्य किये जाने आवश्यक है परन्तु वर्तमान विस्फोटक स्थिति को देखते हुए सर्वप्रथम जनहित मोर्चा द्वारा गोश्त निर्यात के विरूद्ध निर्णायक अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है जिसके लिए दिनांक २ अक्टूबर २०१४, गान्धी जयन्ती के अवसर पर गान्धी जी की समाधि राजघाट दिल्ली पर पुष्प अर्पित कर जन्तर-मन्तर, दिल्ली पर प्रातः १०:३० बजे एकदिवसीय धरना व प्रदर्शन कर केन्द्र व राज्य सरकारों से गोश्त के निर्यात के लाइसेंस शीघ्र निरस्त कर गोश्त निर्यात बन्द करने की मांग की जायेगी। इसके बाद फरवरी २०१५ तक जनपदों व मंडल मुख्यालयों पर जनजागरण हेतु धरना प्रदर्शन कर केन्द्र व राज्य सरकार से इस सम्बन्ध में कार्यवाही करने ही मांग की जायेगी। यदि सरकारों द्वारा प्रभावी कार्यवाही नहीं की गयी तो १५ फरवरी २०१५ से जन्तर-मन्तर दिल्ली पर जनहित मोर्चा (जे.एच.एम.) द्वारा आर-पार की लड़ाई लड़ी जायेगी।

कैम्प कार्यालय : १६६, रामबाग सूरज कुण्ड रोड, मेरठ (उत्तरप्रदेश)
चलभाष : ९३५९९९१८१३, ९७२०३२११३०, ९४११०२३०३४, ८६५०५०६०९९, फैक्सः ०१२१-४०२३८९९, ६७

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की प्रखर राष्ट्रवादी, ओजस्वी वक्ता सुश्री अंजलि आर्या द्वारा (म.प्र.) के बड़नगर एवं देपालपुर में वेद कथा तथा निजी शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक १६ सितम्बर २०१४ को आर्य समाज बड़नगर के तत्वावधान में नगर के मध्य आजाद चौक पर वेदकथा का आयोजन सुश्री अंजलि आर्या, करनाल हरियाणा के मुखारविन्द से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया (भोपाल) के सुमधुर भजनों का भी आनन्द उपस्थितों ने प्राप्त किया। आयोजन में उज्जैन संसदीय क्षेत्र के सांसद मा. डॉ. चिन्तामन जी मालवीय विशेष रूप से आमंत्रित थे। सांसद महोदय का निर्वाचित होने के बाद नगर में प्रथम नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक श्री मुकेश जी पंड्या श्री शान्ति जी धबाई, पूर्व विधायक तथा अन्य गणमान्य महानुभाव भी पधारे। गणमान्य अतिथियों का आर्यसमाज बड़नगर की ओर से अभिनन्दन किया गया। सुश्री अंजली आर्या के मुख से होने वाली वेदवाणी की वर्षा का अमृत पान करने बड़ी संख्या में महिला पुरूष उपस्थित थे कार्यक्रम पूर्णतः सफल रहा इसका श्रेय प्रधान-राजेन्द्र जी यादव, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरीता आर्या, मंत्री-अरूण भावसार, गोपाल जी चोटिया, मनोज प्रजापत तथा समस्त सहयोगियों को जाता है।

स्मृति शेष श्री गणपत जी प्रजापति की पावन स्मृति में भी परिवारजनों द्वारा वेद कथा का आयोजन

१६ सितम्बर को आर्य समाज बड़नगर के तत्वावधान में वेदकथा सम्पन्न होने के बाद दिवंगत गणपत जी प्रजापति, बड़नगर की पवित्र स्मृति में उनके परिवार द्वारा एक दिवसीय वेद कथा का आयोजन म.प्र. कांग्रेस कमेटी के सदस्य मुरली जी मोरवाल की अध्यक्षता तथा सुश्री अंजलि आर्या के मुख्य वकृत्व में सम्पन्न हुआ। बैरसिया (भोपाल) से पधारे पं. कमल किशोर शास्त्री के वैदिक सिद्धांतों से ओत-प्रोत मंत्र मुग्ध करने वाले भजनों का भी लाभ उपस्थितों ने प्राप्त किया इस अवसर पर उज्जैन संभाग के प्रभारी श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य, संजय मल्होत्रा एडव्होकेट, डॉ. वासुदेव काबरा-गोसेवा अध्यक्ष बड़नगर, गीता भवन के अध्यक्ष हरिकिशन जी मेलवाणी एवं गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए।

आर्य समाज देपालपुर में दो दिवसीय वेद कथा का आयोजन

इसी तारतम्य में मध्यकालीन आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा इंदौर संभाग प्रभारी श्री गोविन्द राम जी के प्रयासों से दो दिवसीय वेदकथा का आयोजन सुश्री अंजलि आर्या के भजन-प्रवचनों के द्वारा सम्पन्न हुआ। पं. कमल किशोर जी शास्त्री के भी भजन की रसधारा प्रवाहित हुई बड़ी संख्या में श्रद्धालुजनों ने उपस्थित होकर धर्म लाभ प्राप्त किया।

मोरवाल मैरेज गार्डन का शिलान्यास हुआ ऋषि का स्वप्न हुआ साकार

कौन कहता है पंडित, पुरोहित पुरुष ही हो सकते हैं

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं का भी वेद पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने की पैरवी करने का ही आज परिणाम है कि महिलाए धर्म क्षेत्र में भी पुरूषों से पीछे नहीं आर्य जगत् की सुप्रख्यात प्रवचनकार सुश्री अंजलि आर्या ने मोरवाल परिवार द्वारा भव्य मोरवाल मैरेज गार्डन बड़नगर के प्रस्तावित भवन का पूर्ण वैदिक विधि-विधान से सैकड़ों नर-नारियों की उपस्थिति में शिलान्यास कर इस भ्रांति को झूठला दिया की महिलाऐं पुरोहिताई कार्य नहीं कर सकती। वैसे तो सुश्री अंजलि जी ने अनेकों कार्यक्रमों में यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व पूर्ण योग्यता के साथ निर्वाह किया है तथा धरमपुरी में वेद विद्या मन्दिर की स्थापना के समय यज्ञोपवित संस्कार में पं. सूर्यदेव जी शर्मा के साथ सहभागिता का निर्वाह कर अहम् भूमिका का निर्वाह किया था किन्तु शिलान्यास कार्यक्रम करवाते देखने का प्रथम और विलक्षण अनुभव था इससे ऋषि दयानन्द का महिलाओं की प्रगति का स्वप्न साकार हुआ है। इस कार्यक्रम में सम्पन्न यज्ञ के मुख्य यजमान श्री जगमोहन जी मोरवाल, श्री मुरली जी मोरवाल सदस्य-म.प्र. कांग्रेस कमेटी तथा उनके अनुज सपत्निक तथा परिवार के अन्य सदस्य थे। निजी कार्यक्रम होने के बाद भी मोरवाल परिवार द्वारा आकस्मिक की गई व्यवस्थाएँ इतनी भव्य थी की शिलान्यास कार्यक्रम न होकर यह आयोजन वेद प्रचार का एक दिवसीय आयोजन बन गया। मोरवाल परिवार द्वारा सुश्री अंजलि आर्या सहित समस्त विद्वानों का आत्मीय अभिनन्दन किया गया तथा उपस्थित समस्त श्रद्धालुओं के भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई।

उपरोक्त समस्त कार्यक्रमों में युवा भजनोपदेशक पं. संजय जी आर्य कानड़ (शाजापुर) द्वारा भी अपनी सेवाए प्रदान की गई मंच संचालन का भार वयोवृद्ध पं. नाथुलाल जी ने वहन किया तथा वैदिक संसार एवं वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संयुक्त प्रयास से वेद प्रचार वाहन का उपयोग कर प्रचार-प्रसार किया गया तथा साहित्य का विक्रय केन्द्र लगाकर उपस्थितों को साहित्य सुलभ करवाया। समूचे आयोजनों की सफलता हेतु राजेन्द्र जी यादव, मनोज प्रजापत, अर्पित यादव, अरूण भावसार आदि युवा कार्यकर्ताओं की सक्रिय भूमिका का श्रेय जाता है। सुखद स्मृतियों को संजोए हुए आर्य समाज बड़नगर के शताब्दी वर्ष आयोजन जनवरी में होने वाले भव्य आयोजन में इन आयोजनों से मार्ग प्रशस्त होगा। (समस्त आयोजनों की चित्रावली पृष्ठ ०३, ०४ तथा ४५ पर देखने का कष्ट करें)

आर्य वीर दल द्वारा आत्मरक्षा एवं योग शिविर का भव्य आयोजन

आर्यग्राम सुवासा तह.-बड़नगर, जिला-उज्जैन (म.प्र.) में दिनांक ०८ सितम्बर से १४ सितम्बर २०१४ तक आर्य समाज सुवासा द्वारा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रा. सभा भोपाल के आर्यवीर प्रशिक्षक श्री कृपालसिंह जी आर्य ने बच्चों को योगआसन, प्राणायाम, व्यायाम, जूडो-कराटे (मार्शल आर्ट) एवं शस्त्र संचालन की शिक्षा प्रदान की। शिविर में लगभग १०० युवा आर्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षक श्री कृपालसिंह जी आर्य ने बच्चों को बताया समझाया कि आर्य समाज के छटे नियम **''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक आत्मीक व सामाजिक उन्नति करना''** यही आर्यवीर दल का उद्देश्य है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

अन्तिम दिन आर्यवीरों का विशाल चल समारोह निकाला गया १००-१५० आर्यवीरों ने भाग लिया व अपने कौशल का प्रदर्शन किया। चल समारोह में ग्राम वासियों की भारी संख्या उपस्थिती रही। शिविर कार्यक्रम में आर्य समाज सुवासा के प्रेरणा स्त्रोत श्री कैलाश काका प्रधान, आर्यवीर दल अधि. श्री अरूण जी आर्य, सभी पदाधिकारियों एवं आर्य परीजनों ने पूर्ण सहयोग प्रदान कर कार्यक्रम को सफलता प्रदान की।

मध्य भारतीय प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा उज्जैन संभाग प्रभारी श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य, मौलाना तथा सहयोगियों के प्रयासों से मौलाना, बड़नगर, सुवासा, खरसौद कलां तथा बड़नगर एवं खरसौद तहसीलों के ने अनेक ग्रामों में आर्य वीर दल की शाखाऐं स्थापित कर शिविरों का आयोजन किया जाकर भावी युवा पीढ़ी को वैदिक धर्म संस्कृति से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है जिसकी सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हो रही है यहाँ यह उल्लेखनीय है की पूर्व में उज्जैन जिला मुख्यालय पर प्रांत स्तरीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर राष्ट्रीय प्रधान स्वामी देवव्रत जी के आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन में सम्पन्न किया जा चुका है।

thearyasamaj.org

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ जुलाई २०१४ से २० अक्टूबर २०१४ तक

स्वैच्छिक अनुदान

दिल्ली : श्री राधेश्याम जगदीश प्रसाद जी शर्मा-रामनगर दिल्ली-३९, आचार्य भगवानदेव जी वेदालंकार-विकासनगर दिल्ली-५९।
उत्तरप्रदेश, जिला-मेरठ : सत्यकाम इंटरनेशनल स्कूल-मेरठ, श्री कृपालसिंह जी वर्मा-कंकरखेड़ा मेरठ।
जिला-अलीगढ़ : श्री देवनारायण जी भारद्वाज-अलीगढ़।
गुजरात, जिला-भुज : श्री शंकरलाल जी आर्य-गांधीधाम,
जिला-आणंद : मेजर कन्हैयालाल जी आर्य 'कनु-काका'-आणंद।
मध्यप्रदेश, जिला-ग्वालियर : श्री ब्रह्मदत्त गोविन्दराम जी शर्मा-ग्वालियर, श्री अभिमन्यु कुमार जी खुल्लर-ग्वालियर, श्री जयकुमार तोताराम जी जांगिड-ग्वालियर।
राजस्थान, जिला-पाली: श्री रामनिवास जोगाराम जी जांगिड-पाली
जिला-जोधपुर: डॉ. खेत जी गिरधारीलाल जी लखानी-जोधपुर।

आजीवन

दिल्ली: श्री ओ.पी. आर्य 'अधिवक्ता'-पटपड़गंज दिल्ली।
मध्यप्रदेश, जिला-उज्जैन: श्री भारतेन्द्र फूलचन्द जी आर्य-खरसौद कलां।
हरियाणा, जिला-गुड़गाँव: श्री सीताराम लक्ष्मीनारायण जी जांगिड-पचगांवा।
उत्तरप्रदेश, जिला-पाली: डॉ. पपेन्द्र नत्थुसिंह जी आर्य-रामघाट रोड़ अलीगढ़।
जिला-शामली: श्री राजपाल बूलचन्द जी आर्य-शामली, श्री त्रिलोकचन्द नकलीसिंह जी जांगिड-शामली, श्री राधेश्याम प्रितमसिंह जी जांगिड-शामली।

त्रैवार्षिक

हरियाणा, जिला-मेवात: ब्र. सत्यप्रकाश जी आर्य-फिरोजपुर झिरका।
उत्तरप्रदेश, जिला-गाजियाबाद: श्री ओमनारायण जी शर्मा-गाजियाबाद।
जिला-बुलन्द शहर: श्री इन्द्रदेव जी गुलाटी संस्थापक हिन्दू महासभा-बुलन्द शहर, श्री शैलेन्द्र जी जौहरी-बुलन्द शहर।
मध्यप्रदेश, जिला-इन्दौर: श्री बनारसीलाल शम्भूनाथ जी चौपड़ा-जानकीनगर इन्दौर, श्री सत्यनारायण जी शर्मा-वैभवनगर इन्दौर।
जिला-शिवपुरी: श्री मनोज जी अग्रवाल-ब्यूटी कलेक्शन शिवपुरी।
जिला-उज्जैन: श्री राधेश्याम मांगीलाल जी गेहलोत-बड़नगर, ठा. कान्हसिंह दौलतसिंह जी राठौर-असावता (बड़नगर)।
जिला-शाजापुर: श्री महेशचन्द्र मदनलाल जी शर्मा-शाजापुर, पण्डित श्री हीरालाल जी आर्य-वेद मन्दिर बेरछा, श्री नागेश्वर कैलाशचन्द्र जी विश्वकर्मा-शाजापुर।
राजस्थान, जिला-जयपुर: श्री सतीशकुमार जी मित्तल-मानसरोवर।
जिला-उदयपुर: श्री भंवरलाल चोखाराम जी भारद्वाज-उदयपुर।
जिला-जोधपुर: श्री चुन्नीलाल दीपाराम जी आर्य-मारवाड़ बिठड़ी।
जिला -पाली: श्री भंवरलाल सुखजी जांगिड-पाली, श्री जगदीशप्रसाद पुनमचंद जी जांगिड-पाली, श्री सोहनलाल अजाराम जी चितारा-पाली, श्री मूलचन्द भंवरलाल जी गेहलोत-पाली, श्री बाबूलाल सोहनलाल जी जांगिड-पाली।

वार्षिक

महाराष्ट्र, मुम्बई: श्री डी. एन. राठौर-नंदीवली (ईस्ट)।
दिल्ली: स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती-गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली-४९।
उत्तराखण्ड, जिला-हरिद्वार: डॉ. दिनेन्द्र सिंह लहरीसिंह जी-रूड़की, स्वामी ब्रह्मानन्द जी-वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार, श्री वेदमुनि जी-वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार, श्री सुभाषचन्द जी गर्ग-वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार, श्री सदानन्द जी आर्य-वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार।
हरियाणा, जिला-अम्बाला: श्री गोपालकृष्ण जी धीमान-जगाधरी।
जिला-पलवल: श्री महेन्द्रसिंह बुधसिंह जी-हसनपुर।
जिला-पानीपत: श्री महेन्द्रसिंह रामस्वरूप जी-पलड़ी।
उत्तरप्रदेश, जिला-बदायूँ: श्री देवेन्द्रपाल जी पाठक-बदायूँ।
जिला-बाँदा: श्री वेदमित्र शिवमुनि जी गुप्त-बबेरू।
जिला-गाजियाबाद: श्री विनोद अवधपालसिंग जी चौकरी-जटवाड़ा।
जिला-सहारनपुर: श्री राजनितिनसिंह जी रावत-सहारनपुर।
जिला-शामली: अभिनन्दन मंशाराम जी जांगिड-शामली, श्री नेपालसिंह खेमचन्द जी-झाल।
जिला-फर्रूखाबाद: श्री हरिदेव बृजनन्दन सिंह जी शास्त्री-फर्रूखाबाद।
जिला-बिजनौर: कृष्णपालसिंह लक्ष्मणसिंह जी आर्य-माढ़ी (शेरपुर), कु. मनिषा राजेश सिंह आर्या-धौलागढ़।
जिला-अलीगढ़: श्री जयनारायण जी शर्मा-अलीगढ़, श्रीमती ललिता देवी उमेशकुमार राघव-अलीगढ़, श्री विश्वपाल बलवीरसिंह जी-अलीगढ़, श्री सत्यवीर रघुवीरसिंह जी-कासिमपुर, श्री ब्रह्मानन्द मोहनलाल जी वर्मा-मठिया, श्री महिपालसिंह रतीराम जी माहौर-अलीगढ़।
राजस्थान, जिला-उदयपुर: श्री देवनारायण हीरालाल जी शर्मा-उदयपुर।
जिला-धौलपुर: श्री रामनिवास जी गर्ग-बाड़ी।
जिला-नागौर: श्री भंवरलाल नारायण जी जांगिड-नेवड़ा।
जिला-भरतपुर: श्री प्रभुदयाल मोहनलाल जी शर्मा-भरतपुर, आर्यसमाज-भरतपुर।
जिला-सिरोही: स्वामी जगतमुनि जी-आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय-देलवाड़ा आबू पर्वत।
जिला-पाली: श्री मूलचन्द पूनमचंद जी जांगिड-पाली, श्री रामदेव शंकरलाल जी जांगिड-पाली, श्री राकेश कुमार सोहनलाल जी सोनी-पाली।
जिला-अजमेर: श्री दीवानसिंह मानसिंह जी चौधरी-ब्यावर, श्री किशनलाल जी जांगिड-ब्यावर, श्री वैभव महेन्द्र जी तोषनीवाल-ब्यावर।
जिला-जोधपुर: श्री दिलीप सिंह इन्द्रसिंह जी चौहान-सूरसागर, श्री गजेन्द्र मांगीलाल जी साँखला-मगरा पूंजला, मोहनलाल बूलीदान जी मोखा-फलौदी, श्री बालकिशन लक्ष्मीनारायण जी नागल-फलौदी, रामकिशोर राधाकिशन जी गोयल-फलौदी, श्री माणकलाल प्रेमराज जी सुथार-फलौदी।
मध्यप्रदेश, जिला-इन्दौर: श्री पवन कैलाशचन्द्र जी राठौर-हरसौला, श्री बाबूलाल घिसाजी चौधरी-भिडौता (गोकलपुर), श्री चन्द्रशेखर इन्द्रसिंह जी यादव-देपालपुर, श्री हेमराज कनीराम जी-देपालपुर, श्री मदनलाल रामलाल जी आर्य-मेघदूत नगर इन्दौर, श्री ओमप्रकाश रामलाल जी नागवंशी-स्कीम ७८ इन्दौर।
जिला-ग्वालियर: आर्य समाज लश्कर-ग्वालियर, श्री भगवानदास जी शर्मा-ग्वालियर।
जिला-विदिशा: श्री जगन्नाथ सिंह रामप्रसाद जी ठाकुर-विदिशा
जिला-शिवपुरी: श्री प्रतिकराज प्रेमनारायण जी शिवहरे-शिवपुरी
जिला-नीमच: श्री रामकुँवर चन्दनमल जी शर्मा-रेवली देवली,
जिला-मन्दसौर: श्री बाबूलाल शिवनारायण जी-नेनोरा, श्री मनोहर ओमप्रकाश जी शर्मा-लिलदा
जिला-आगर: श्री मनोहरसिंह उमरावसिंह जी आर्य-गुराड़िया पीर (बापचा)
जिला-धार: श्री रामचन्द्र जी शर्मा-धारसीखेडा

शेष आगामी अंक में.....

thearyasamaj.org

शोक-सूचनाएँ

वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान् : आचार्य राजवीर शास्त्री पंचतत्व में विलीन

वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति-साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित, प्रसिद्ध वैयाकरण, उच्चकोटि के विचारक एवं सिद्ध हस्त लेखक परम् आदरणीय श्री राजवीर शास्त्री जी का दिनांक २५ सितम्बर, २०१४ को प्रातः उनका मोदीनगर, उत्तर प्रदेश में काफी समय से रूग्ण रहने के बाद निधन हो गया।

पण्डितजी का जन्म उत्तर प्रदेश गाजियाबाद मण्डल के ग्राम फजलगढ़ के एक आर्य परिवार में, पिता श्री शिवचरण दास एवं माता श्रीमती मनसा देवी के गृह में दिनांक ४ अप्रैल सन् १९३८ को हुआ था।

पं. राजवीर शास्त्री की प्रारम्भिक शिक्षा अपने जन्म स्थान के एक ग्रामीण विद्यालय में सम्पन्न हुई थी। इसके पश्चात् आपको वेदार्थ विद्या के अध्ययन हेतु सन् १९४६ में गुरुकुल बुकलाना, मेरठ (उ.प्र.) में प्रविष्ट कराया गया। वहां से कुछ समय के बाद आप वेद विद्यालय गुरुकुल, गौतमनगर, नई दिल्ली में अध्ययनार्थ आये। आपके पिता श्री भी इसी संस्था में सेवारत थे। आपकी कुशाग्र बुद्धि को देखते हुए कुछ समय के पश्चात् आपको वैदिक-धर्म-ध्वज-वाहक, प्रसिद्ध ऐतिह्यविद् पूज्यपाद आचार्य भगवानदेव जी (स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती) द्वारा संचालित गुरुकुल महाविद्यालय, झज्जर में प्रविष्ट किया गया जहाँ आपने पूरे मनोयोग से सन् १९५४ तक वेद-वेदांगों का गहन अध्ययन किया। इस काल में परीक्षा न देकर विद्वता उपार्जन हेतु आपने परम्परागत अध्ययन किया था।

इसके पश्चात् आपने समसामयिक परिस्थिति एवं आवश्यकता के अनुसार पंजाब विश्वविद्यालय में विधिवत परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए विशारद, शास्त्री तथा प्रभाकर की उपाधियाँ प्राप्त की। इस प्रकार परम्परागत अधीत शास्त्र तथा आधुनिक परीक्षा प्रणाली दोनों में परिपूर्ण होने पर आपने सन् १९५८ से १९६० तक गुरुकुल झज्जर में अध्यापन कार्य किया। आप पंजाब के शिक्षा विभाग में सन् १९६० से १९६७ तक संस्कृत अध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय से आचार्य तथा मेरठ विश्व विद्यालय से एम.ए. संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपने ग्राम बैरी, जिला झज्जर (हरि.) में शासकीय विद्यालय में अध्ययापन कार्य करते हुए आर्ष ग्रन्थों के अध्यापन हेतु अतिरिक्त समय निकालकर आचार्य बलदेव जी एवं इन्द्रदेव मेधार्थी को व्याकरण महाभाष्य आदि पढ़ाया। तदुपरान्त आप सन् १९६७ से दिल्ली प्रशासन में संस्कृत शिक्षक का कार्य करते हुए सन् १९९८ में सेवानिवृत्त हुए। आप व्याकरण शास्त्र के तलस्पर्शी विद्वान् श्री विश्वप्रिय जी के योग्यतम शिष्य रहे हैं। आपको अनेक संस्थाओं ने व्याकरण अध्यापनार्थ आमन्त्रित करके ज्ञानार्जन किया जिनमें कन्या गुरुकुल नरेला, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून मुख्य हैं। आपकी विद्वता चतुर्दिक् फैली है। आपकी निर्बाध लेखनी से अनेक ग्रन्थों का लेखन एवं सम्पादन हुआ है, जिनमें **योगदर्शन-भाष्यम्, वैदिक शब्दकोष, उपनिद् भाष्य** आदि ग्रन्थों का लेखन तथा आर्य जगत् की प्रसिद्ध पत्रिका **'दयानन्द सन्देश'** का सम्पादन हुआ है, जिसके **सृष्टि संवत्, वैदिक मनोविज्ञान, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्री कृष्ण एवं सत्यार्थ प्रकाश** आदि विशेषांक अति प्रशंसनीय है।

आपकी विद्वता एवं विशिष्ट कार्य को देखते हुए अनेक प्रसिद्ध संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है जिसमें सन् २००० में विक्रम प्रतिष्ठान संयुक्त राज्य अमेरिका, सन् २००२ में आर्य समाज सान्ताक्रूज, मुम्बई, सन् २००७ में गुरुकुल झज्जर द्वारा स्वामी ओमानन्द स्मृति पुरस्कार तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा प्रदत्त सम्मान प्रमुख है।

यद्यपि पं. राजवीर शास्त्री अब हमारे मध्य में नहीं है तथापि उन्होंने महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए निष्काम भाव से जो पुरुषार्थ व साहित्य साधना की है उससे युग-युगान्तरों तक वैदिक धर्म प्रेमी लोग प्रेरणा ग्रहण कर लाभान्वित होते रहेंगे और महर्षि दयानन्द और पण्डित राजवीर शास्त्री जी के स्वप्नों को साकार करेंगे। हम उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि प्रस्तुत करतें हैं और उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति एवं संवेदना व्यक्त करते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति और मोक्ष प्रदान करें, यह प्रार्थना है।

- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

वरिष्ट समाज सेवी श्रीयुक्त **रामस्वरूप जी राजोरिया** सुपुत्र स्व. श्री किशनलाल जी राजोरिया म.नं. १०० सेक्टर ११ उदयपुर का ९४ वर्ष की आयु में दि. ५ अप्रैल २०१४ को दुःखद निधन हो गया।

आप मृदुभाषी, हंसमुख, मिलनसार, धर्म परायण, वैदिक विद्वान् एवं जांगिड समाज में लेखनी के प्रखर पुरोधा थे, जब-जब दुष्ट प्रवृत्तियों द्वारा समाज को हिनभावना से किये गये आक्षेपों का आपने यथा समय अपनी प्रखर लेखनी द्वारा सप्रमाण प्रत्युत्तर देकर उन्हें निरूत्तर कर दिया आप सामाजिक संगठनात्मक कार्यों में अपने अमूल्य जीवन का समय समाज हित में लगाते हुए उदयपुर विश्वकर्मा जांगिड विकास संस्था के संस्थापक वरिष्ठ सदस्यों में सम्माननीय सक्रिय सदस्य थे, आप जांगिड समाज के समारोह एवं कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे एवं तन-मन-धन से सहयोग करते थे जो कि अनुकरणीय है।

आप अपने पीछे धर्मपत्नि श्रीमती कलावती देवी आमेरिया एवं तीन सुपुत्र एवं पुत्रवधु-श्री रवीन्द्र-श्रीमती रमा, श्री प्रमोद-श्रीमती संगीता, श्री सुबोध-श्रीमती संगीता एवं दो पुत्रीया श्रीमती सरला-श्री कृष्ण गोपाल, श्रीमती सरोज-श्री मधुसुदन एवं पौत्र, पौत्रीयां दोहते, दोहतीयों का भरापुरा परिवार छोड़ गये।

सादगी का परिचय देते हुए अन्त्येष्टि संस्कर गैस शवदाह गृह में किया गया, उठावणे पूर्व शान्तियज्ञ एवं दि. १६.०४.१४ को प्रातः शुद्धि यज्ञ आर्यसमाज के पुरोहित पं. अनन्तदेव बरवाड़िया द्वारा सम्पन्न किया गया इन दोनों यज्ञ में परिजन, सगे सम्बन्धी एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की। इस अवसर पर मृत्युभोज एवं पेरावणी प्रथा का निषेध किया गया एवं सादगी से सभी कार्य सम्पन्न किये गये जो अनुकरणीय है। **आपके निधन से जांगिड ब्राह्मण समाज ने एक सुयोग्य वैदिक विद्वान को सदैव के लिये खो दिया है जिसकी पूर्ति असम्भव है।**

-पं. अनन्तदेव शर्मा, उदयपुर

समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार अपनी भावांजलि व्यक्त करता है तथा शोक-संतप्त परिजनों के हेतु गहन शोक-संवेदना व्यक्त करता है -सम्पादक

thearyasamaj.org

सुश्री अंजलि आर्या के पौरोहित्य में मोरवाल मैरेज गार्डन, बड़नगर(म.प्र.) का शिलान्यास, कार्यक्रम की भव्यता की साक्षी देती चित्रावली

मोरवाल मैरेज गार्डन के स्वामी श्री मुरलीजी मोरवाल अपनी धर्मपत्नी के साथ सुश्री अंजलि आर्या का आत्मीय अभिनंदन करते हुए

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४० पर

मोरवाल परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मंचस्थ विद्वत् गण

यज्ञ के मुख्य यजमान जगमोहन जी मोरवाल तथा छोटे भ्राता मुरली जी परिवार के साथ देवयज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते हुए

मोरवाल परिवार के यजमान सदस्यों को आशीर्वचन के साथ पुष्प वर्षा करते उपस्थित वरिष्ठ जन

शिलान्यास हेतु विशेष मंत्रों की आहुतियाँ प्रदान करवाते अंजलि आर्या

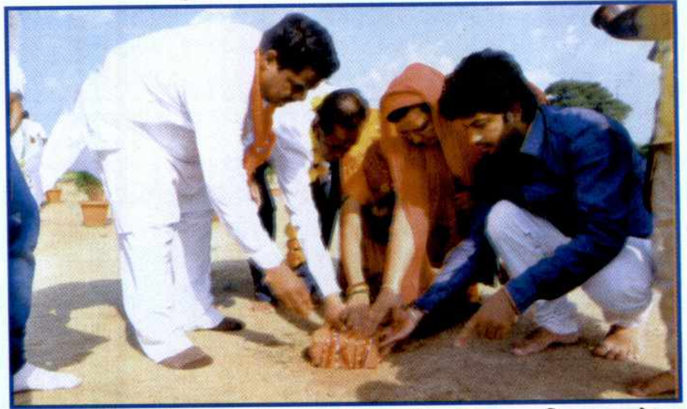
मोरवाल परिवार के सदस्य मोरवाल मैरेज गार्डन की आधारशिला रखते हुए

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया का सम्मान करते मुरली जी मोरवाल

बृहद संख्या में उपस्थित मातृशक्ति एवं आर्यजन

thearyasamaj.org

स्वामी प्रवासानंदजी द्वारा वैदिक संसार पत्रिका का सघन सदस्यता अभियान

महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास द्वारा आयोजित १३१ वें स्मृति समारोह अवसर पर यज्ञशाला में मंचस्थ संन्यासी मण्डल दायीं और सबसे प्रथम दिखाई दे रहे हैं स्वामी प्रवासानंदजी साईकिल वाले स्वामीजी, वैदिक संसार के शुभाकांक्षी जिनकी प्रेरणा तथा सहयोग से अनेक सदस्यों को वैदिक संसार का लाभ प्राप्त हो रहा है।

वेद योग महाविद्यालय गुरूकुल केहलारी (खण्डवा) की गतिविधियों की संक्षिप्त प्रस्तुति चित्रों द्वारा

विरजानंद छात्रावास के उदघाटनकर्ता मुख्य अतिथि श्री जी.एस.गेहरवार तात्कालीन तहसीलदार खण्डवा

शास्त्र द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार युवा पीढ़ी द्वारा

विस्तृत विवरण पृष्ठ २६ पर

गुरूकुल स्थापना के प्रारंभिक समय में यज्ञायोजन, वृक्षों से विहिन बंजर भूमि

शनैः शनैः पल्लवित होते वृक्ष तथा विस्तारित होता गुरूकुल और बढ़ता गुरूकुल परिवार

बंजर भूमि भी परिश्रम के पसीने की बूंदों से लहलहा उठी बागवानी करते आचार्य जी एवं ब्रह्मचारी

गुरूकुल स्थित गोशाला के माध्यम से गो रक्षा

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के सत प्रयासों से उज्जैन जिले के अनेकों ग्रामों में आर्य वीर दल शिविरों के माध्यम से प्रांतीय प्रशिक्षकों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है ग्राम सुवासा में आयोजित शिविर की चित्रावली

शस्त्र द्वारा धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्ररक्षा हेतु संकल्पित युवा पीढ़ी

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४० पर

thearyasamaj.org

स्मृति शेष

श्रीमती लक्ष्मीबाई शर्मा धर्मपत्नी श्री धनसुखलालजी शर्मा (भदरेचा) निवासी चन्द्रावतिगंज, जिला–इन्दौर (म.प्र.) का देहावसान 73 वर्ष की आयु में दिनांक 01–10–2014 को हो गया।

आप मृदुभावी, मिलनसार, आध्यात्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। आपके पिताजी स्व. तुलसीराम जी अठवास्या नौगांव जिला धार (म.प्र.) के निवासी थे।

श्रीमती लक्ष्मीबाई शर्मा

आप अपने पीछे पति श्री धनसुखलालजी तथा तीन सुपुत्र सर्वश्री ख्यालीराम जी, सुनील जी तथा बालकृष्ण जी शर्मा तथा दो सुपुत्री श्रीमती रुकमणि धर्मपत्नि श्री दिनेश कुमार (अशोक) शर्मा, निवासी रतलाम, श्रीमती हेमलता धर्मपत्नि स्व. श्री प्रकाशचन्द्र जी शर्मा, निवासी– दुधिया का भरा–पुरा परिवार छोड़ गई है।

आपके देहावसान पर आयोजित पगड़ी रस्म पर परिवारजनों द्वारा विश्वकर्मा मंदिर पटेल नगर इन्दौर को इक्कीस हजार एक सौ रुपये, पॉच हजार एक सौ रूपये वैदिक संसार के प्रकाशन के पुण्य कार्य में दान निमित्त अर्पण किये।

श्रीमती नर्मदाबाई शर्मा

स्मृति शेष

श्रीमती नर्मदाबाई शर्मा, धर्मपत्नी श्री माना जी शर्मा (तिलगारा, जिला–धार, म.प्र.वाले) निवासी–धरमपुरी, जिला–इन्दौर (म.प्र.) का निधन दिनांक 13–10–2014 को लगभग शतायु अवस्था में हो गया है।

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री मोहनलाल जी शर्मा ऋषि दयानन्द सरस्वती भक्त वैदिक सिद्धातों के निष्ठावान समर्पित सिपाही है। आपने अपने निजी निवास पर वेद विद्या मंदिर की स्थापना कर वैदिक सिद्धातों का क्षेत्र में प्रचार–प्रसार कर वैदिक साहित्य स्वाध्याय हेतु आम जन को सुलभ करवा रहे हैं। प्रतिदिन अग्निहोत्र के साथ–साथ प्रति रविवार प्रातःकाल साप्ताहिक सत्संग का आयोजन करते हैं। स्वयं गहन स्वाध्याय कर वेद शास्त्रोक्त सत्य धर्म का प्रचार–प्रसार कर अंधविश्वास, पाखण्ड और आम जन में प्रचलित कुरितीयों – रुढ़ियों के विरुद्ध जन –जागरण का क्रांतिकारी कार्य कर रहे हैं।

आपने अपनी माताजी के निधन पर पंच भौतिक तत्व शरीर का अंत्येष्टि कर्म पूर्ण वैदिक विधान अनुसार आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् पं. सूर्यदेव जी शर्मा, इन्दौर के मार्ग दर्शन में किया तथा अस्थि संचय ऋषि प्रणित संस्कार विधि अनुसार कर शमशान भूमि के निकट भूमि में अस्थियों को पृथिवी देवता को समर्पित कर दिया तथा उस पर पीपल के पौधे का रोपण कर दिया।

दिनांक 19 को आर्य समाज रावतभाटा के विशेष सक्रीय, जुझारू सदस्य श्री ओमप्रकाशी आर्य एवं श्री मोहनलाल जी आर्य ने आपके निवास पर उपस्थितों को वैदिक धर्म सिद्धांतों का उपदेश किया तथा दूसरे दिन प्रातः देवयज्ञ कर दिवंगत आत्मा को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

परिवारजनों की माताजी के प्रति भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए माताजी के निधन दिवस से 15 दिवस पश्चात् दि. 28 से 29–10–2014 तक दो दिवसीय बृहद वैदिक सत्संग का आयोजन आर्य जगत् के विद्वान् ,युवा सन्यासी, दर्शनाचार्य स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती भवानीपुर (कच्छ), पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बेरसिया(भोपाल), श्रीमती सरीता आर्या , बड़नगर (उज्जैन), श्री बंशीलाल जी विश्वकर्मा, बरखेड़ा पंथ(मंदसौर) के मुखार बिन्द से ईश्वर की वाणी वेद का प्रचार कर किया। इस अवसर पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा इन्दौर, उज्जैन संभाग प्रभारी श्री गोविंदराम जी आर्य , प्रतिनिधि–सांसद इन्दौर लोक सभा क्षेत्र (वर्तमान लोकसभा स्पीकर), श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य विक्रम नगर (उज्जैन) तथा आर्य जगत् के पदाधिकारियों, विद्वानों ने उपस्थित होकर श्री मोहनलाल जी द्वारा आयोजित आयोजन का समर्थन कर उत्साह वर्धन किया

दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

thearyasamaj.org

वैदिक धर्म की प्रखर प्रवचनकर्ता, वेद कथाकार, भजनोपदेशिका, ओजस्वी वक्ता सुश्री अंजलि आर्या, करनाल (हरियाणा) के मुखारबिन्द से आंग्ल वर्ष २०१४ की बिदाई एवं नूतन वर्षाभिनन्दन की बेला में मध्यप्रदेश में स्थान-स्थान पर गूंजेगी पवित्र वेदवाणी

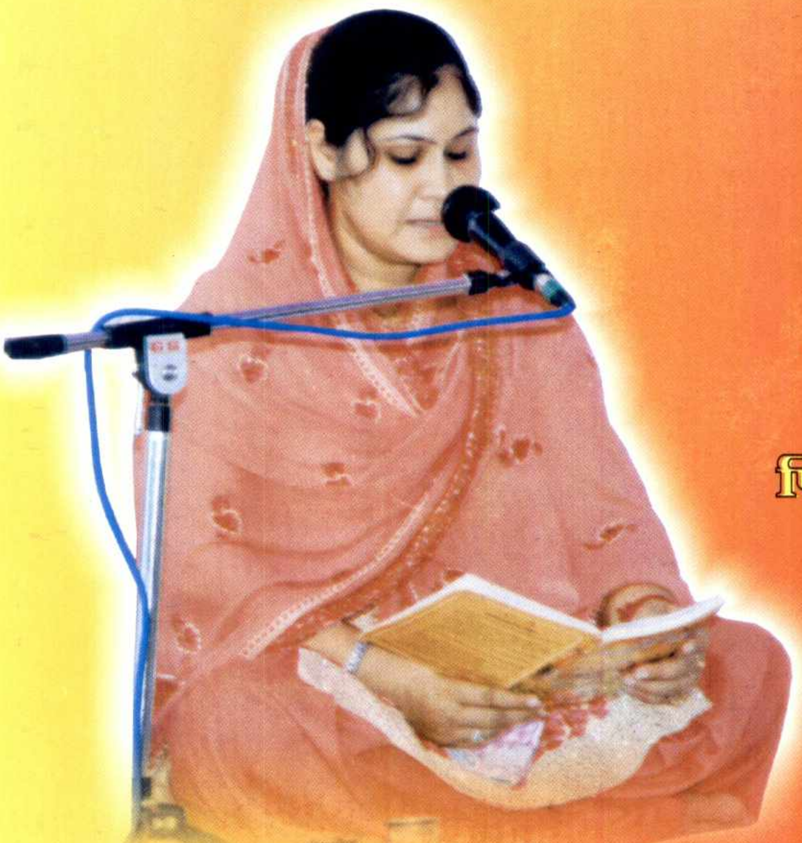

नागदा [उज्जैन]
दि. १८ से २० नवम्बर २०१४

इन्दौर [छावनी]
दि. २६ से २८ नवम्बर २०१४

कुरवई [विदिशा]
दि. ४ से ६ दिसम्बर २०१४

खरसौद कलां [उज्जैन]
दि. १६ से २० दिसम्बर २०१४

पिपलिया मण्डी [मंदसौर]
दि. २६ दिसम्बर से ४ जनवरी २०१५

जावरा [रतलाम]
दि. १५ से १६ जनवरी २०१५

दिलावरा [धार]
दि. २० से २२ जनवरी २०१५

बड़नगर [उज्जैन]
दि. २६ से ३० जनवरी २०१५ तक

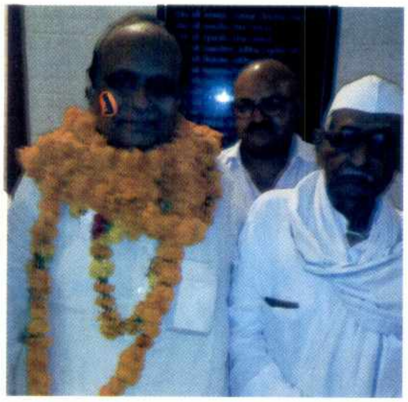

जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा उत्तरप्रदेश के नवनिर्वाचित प्रदेशअध्यक्ष श्री राधेश्याम जी शर्मा, शामली की अनुज पुत्री सौ. स्वाति का विवाह सम्पन्न

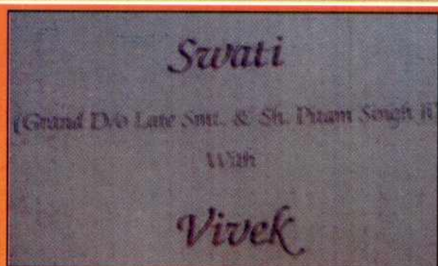

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३६ पर

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१८